आह क्यू

चीन के प्रेमचन्द लुहसूँ की अमर कृति

'दि ट्रू स्टोरी आफ आह क्यू' (The True Story of Ah Q)

का हिन्दी रूपान्तर

अनुवादक

नूर नबी अब्बासी
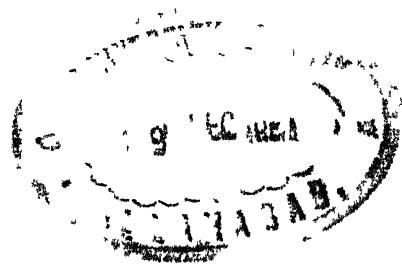
प्रकाशक

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

नई सड़क, दिल्ली

प्रथम आवृत्ति

मूल्य दो रुपये

मुद्रक
युगान्तर प्रेस,
डफ़रिन पुल, दिल्ली

लेखक का परिचय

लुहसूँ जिनका असली नाम चाऊ शू-जें था आधुनिक चीनी-साहित्य के पिता माने जाते हैं। चीनी सांस्कृतिक क्रांति के वह अग्रगण्य एवं महान् नेता थे। चीनी साहित्य में उनका वही स्थान है जो हमारे यहाँ प्रेमचन्द का है। वह प्रेमचन्द के समकालीन थे और दिलचस्प बात तो यह है कि दोनों ने अवस्था भी बराबर ही पाई, यहाँ तक कि दोनों का मृत्यु-सन् भी एक ही है। सन् १९३६ ई० में संसार की तीन महान् विभूतियाँ—कहानी लेखक और नवीन कहानी के प्रणेता—उठ गईं; एक गोर्की, दूसरे लुहसूँ और तीसरे प्रेमचन्द। प्रेमचन्द का नाम यहाँ हम इसलिए ले रहे हैं कि लुहसूँ को समझने के लिए यदि प्रेमचन्द को समझ लिया जाय तो काफी है। केवल एक मूल अंतर के साथ जो इन दो लेखकों के व्यक्तित्वों में नहीं बल्कि ३०–३६ ई० के चीन और हिन्दुस्तान में है और इन दोनों देशों के राजनीतिक एवं सामाजिक आन्दोलनों में है।

लुहसूँ का जन्म २५ सितम्बर, १८८१ ई० में चेकियाँग प्रान्त के शाओहसिंग नगर में हुआ था। उनके पिता एक बुद्धिजीवी थे। उनके दादा को चीन की सरकार ने जब अकारण ही गिरफ्तार कर लिया तो लुहसूँ के पिता को बहुत बड़ा धक्का लगा और वह उसी ग़म में घुलकर तीन वर्ष बाद स्वर्गवासी हो गये। पिता की मृत्यु के समय लुहसूँ की आयु सोलह वर्ष की थी। इस अल्पायु में ही परिवार पर जो यह विपत्ति आई, उसे उनकी माता ने बड़े

साहस के साथ झेला और अपने बेटे को नानकिंग के एक स्कूल में शिक्षा के लिए भेजा। वहाँ से निकलने पर उन्होंने बी० ए० किया और उन्हें सरकारी छात्रवृत्ति भी मिली। डॉक्टरी की उच्च-शिक्षा प्राप्त करने वह जापान गये, जहाँ उन्होंने सर्जरी में शोध-कार्य किया और सनद प्राप्त की। वहाँ से लौटने पर उनका विचार डाक्टरी करने का था, किन्तु एक घटना ने उनकी आँखें खोल दीं, उन्होंने अनुभव किया कि चीनी जनता को चीर-फाड़ और मरहम-पट्टी करने वाले डाक्टरों की नहीं किसी और चीज़ की आवश्यकता है और तभी से उनके विचारों में मूल परिवर्तन आया। उन्होंने नश्तर त्याग दिया और क़लम हाथ में ले ली।

साहित्य-क्षेत्र में पदार्पण करने के बाद उन्होंने पहला काम किया अनुवाद। यूरोप के उत्पीड़ित और शोषित देशों की संक्षिप्त कहानियों का उन्होंने अनुवाद किया और पूर्ण रूप से अध्ययन-मनन करने लगे। सन् १९१२ में जब चीन में मांचू परिवार की सरकार का तख्ता उलटा गया और पार्लमेण्ट स्थापित हुई तो उन्हें शिक्षा-सचिवालय में नियुक्त कर लिया गया। उसके कुछ समय बाद वह तीन विश्व-विद्यालयों में चीनी साहित्य के अध्यापक रहे। सन् १९१८ ई० से उन्होंने अपना सारा समय साहित्य-साधना में बिताना शुरू किया और ऐसी लघु कहानियों की रचना की, जिन्होंने चीन में नये साहित्यिक आन्दोलन की दाग़बेल डाली।

सन् १९२८ ई० में उन्होंने छब्बीस कहानियाँ लिखीं, जो बहुत लोकप्रिय हुईं। इसी ज़माने में यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों ने हड़ताल की और लुहसूं ने उनका समर्थन किया, जिसके फलस्वरूप उन्हें नौकरी से बरख़ास्त कर दिया गया। उसके बाद पीकिंग से अधिकतर अध्यापक जो क्रांतिकारी विचारधारा के थे, चले आये। लुहसूँ वहाँ से आकर अमॉय विश्वविद्यालय में अध्यापक

बन गये। फिर केण्टन में आकर सन् यात सेन विश्वविद्यालय के डीन नियुक्त हुए।

क्रांतिकारी साहित्य के मार्ग से झाड़-झंकाड़ निकाल कर उसे समतल बनाने में लुहसूॅ के हाथ सबसे ज्यादा जख्मी हुए हैं, उन्होंने सन् १६२७ से '३० तक वहाँ के प्रतिक्रियावादी साहित्यिकों के विभिन्न गिरोहों से सैद्धान्तिक युद्ध किया था। पहले तो वह सृजनात्मक साहित्य के समर्थकों से उलझे, पर बाद में स्वयं सर्वहारा और क्रांतिकारी साहित्य के हामी बन गये और फिर हामी भी ऐसे बने कि उनकी आलोचनाएँ और कहानियाँ क्रांतिकारी साहित्य की अलमबरदार बन गईं। सन् '३० में वह वामपक्षी साहित्यकारों के संघ के सदस्य बन गये और उन प्रगतिशील पत्रिकाओं में लिखते रहे, जिन्हें कोमिन्तांग सरकार बार-बार बन्द करती रही।

चीन में उनके आलोचनात्मक लेखों का बड़ा महत्त्व है। वह चीन की प्राचीन व आधुनिक परम्परा के बड़े पण्डित थे। उनका यह पाण्डित्य उनकी कहानियों में जा-ब-जा झलकता है। लुहसूँ का व्यंग्य बड़ा पैना है और उनकी टेकनीक अनुपम व अतिशय आधुनिक रूप लिये हुए है। उनके तीन कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए थे—"शस्त्रों का आवाहन", "भ्रमण", "प्राचीन कथाओं का अर्वाचीन रूप"। और सोलह संग्रह निबंधों के अब तक प्रकाशित हो चुके हैं—"गर्म हवा", "समाधि" इनमें प्रमुख हैं। उनकी अनूदित की हुई रचनाओं में फादेयेव लिखित "उन्नीस"; गोगोल लिखित "मृतात्माएँ" और पान्तेलीव लिखित "पहरा" सर्वविख्यात हैं। उन्होंने चीनी उपन्यास-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास भी लिखा था।

प्रस्तुत लघु उपन्यास "आह क्यू" उनकी सर्वश्रेष्ठ कृति है, जो एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो एक व्यक्ति होते हुए भी उस समय के चीन का, वहाँ प्रचलित उन सामाजिक स्थितियों का, उनकी न्यूनताओं और कमजोरियों का सबल प्रतीक है। एक विचारक व दार्शनिक होने के नाते लुहसूँ ने अपने इस पात्र आह क्यू द्वारा वहाँ के सामाजिक जीवन का बड़ा सजीव व पैना विश्लेषण किया है, जो हर दृष्टि से अद्वितीय और अत्यन्त हृदय-ग्राही है।

लुहसूँ की यह कृति प्राचीन चीन की मेहनतकश जनता का पैना चित्रण है और आधुनिक युग में चीनी राष्ट्र के उत्पीड़न के इतिहास का सार है। इसमें आह क्यू, गलमुच्छे वांग, अमाह वू और अन्य लोगों की क्रूर दासता के प्रति गहरी सहानुभूति दर्शायी गई है। यह उपन्यास उत्पीड़ितों द्वारा आत्म-तुच्छता और नैतिक विजय प्राप्त करने की आत्म-उपहास पूर्ण पद्धति पर दुःख प्रकट करता है और वृद्ध मि० चाओ, सफल जिला-उम्मीदवार, नकली विदेशी शैतान तथा दूसरों पर जिन्होंने चीनी जनता को दबाया था, घोर प्रहार करता है। यह उच्च देशभक्ति एवं क्रांतिकारी यथार्थवाद की कृति है।

शरीफ मंज़िल,
बल्ली मारान,
दिल्ली.

— नूर नबी अब्बासी

: १ :

प्रस्तावना

कई वर्षों से मैं आह क्यू की सच्ची कहानी लिखने का विचार कर रहा था। पर जब कभी उसे शुरू करना चाहता दुविधा में पड़ जाता और यह सोचता कि मैं उन व्यक्तियों में से नहीं हूँ जिन्हें लेखनी द्वारा यश प्राप्त होता है क्योंकि एक अमर इन्सान के कारनामे सँजोने के लिये एक अमर कलम आवश्यक है। लेखनी ही वह साधन है जिसके द्वारा मानव भावी पीढ़ियों से परिचित होता है और लेखनी से उस मानव द्वारा भावी पीढ़ियाँ परिचित होती हैं। और यह सब इस प्रकार होता है कि इन दोनों की ख्याति किस पर अधिक निर्भर है यह ज्ञात करना भी असंभव हो जाता है। परन्तु इन तमाम विचारों के होते हुए भी अन्त में मैं सदैव इसी निष्कर्ष पर पहुँचता था कि मुझे आह क्यू की कहानी अवश्य लिखना चाहिये। और इस निष्कर्ष पर पहुँचते समय मुझे ऐसा अनुभव होता था मानो कोई दैवी शक्ति मुझे इस कार्य के लिये प्रोत्साहित कर रही हो।

पर फिर भी जब मैंने इस शीघ्र ही विस्मरणीय कहानी को लिखने का निश्चय किया तो ज्योंही मैंने अपना कलम उठाया मुझे उन दुर्लभ कठिनाइयों का भान हुआ जिनका मैं सामना करने

जा रहा था। सबसे पहला प्रश्न तो यह था कि इस कृति को क्या संज्ञा दी जाय। कन्फ्यूशस ने कहा था, "यदि नाम सही न हुआ तो शब्द सच्चे प्रतीत न होंगे।" और इस स्वयं-सिद्ध सूत्र का नितांत सतर्कता से अनुकरण किया जाना चाहिये। जीवनियाँ कई प्रकार की होती हैं—सरकारी जीवनियाँ, आत्म-कथाएँ, अधिकृत जीवनियाँ, दंतकथाएँ, पूरक जीवनियाँ, पारिवारिक इतिहास, स्केच.. .. परन्तु दुर्भाग्यवश इनमें से कोई भी मेरे उद्देश्य के लिये पूरी न उतरती थी। "सरकारी जीवनी" ? मैं नहीं समझता कि इस वर्णन की गणना किसी अधिकृत इतिहास में कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ होगी। "आत्म-कथा" ? पर जाहिर है मैं आह क्यू तो नहीं हूँ। और यदि मैं इसे "अनाधिकृत जीवनी" का नाम दूँ, तो फिर सवाल उठता उसकी "अधिकृत जीवनी" कहाँ है ? "दंतकथा" का प्रयोग भी असंभव है क्योंकि आह क्यू कोई पौराणिक व्यक्ति तो था नहीं। "पूरक जीवनी" ? लेकिन किसी भी राष्ट्रपति ने अभी तक किसी भी राष्ट्रीय ऐतिहासिक संस्था को यह आज्ञा नहीं दी है कि वह आह क्यू की "प्रमाणिक जीवनी" लिखे। यह सच है कि यद्यपि इंगलैण्ड के अधिकृत इतिहास में "जुआरियों की जीवनियाँ" पूर्ण नहीं हैं फिर भी सुप्रसिद्ध लेखक कोनन डॉयल ने "रॉडनी स्टोन" लिखा, परंतु इस सबकी आज्ञा भी प्रख्यात लेखकों को ही है मुझ जैसे को नहीं। फिर नंबर आता है "पारिवारिक इतिहास" का; लेकिन मैं नहीं जानता मेरा सम्बन्ध उसी परिवार से है जिससे आह क्यू का था या नहीं। और न ही मुझे

उसके पुत्रों या पोतों ने यह काम कभी सौंपा। यदि मैं इसे "स्केच" कहता तो यह आपत्ति उठाई जाती कि आह क्यू का तो कोई "पूर्ण इतिहास" नहीं है। संक्षेप में कहना चाहिये कि यह एक वास्तविक "जीवनी" है लेकिन चूँकि मैं बड़ी भद्दी शैली में लिखता हूँ और कुलियों और मवालियों की भाषा का प्रयोग करता हूँ इसलिये मुझ में साहस नहीं कि मैं इसे यह बड़ा नाम दूँ। अतः कम प्रतिष्ठित उपन्यासकारों के मुहावरों के अनुसार: "इस असंगत बात के बाद असली बात पर आयें", अपने शीर्षक के मैं अन्तिम दो शब्द लूँगा और यदि यह भी "लोगों की सुन्दर लिखावट की सच्ची कहानी" का स्मरण कराये तो फिर मैं विवश हूँ।

दूसरे, ज़ब यह निश्चित हो गया कि यह किस प्रकार की जीवनी होगी तो सोचा कि इसके प्रारम्भिक वाक्य कुछ इस प्रकार होने चाहियें: "अमुक-अमुक जिसका दूसरा नाम अमुक-अमुक था अमुक-अमुक स्थान का निवासी था।" लेकिन मैं निश्चित रूप से नहीं जानता आह क्यू का उपनाम क्या था। किसी समय शायद उसका उपनाम चाओ था पर अगले दिन फिर इस बात पर कुछ गड़बड़ हुई। यह उस समय हुआ जब मिस्टर चाओ का पुत्र ज़िले के सरकारी पद की परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया और खूब ज़ोर-ज़ोर से घन्टे बजा-बजा कर उनकी सफलता की घोषणा की जा रही थी। आह क्यू ने अभी-अभी पीली मदिरा के दो प्याले चढ़ाये थे और उसने कुछ अकड़ के साथ कहा कि इस श्रेय का भागी वह भी है क्योंकि वह भी उसी वंश से सम्बन्ध रखता है जिससे मिस्टर

चाओ सम्बन्धित है, और विशुद्ध गणनानुसार वह सफल उम्मीद-वार से ३ पीढ़ियाँ ऊंचा है। उस समय तो अनेक श्रोता उससे कुछ भयभीत हो अलग भी खड़े होने लगे। परन्तु अगले दिन अमीन आह क्यू को मिस्टर चाओ के घर लेगया। जब वह वहां पहुँचा और उस वयोवृद्ध व्यक्ति की उस पर दृष्टि पड़ी तो उसका चेहरा सुर्ख होगया और क्रोध में गरज कर उसने कहा :

"आह क्यू दुष्ट, क्या तूने यह कहा है कि मैं भी तेरे वंश का ही हूँ ?"

आह क्यू से कोई जवाब न बन पड़ा।

और जितनी ज्यादा देर मि० चाओ उसकी ओर देखते रहे उतना ही क्रोध उन्हें आता गया और उसे धमकाने की गरज से दो कदम आगे बढ़ते हुए उन्होंने कहा, "तुझे इस प्रकार की बकवास करने का दुःसाहस कैसे हुआ ? तुझ जैसा मेरा नाती कैसे हो सकता है ? क्या तेरा उपनाम भी चाओ है ?"

आह क्यू ने उत्तर नहीं दिया, क्योंकि वह भागना चाहता था लेकिन मिस्टर चाओ आगे बढ़े और उसके मुँह पर उन्होंने एक तमाँचा रसीद किया।

"तेरा नाम चाओ कैसे हो सकता है ?—क्या तू समझता है कि तू चाओ नाम का पात्र है !"

आह क्यू ने चाओ नाम के अपने अधिकार की रक्षा करने की कोई चेष्टा नहीं की बल्कि अपना बाँया गाल मलते हुए वह अमीन के साथ बाहर चला गया; और बाहर आकर जब अमीन

ने उस पर गालियों की बौछार की तो उसने २०० य्वां नकद देकर अमीन का आभार प्रदर्शन किया। जिसे भी इसका पता चला उसने कहा आह क्यू बहुत बड़ा मूर्ख है जो इस प्रकार पिट गया, शायद उसका नाम चाओ नहीं है। परन्तु यदि होता भी तो बजाय इसके कि वह उसकी शान बघारता फिरता उसे चाहिये था उसके बारे में मालूम करे क्योंकि मि० चाओ यहाँ पहले से ही रहते हैं और ऐसे में भ्रांति होने की पूरी सम्भावना है। उसके बाद आह क्यू के पूर्वजों का कहीं उल्लेख नहीं हुआ यही कारण है कि मैं अब तक उसके सही उपनाम के बारे में अनभिज्ञ हूँ।

तीसरे, मैं यह भी नहीं जानता कि आह क्यू का अपना नाम किस प्रकार लिखा जाय। उसकी जिंदगी में तो सारी उम्र लोग उसे आह कुई कहते रहे, लेकिन उसकी मृत्यु के बाद किसी ने भी तो फिर आह कुई का नाम न लिया क्योंकि उसकी उन लोगों में गणना कैसे होती जिनका नाम "बांस की तालियों में रेशम में" सुरक्षित रखा जाता है। और यदि उसके नाम को सुरक्षित रखने का ही प्रश्न है तो यह लेख इस दिशा में पहला प्रयास समझा जाना चाहिये। इसीलिये मुझे प्रारंभ में ही इस कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। मैंने इस प्रश्न पर गंभीरता से सोच-विचार किया है। आह कुई—क्या यह वही "कुई" है जिसका अर्थ है कैसिया या कुई अर्थात् सज्जनता ? यदि उसका दूसरा नाम शरदचन्द्र होता और यदि वह अपना जन्म-दिवस शरद पूर्णिमा को मनाया करता तब तो अवश्य ही इस कुई का अर्थ

कैसिया* (दालचीनी) होता। लेकिन चूंकि उसका कोई अन्य नाम नहीं था और यदि था तो उसका किसी को ज्ञान नहीं था और चूंकि उसने अपने जन्म-दिवसों पर बधाई-छंद प्राप्त करने के लिये किसी को निमंत्रण नहीं भेजे, इसलिये आह् कुई (कैसिया) लिखना बहुत स्वेच्छापूर्ण निर्णय होगा। और फिर उसका बड़ा या छोटा भाई भी तो था जिसका नाम था आह् फू (समृद्धि); लेकिन फिर वही बात, वह तो अकेला ही था, इसलिये आह् कुई (सज्जनता) लिखने का भी अर्थ होगा कि अनावश्यक अनुमान लगा लिये गये हैं। कुई ही की ध्वनि वाले अन्य सभी विचित्र शब्द और भी अनुचित हैं। मैंने एक बार यही प्रश्न मि० चाओ के पुत्र जो कि सफल उम्मीदवार था, से पूछा परन्तु उस जैसा विद्वान् व्यक्ति भी उससे उलझन में पड़ गया। उसके कथनानुसार, क्योंकि चेन तू-शू ने "नव यौवन" नामक पत्रिका निकाली थी जिसमें पाश्चात्य वर्णमाला का समर्थन किया गया था और राष्ट्रीय संस्कृति नष्ट-भ्रष्ट हो रही थी इसलिये इसकी खोज करना कठिन था। अंततोगत्वा मैंने अपने जिले के एक व्यक्ति से कहा कि वह जाकर आह् क्यू के अपराधों से सम्बन्धित कुछ कानूनी दस्तावेज़ें देखे लेकिन ८ महीने बाद उसने मुझे एक पत्र इस आशय का भेजा कि उन दस्तावेज़ों में आह् कुई नामक किसी व्यक्ति का भी

* कैसिया शरद पूर्णिमा के त्यौहार के मास में खिलता है और चीनी लोक-रीति के अनुसार यह कल्पना की जाती है कि चंद्रमा पर जो प्रतिबिंब पड़ता है वह कैसिया वृक्ष का है।

नाम दर्ज नहीं है। यद्यपि मैं निश्चय नहीं कर पाया कि उसने जो लिखा है वह सत्य है या उसने योंही टाल-मटोल कर दी है तथापि इस प्रकार उसका नाम खोजने में असफल रहने के बाद मेरे पास उसे ढूंढने का और कोई साधन शेष न था। क्योंकि मुझे भय है कि स्वर-शास्त्र की नई पद्धति अभी तक जन-साधारण में प्रचलित नहीं हुई है, उसके पास पाश्चात्य अक्षरों के अतिरिक्त और कुछ प्रयोग करने के लिए है ही नहीं। नाम भी अंग्रेज़ी हिज्जे के अनुसार ही लिखना पड़ेगा और उसे आह क्यू कह कर संक्षिप्त करना होगा। इसका मतलब यह हुआ कि "नव यौवन" पत्रिका का अंधानुकरण किया जाय परन्तु मैं बहुत लज्जित हूँ कि ऐसा कर रहा हूँ परन्तु क्या करूँ मि० चाओ के पुत्र जैसा विद्वान् व्यक्ति भी मेरी समस्या हल नहीं कर सका अतः मैं विवश हूँ।

चौथे, आह क्यू के जन्म स्थान का भी प्रश्न मेरे सम्मुख है। यदि उसका नाम चाओ भी समझ लिया जाय तब हमारे प्राचीन रिवाजानुसार जोकि अब भी प्रचलित है लोगों का उनके ज़िलों के आधार पर विभाजन किया जाय तो फिर हमें "विभिन्न उपनाम" पुस्तक की टीका पढ़नी पड़ेगी और कांसू प्रांत में "ताइन शुई के निवासी" को खोजना पड़ेगा जिसका अर्थ यह होगा कि उसका जन्मस्थान अनिश्चित-सा रहेगा। हालाँकि वह अधिकतर वीच्वॉग में ही रहा, फिर भी वह अन्य स्थानों पर भी जाता रहा इसलिये उसे वीच्वॉग का बाशिंदा कहना भी ग़लत होगा। और वस्तुतः यह ऐतिहासिक नियमों का उल्लंघन सिद्ध होगा।

अब मेरे लिये सांत्वना का एक ही मार्ग है और वह यह कि मैं "आह्" शब्द को सर्वथा शुद्ध समझ लूँ। यह अशुद्ध समानता का परिणाम नहीं और किसी भी विद्वान् की आलोचना की कसौटी पर खरा उतरने की भी इसमें पूर्ण क्षमता है। रही दूसरी समस्याएँ तो वे मुझ जैसे अज्ञान व्यक्ति की सामर्थ्य के परे हैं और मुझे केवल यही आशा है कि इतिहासवेत्ता और पुरातत्ववेता हू शीह् के अनुगामियों की भाँति भविष्य में उन पर और प्रकाश डालेंगे, फिर भी मुझे शंका है कि उस समय तक मेरी आह् क्यू की सच्ची कहानी विस्मृति के गार में पहुँच चुकी होगी।

यही इस पुस्तक की प्रस्तावना है।

: २ :

आह क्यू की विजयों का संक्षिप्त वर्णन

आह क्यू के उपनाम, व्यक्तिगत नाम और जन्म-स्थान के सम्बन्ध में जो अनिश्चितता है, उसके अतिरिक्त उसकी "पृष्ठभूमि" भी संदिग्ध है। क्योंकि वीच्वॉग के लोग न केवल उसकी सेवाओं से लाभ उठाते थे अपितु एक विदूषक की भाँति उसके साथ व्यवहार करते थे। उन्होंने कभी भूलकर भी उसकी "पृष्ठभूमि" पर ध्यान नहीं दिया। आह क्यू स्वयं इस विषय में चुप था। केवल उस समय जब वह किसी से झगड़ रहा होता था वह उसे घूरकर देखता और कहता, "हम तुझसे कहीं अच्छे खाते-पीते थे! तू समझता क्या है अपने आपको?"

आह क्यू का कोई कुटुम्ब नहीं था बल्कि वी च्वांग में एक प्राचीन मंदिर में रहता था। उसके पास कोई स्थायी नौकरी भी नहीं थी, बस औरों के लिये इधर-उधर के काम किया करता था। यदि कहीं गेहूँ कटवाने हों तो वह गेहूँ कटवा देगा और अगर चावल पिसवाने हैं तो वह भी पीस देगा। यदि कहीं किसी नाव को लग्गी से चलाना हो तो वह उसे भी चला देगा। यदि काम बहुत दिनों का हो तो वह अपने अस्थायी स्वामी के यहां ही रहता

और जैसे ही काम पूरा होता वह वहां से चल पड़ता। इस प्रकार जब कभी लोगों को कुछ काम होता, वे आह् क्यू को याद करते थे। लेकिन वे उसकी सेवायें याद करते थे न कि उसकी "पृष्ठ-भूमि"। और ज्यों ही काम ख़त्म हुआ उसकी "पृष्ठभूमि" की तो बात ही छोड़िये, लोग उसका नाम तक भूल जाते थे। एक बार किसी बूढ़े आदमी ने इस प्रकार उसकी प्रशंसा की—"अहा, आह् क्यू कितना अच्छा काम करने वाला है!" उस समय आह् क्यू अधनंगा, क्षीण एवं दुर्बल शरीर लिये उसके सामने खड़ा था और दूसरे लोग समझ नहीं पाये कि आया वह बूढ़ा गंभीरता से कुछ कह रहा है या उसका मजाक उड़ा रहा है। लेकिन आह् क्यू तो गद्गद् हो उठा।

आह् क्यू फिर अपने आपको बहुत बड़ा समझने लगा। वह वीच्वांग के सभी निवासियों को हेय समझने लगा, यहां तक कि दो तरुण "विद्यार्थियों" का भी वह तिरस्कार करने लगा, यद्यपि उन विद्यार्थियों में अधिकतर विद्यार्थी सरकारी पद की परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने वाले थे। मि० चाओ और मि० चेन का ग्रामीण लोग बहुत सम्मान करते थे, न केवल इसलिये कि वे सम्पत्तिवान् थे बल्कि वे उन दोनों तरुण विद्यार्थियों के पिता भी थे। केवल आह् क्यू ही ऐसा व्यक्ति था जिसने उनके प्रति कभी असाधारण श्रद्धा प्रदर्शित नहीं की क्योंकि उसका विचार था कि, "मेरे पुत्र इनसे भी महान् होंगे।"

साथ ही जब आह् क्यू कई बार उस शहर में गया तो उसकी

अहमन्यता और भी बढ़ गई और नगरवासियों के प्रति उसकी घृणा और भी तीव्रतर हो गई। उदाहरणतया लकड़ी की ३ फीट ३ इंच लम्बी बेंच को वीच्वांग के देहाती "लम्बी बेंच" कहते थे और वह भी उसे "लम्बी बेंच" ही कहता था। परन्तु नगरवासी उसे "सीधी बेंच" कहते थे और वह समझता था कि "यह ग़लत है, है न, हास्यजनक !" फिर जब वीच्वांग के देहाती कोई बड़े सिर वाली मछली तेल में भूनते थे तो उस पर प्याज के पत्त आधा-आधा इंच लम्बे काटकर छिड़क देते थे, जबकि नगरवासी उसमें सुन्दरता से कटे हुए प्याज के महीन टुकड़े मिलाते थे और उसने फिर सोचा—"यह भी ग़लत है। कितना हास्यजनक है !" लेकिन वीच्वांग देहात के लोग तो वास्तव में अज्ञान और गंवार हैं, जिन्होंने शहर की भुनी हुई मछली कहीं देखी ही नहीं है।

आह क्यू जो "कभी कहीं अच्छा खाता-पीता व्यक्ति था", जो सांसारिक व्यापारों से भली-भांति परिचित था और "अच्छा कार्यकर्ता" था, वास्तव में एक पूर्ण व्यक्ति बन चुका होता यदि उसकी कुछ दुर्भाग्यपूर्ण शारीरिक न्यूनताएँ बाधा न देतीं। इन सब में अधिक कष्टकर दाग़ उसके सिर पर थे, जहां पर अतीत में किसी अनिश्चित तिथि को दाद के कुछ चमकदार दाग़ उभर आये थे। यद्यपि वे उसी के सिर पर थे तथापि आह क्यू उन्हें कभी सम्माननीय नहीं समझता था। क्योंकि वह "दाद" या इसी प्रकार की ध्वनि वाले शब्दों के प्रयोग से भी परहेज़ करता था। बाद में तो वह उससे भी आगे बढ़ गया और "दाल" और

"दान" जैसे शब्द भी निषिद्ध हो गये, यहां तक कि कुछ दिनों बाद "दाम" और "दास" शब्दों पर भी निषेध लग गया और जब कभी इन निषिद्ध शब्दों का प्रयोग होता, चाहे वह जान-बूझकर किया गया हो या अनजाने में, आह क्यू उन्हें सुनते ही आग-बगूला हो जाता। उसके दाद के दाग़ सुर्ख हो जाते, वह हमलावर की ओर घूरकर देखता और यदि वह हाज़िर-जबाबी में कमज़ोर होता तो उसे उलाहना देता और यदि वह सर्वथा दुर्बल और बलहीन योद्धा होता तो वह उसे मार भी देता था। लेकिन फिर भी सदा आह् क्यू ही इन द्वन्द्वों में परास्त होता और उसके फलस्वरूप उसने एक नई रणनीति अख्तियार की और वह थी प्रकोपपूर्ण दृष्टि। इसी से वह अब सन्तुष्ट हो जाता था।

परन्तु कुछ ऐसी बात हुई कि जब आह् क्यू ने लोगों से लड़ने की यह नई पद्धति अपनाई तो वीच्वांग के निठल्लों को उसे छेड़ने और उसका अट्टहास करने का और भी अधिक शौक पैदा हुआ। ज्योंही उनकी दृष्टि उस पर पड़ती, वे बहाना बनाते और कुछ यों शुरू करते :

"अर र र र वह चमक रहे हैं!"

आह् क्यू स्वभावानुसार ही एकदम क्रोधित हो जाता और प्रचण्ड दृष्टि से उन्हें घूरता।

"हाँ, तो यहां एक मिट्टी के तेल की लालटैन है।" वे मज़ाक जारी रखते और तनिक भी भयभीत न होते।

आह क्यू बेचारा कर ही क्या सकता था। अतः किसी अच्छी-सी फबती के लिये वह सिर खुजाने लगता था। "तुम लोगों को तो जवाब देना.. .... ." इस समय ऐसा प्रतीत होता था मानो उसके सिर के दाग़ केवल दाद के दाग़ नहीं अपितु कुछ सम्मान-नीय और प्रतिष्ठित दाग़ हैं। फिर भी, जैसा कि हम पहले कह चुके हैं आह क्यू सांसारिक बातों का ज्ञाता था। जब उसे एक बार यह अनुभव हो जाता कि उसने "निषेध" का उल्लंघन किया है तो वह दूसरे ही क्षण चुप्पी साध लेता था।

यदि इस पर भी निठल्ले सन्तुष्ट न होते और उसके पीछे पड़े रहते तो अन्त में वह हाथा-पाई पर उतर आता था। और निठल्ले जब आह क्यू की चोटी खींच कर और उसका सिर चार-पांच बार दीवार में दे मारते थे तब जाकर वे वहाँ से हटते थे और सोचते थे कि वे विजयी हो चुके हैं। आह क्यू वहाँ कुछ देर ठहरता और मन में सोचता, "यह तो ऐसा हुआ, मानो मुझे मेरे बेटे ने पीटा हो। इस दुनिया का क्या हो रहा है आजकल .. .. " तत्पश्चात् वह भी यह समझते हुए कि जीत उसी की हुई है वहाँ से चला जाता था।

आह क्यू जो कुछ भी सोचता था, बाद में उसका ज़िक्र लोगों से जरूर कर देता था। इस प्रकार वे तमाम लोग जो आह क्यू की खिल्ली उड़ाते थे यह जानते थे कि उसकी मनोवैज्ञानिक विजय प्राप्त करने का यही मात्र साधन है। इस प्रकार जब कभी भी कोई उसकी भूरी चोटी खींचता उसके उस अस्त्र को भी कुंठित कर देता

जिसके द्वारा वह मनोवैज्ञानिक विजय प्राप्त करता था और कहता . "आह् क्यू, यह कोई बेटा अपने बाप को नहीं पीट रहा है बल्कि एक आदमी एक पशु को मार रहा है। बोलो तुम भी बोलो कि एक आदमी एक पशु को मार रहा है!"

तब आह् क्यू जिसकी चोटी खिंच रही होती और उसका सिर एक ओर झुका होता, कहता : "तू एक कीड़े को मार रहा है—अब बता ? मैं तो एक कीड़ा हूँ—अब तो छोड़ दे ?"

उसके अपने आप को कीड़ा कह देने पर भी निठल्ले उसे तब तक नहीं छोड़ते थे जब तक उसका सिर चार-पांच बार किसी भी पास की कठोर चीज़ से न दे मारते, क्योंकि यह उनका रिवाज था और इसे पूरा करने के बाद वे इस पर संतुष्ट हो कि विजय उनकी ही हुई है और यह विश्वास लिये कि इस बार आह् क्यू का काम तमाम हो गया है, वे वहाँ से जाते थे। लेकिन कुछ क्षण बाद ही आह् क्यू भी यह सोचते हुए वहाँ से चल पड़ता कि उसी ने विजय प्राप्त की है। उसे ख्याल आता कि वह "आत्म-क्षुद्र" है और इसमें से "आत्म-क्षुद्र" यदि निकाल दिया जाय तो "सर्वश्रेष्ठ" ही तो शेष रहता है। क्या सरकारी पद की परीक्षा का सर्वोच्च उम्मीदवार भी "सर्वश्रेष्ठ" नहीं था ? "और तुम अपने आपको समझते क्या हो ?" वह बड़बड़ाता हुआ चला जाता।

अपने शत्रुओं का सामना करने के लिये इसी प्रकार के अनेक धूर्ततापूर्ण तरीक़े अपनाने के बाद आह् क्यू प्रसन्न-चित्त हो शराब की दुकान की ओर शराब के कुछ प्याले पीने के लिये जाता।

वहाँ भी दूसरों से फिर मज़ाक, फिर उनसे झगड़ा, फिर वही विजयी होकर निकलना, और आनन्दित हो पुराने मन्दिर की ओर प्रस्थान जहाँ जाकर वह तकिये पर सिर रखते ही नींद में डूब जाता था।

यदि उसके पास पैसे होंगे तो वह जुआ खेलने चला जायगा वहाँ कुछ लोग ऊँकड़ू बैठे होंगे और उन्हीं के बीच में आह् क्यू बैठ जाता, उसका चेहरा पसीने से शराबोर होता और उसकी आवाज़ सबसे ऊँची और ज़ोरदार होती: "हरे अजगर पर लगाये चार सौ!"

"ऐ—खोल दे पत्ते!" जुआरी पसीने में तर-बतर हो सन्दूक खोलता और लय से कहता: "लो, यह तो दिव्य द्वार है!...... तुम्हारी नहीं है—ख्याति और मार्ग पर तुमने कुछ नहीं लगाया। आह् क्यू देदे दोस्त पैसे।"

"मार्ग—सौ—एक सौ पचास।"

इसी ताल-मयता के साथ आह् क्यू के पैसे धीरे-धीरे दूसरे पसीने में नहाये हुए लोगों की जेबों में पहुँचते जाते। अन्त में वह भीड़ में से जबरन निकाला जाता और पीछे से देखता रहता। जब तक खेल खतम न हो जाता वह उसमें दूसरों की मदद करता और जब खेल समाप्त हो जाता तो वह अनेच्छापूर्वक वहाँ से पुराने मन्दिर की ओर प्रस्थान करता। अगले दिन जब वह काम पर जाता था तो उसकी आँखें सूजी हुई होती थीं।

फिर भी इस कहावत का कि "दुर्भाग्य भी गुप्त वरदान है"

सत्य तब प्रकट होता जब आह क्यू खूब पैसे जीत लेता और अन्त में बेचारा सब-कुछ हार बैठता।

शाम को वीच्वांग में देवताओं का त्यौहार मनाया जा रहा था। संस्कारानुसार उस दिन एक नाटक भी खेला जाने वाला था और रिवाजानुसार ही मंच से लगी हुई जुए की मेज़ें भी रखी थीं। नाटक के ढोल और घण्टे जो बजे तो आह क्यू को तीन मील की दूरी पर भी सुनाई पड़े क्योंकि जुआरी की आवाज़ें सुनने में उसके कान बहुत अभ्यस्त थे। उसने बार-बार पैसे लगाये और तांबे के सिक्के चांदी में परिवर्तित होने लगे। चांदी डालरों में परिणत हो गई और डालरों की संख्या बढ़ने लगी। उत्तेजित हो वह चीख उठा—"दिव्य द्वार पर दोसौ डालर!"

उसे पता न चल सका किसने झगड़ा शुरू किया और क्यों किया। गालियाँ, घूँसे और लातों की मिश्रित ध्वनियाँ उसके कानों पर पड़ीं और जब वह ठीक से अपने क़दमों पर खड़ा हुआ तो उसने देखा कि जुए की मेज़ें ग़ायब थीं और उनके साथ ही जुआरी भी लापता थे। उसके शरीर के अनेक अंग इस प्रकार दुख रहे थे मानो उसे खूब पीटा गया हो। लातें मारी गई हों और अनगिनत लोग आश्चर्य-चकित हो उसकी ओर देख रहे थे। यह महसूस करते हुए कि वह कुछ भूल गया है वह वहाँ से पुराने मन्दिर की ओर चला और जब उसे होश आया तो उसने देखा कि उसका डालरों का ढेर अदृश्य हो गया है। और चूँकि जुआरी लोग जो इन त्यौहारों के अवसर पर जुए करते हैं वीच्वांग के

निवासी नहीं होते वह उन बदमाशों को कहाँ ढूँढता ?

ओहो कैसा सफेद और चमकता हुआ चाँदी का ढेर था ! वह सब उसी का था लेकिन ...अब तो वह सारा का सारा ग़ायब था। अब तो यह बात भी उसे सांत्वना नहीं दे सकती थी कि उसे उसके बेटे ने लूट लिया है। और न ही वह अपने आप को कीड़ा-मकोड़ा समझकर संतुष्ट रह सकता था। इसलिये इस बार तो उसे वास्तव में पराजय का कड़वा घूँट चखना ही पड़ा।

लेकिन फौरन उसने अपनी पराजय को विजय में परिणत कर दिया। अपना दाहिना हाथ उठाकर उसने अपने ही गाल पर दो तमाँचे मारे ताकि उनमें पीड़ा हो। थप्पड़ खाने के बाद उसके दिल का बोझ हल्का हो गया। उसे ऐसा लगा मानो पहला तमाँचा तो उसने अपने ही गाल पर मारा था और दूसरा किसी और के गाल पर गो कि उस तमाँचे का दर्द अब भी उसके गालों पर हो रहा था। संतुष्ट हो कि उसी ने विजय प्राप्त की है वह लेट गया। शीघ्र ही उसकी आँख लग गई।

: ३ :

आह् क्यू की विजयों का विस्तृत वर्णन

यद्यपि आह् क्यू को हमेशा विजय प्राप्त होती थी मि० चाओ ने जब से उसे एक तमाँचे से सम्मानित किया था तब से तो वह बहुत प्रसिद्ध हो गया।

अमीन को दो सौ य्वां नक़द देने के बाद आह् क्यू क्रोधित हो लेट गया। बाद में उसने अपने मन में सोचा, "आज-कल संसार में कितना अन्याय बढ़ रहा है, बेटे बाप को मारते हैं . " फिर मि० चाओ के, जो कि अब उसका बेटा था, विचारों ने उस को उत्साहित करना शुरू किया और वह उठा और "पति की समाधि पर बैठी तरुण विधवा" गाता हुआ शराब की दुकान पर पहुँचा। उसके बाद उसने यह ज़रूर महसूस किया कि मि० चाओ अधिकांश लोगों से कुछ उच्च-स्तर का व्यक्ति है।

आश्चर्य की बात है कि इस घटना के पश्चात् हर कोई उसका विशेष सम्मान करने लगा। शायद उसने यह समझा था कि वह चाओ का बाप था पर वास्तव में ऐसा नहीं था। वीच्वांग में तो यह नियम था कि यदि सातवें बच्चे ने आठवें बच्चे को पीट दिया या अमुक ली ने अमुक चांग को ठोक दिया

तो उसको कोई महत्त्व नहीं दिया जाता था। हाँ, मार-पीट का सम्बन्ध किसी ऊँचे व्यक्ति जैसे मि० चाओ के साथ होना चाहिये था वरना देहाती लोग उस विषय पर बातें ही नहीं करते थे। परन्तु एक बार उन्होंने उस घटना को बात-चीत के योग्य समझ लिया क्योंकि मारने वाला बहुत प्रख्यात था और पिटने वाले को भी उसकी कुछ ख्याति पहुँच गई थी। जबकि ग़लती आह क्यू की थी तो ज़ाहिर है उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि मि० चाओ तो ग़लती पर हो ही नहीं सकते। लेकिन जब आह क्यू ग़लती पर था तो सब कोई उसके साथ असाधारण समझदारी से क्यों व्यवहार करते थे? यह बताना कठिन है। हाँ, हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि चूंकि आह क्यू कहा करता था कि वह मि० चाओ के वंश से सम्बन्ध रखता है इसलिये जो भी पीटा गया था लोग अब भी उससे घबराते थे और सोचते थे सम्भव है उसके कथन में कुछ सत्य हो इसलिये उसे समादर की दृष्टि से देखते थे। या फिर दूसरा कारण यह हो सकता है कि इसकी समानता कन्फ्यूशस के मन्दिर के बलि के गो-मांस से की जा सकती है। यद्यपि गो-मांस उसी कोटि में आता था जिसमें बलि के सूअर का मांस और बकरी का मांस आता था क्योंकि वे सभी पशु-उत्पत्ति के थे और चूंकि उसका ऋषियों ने प्रयोग किया था इस लिये कालांतर में कन्फ्यूशस के अनुयायियों ने उसे स्पर्श करने का भी साहस न किया।

इस घटना के पश्चात् आह क्यू निरन्तर सफल होता रहा।

एक दिन संध्या को जब वह प्रफुल्लता से मदमस्त हो कहीं चला जा रहा था उसकी गलमुच्छे वांग पर नजर पड़ी जो धूप में अधनंगा दीवार के सहारे बैठा हुआ जुएँ मार रहा था। उस पर दृष्टि पड़ते ही आह् क्यू के शरीर में भी खुजली होने लगी। यह गलमुच्छा वांग खुजली का रोगी था और उसकी बड़ी-बड़ी मूंछें थीं और सब कोई उसे "दादवाला गलमुच्छा वांग" कहा करते थे। यद्यपि आह् क्यू ने उसके नाम में से "दाद" शब्द हटा दिया था पर वह उससे सख्त घृणा करता था। आह् क्यू ने महसूस किया कि वैसे खुजली या खारिश तो कोई विशेष रोग नहीं है पर ऐसे बालदार गाल तो वास्तव में बहुत ही असाधारण हैं और इसलिये उन पर ग्लानि हो उठना स्वाभाविक ही है। अन्त में आह् क्यू उसी के साथ बैठ गया। अब यदि वह कोई और निठल्ला होता तो आह् क्यू कदापि इस सहजता के साथ वहां बैठने का साहस न करता लेकिन गलमुच्छे वांग के पास बैठने में उसे क्या भय हो सकता था? सत्य तो यह है कि उसकी वहां बैठने की इच्छा को वांग अपना सम्मान समझता था।

आह् क्यू ने अपना जर्जर-धारीदार जाकेट उतारा और उसे बाहर-भीतर से देखा परन्तु या तो इसलिये कि उसने उसे हाल ही में धोया था या शायद इसलिये कि वह खुद बड़ा फूहड़ था और जुएँ मारने की कला में निपुण न था बड़ी खोज-तलाश के बाद केवल तीन या चार जुएँ ही वह निकाल सका। उसने देखा कि गलमुच्छा वांग एक के बाद दूसरी धड़ाधड़ जुएँ निकाल रहा

था और चटाचट उन्हें मुँह में दबाये जा रहा था।

पहले तो आह क्यू को निराशा-सी हुई पर बाद में आत्म-ग्लानि हो गई। वह घृणित गलमुच्छा वांग इतनी जुएँ खा गया और उससे दो-चार भी मुश्किल से निकलीं—इसमें कितनी बड़ी पराजय निहित थी! उसने और दो-चार बड़ी-बड़ी पकड़ने की इच्छा की, परन्तु एक भी हाथ न लगी और बड़ी कठिनाई के बाद उसे एक मध्यम-आकार की हाथ लग ही गई, जिसे उसने बड़ी भयंकरता और कुछ पाशविकता के साथ मुँह में ठूँस लिया। लेकिन उसकी तो पट्ट की-सी ध्वनि निकल कर रह गई और फिर वह गलमुच्छे वांग से बाजी हार गया।

उसके सभी दाग़ सुर्ख हो गये, उसने अपना जाकेट जमीन पर फेंक दिया, थूक दिया और कहा, "कीड़ा!"

"खुज्जू कुत्ते, किसे गाली दे रहा है बे?" उसकी ओर तिरस्कृत दृष्टि से देखते हुए गलमुच्छे वांग ने कहा।

यद्यपि हाल ही में जो उसे सम्मान प्राप्त हुआ था उससे आह क्यू का गर्व बढ़ गया था; परन्तु जब उसका लुच्चे-लफंगों से सामना होता तो वह भीगी बिल्ली बन जाता था। फिर भी इस बार तो वह असाधारणतया झगड़ालू बन गया। इस प्रकार का बालदार गालों वाला प्राणी ऐसी धृष्ठता कैसे कर सकता है? "जो कोई भी सुन रहा है उसी को दे रहा हूँ", आह क्यू ने कहा और अपने हाथ पुट्ठों पर रखकर खड़ा हो गया।

"क्या तेरी हड्डियाँ चुलचुला रही हैं?" गलमुच्छे वांग ने खड़े

होकर कहा और कोट पहन लिया।

आह् क्यू समझा वांग भाग जाना चाहता है, इसलिये वह आगे बढ़ा और उसे मारने के लिये उसने घूसा ताना। लेकिन इसके पूर्व कि आह् क्यू का घूसा गलमुच्छे वांग पर पड़े, वांग ने उसे धर दबाया और ऐसी पटखनी दी कि आह् क्यू लुढ़क गया। गलमुच्छे वांग ने लपककर उसकी चुटिया पकड़ ली और उसे घसीट कर दीवार तक लाने लगा ताकि उसका सिर अपने रिवाजानुसार दीवार में पटक-पटक कर मारे।

"ऐ, देखो शरीफ आदमी ज़बान से बात करता है, हाथा-पाई नहीं करता।" आह् क्यू ने विरोध किया, उसका सिर दूसरी ओर था।

जाहिर है गलमुच्छा वांग कोई शरीफ आदमी तो था नहीं, इसलिये कि उसने आह् क्यू की बात पर ध्यान दिये बिना पांच-छः बार उसका सिर दीवार में दे मारा और फिर उसे ऐसा जोर का धक्का दिया कि आह् क्यू लुढ़कता हुआ दो गज दूर जा गिरा। तब जाकर गलमुच्छा वांग संतुष्ट हुआ और वहां से चला।

जहां तक आह् क्यू को स्मरण है जिंदगी में यह पहला मौका था जब गलमुच्छे वांग के हाथों उसकी यह दुर्गति बनी थी। इससे पूर्व वह सदैव गलमुच्छे वांग को उसके बालदार गालों के लिये चिढ़ाया करता था और वांग ने कभी उसे नहीं चिढ़ाया था, मारना तो खैर दरकिनार ही था। और अब सभी आशाओं के प्रतिकूल गलमुच्छे वांग ने उसे पीट दिया था। शायद बाजार

में वे जो कुछ कहते थे वह वास्तव में सच ही था—"सम्राट् ने सरकारी पद की परीक्षायें मन्सूख़ कर दी हैं और जो विद्यार्थी उन्हें पास कर चुके हैं, उनकी अब कोई आवश्यकता नहीं है।" इसका तो स्पष्टतः यह परिणाम हुआ होगा कि चाओपरिवार की प्रतिष्ठा समाप्त हो गई होगी। क्या इसी का तो यह परिणाम नहीं कि लोग उसका तिरस्कार कर रहे थे?

आह क्यू वहां अस्थिर खड़ा रहा।

कुछ दूरी से आह क्यू के कुछ और शत्रु समीप आते दिखाई पड़े। यह मि० चियेन का सबसे बड़ा लड़का था, जिससे आह क्यू को घृणा थी। कुछ दिन पहले वह शहर में एक विदेशी पाठशाला में शिक्षा प्राप्त करने गया था और उसके बाद शायद जापान चला गया था। जब कोई ६ महीने बाद वह घर लौटा तो उसकी टांगें सीधी थीं और चोटी ग़ायब हो चुकी थी। उसकी मां कई बार फूट-फूट कर रोई और उसकी पत्नी ने तीन बार कुएं में गिरकर आत्म-घात करने की चेष्टा की। बाद में उसकी मां ने हरेक से कह दिया, "एक बार जब वह नशे में था तो किसी बदमाश ने उसकी चोटी काट ली। वह तो कोई अफसर हो जाता, पर अब जब तक वह दुबारा न उग आये, उसे प्रतीक्षा करनी पड़ेगी वरना वह अफसर बन ही नहीं सकता।" फिर भी आह क्यू को इस पर विश्वास न आया और वह उसे "नकली विदेशी शैतान" और "विदेशियों का एजेण्ट" कहता रहा। ज्यों ही वह उसे देखता बड़बड़ाने लगता।

जिस बात पर आह् क्यू को उससे सबसे अधिक घृणा और ग्लानि थी वह थी कृत्रिम चोटी। जब आदमी चोटी भी झूठी ही लगा ले तो वह फिर इन्सान कैसे रह सकता है और उसकी पत्नी ने चूंकि चौथी बार कुएं में गिरने की कोशिश नहीं की, इसलिये वह भी अच्छी स्त्री नहीं हो सकती।

यह "नकली विदेशी शैतान" उसी की ओर चला आ रहा था।

"गंजे—गधे—" पहले तो आह् क्यू मन ही मन में और धीरे-धीरे उसे गालियां-कोसने दे रहा था पर इस समय जबकि वह क्रोधावस्था में था और अपने भाव प्रकट करना चाहता था, इसलिये अनायास ही शब्द उसके मुँह से निकल पड़े।

दुर्भाग्यवश यह "गंजा" अपने साथ एक चमकदार भूरी बेद लिये जा रहा था, जिसे आह् क्यू "विलापी के हाथ की छड़ी" कहा करता था और बड़े-बड़े डग भर कर वह उसके निकट पहुँचा। आह् क्यू जानता था कि अब पिटाई उड़ने वाली है और इसलिये फुर्ती से उसने भी कमर कस ली और अकड़ी हुई कमर लिये वह प्रतीक्षा करने लगा और जाहिर है कि आशानुसार ही एक जोरदार धम्म की आवाज़ करते हुए बेद उसके सिर पर पड़ी।

"मैं तो उसे चिढ़ा रहा था।" आह् क्यू ने पास ही खड़े एक बालक की ओर इशारा करते हुए कहा।

पटाख! पटाख! पटाख!

जहां तक आह् क्यू को याद है यह उसके जीवन का दूसरा अपमान था। सौभाग्यवश, ज्योंही पटाख की आवाज़ बंद हुई,

उसे लगा मानो मामला खतम हो गया है और इसलिये उसने संतोष की साँस ली। साथ ही "विस्मरण की बहुमूल्य योग्यता" ने जो उसके पूर्वजों से उसे विरासत में मिली थी, उसका यहां भी साथ दिया। वह धीरे-धीरे वहां से चला और जब मधुशाला के द्वार पर पहुँचा तो उसे फिर उल्लास का अनुभव हुआ।

लेकिन सामने से एक छोटी भिक्षुणी "आत्म-सुधार आश्रम" से चली आ रही थी। भिक्षुणी पर दृष्टि पड़ते ही आह क्यू हमेशा क्रोधातुर हो जाता और उलाहना देता। लेकिन इस दर्पदमन के बाद क्या कर सकता था? उसने फौरन वह सब याद किया जो हुआ था और उसका क्रोध पुनर्जीवित हो उठा।

"ओहो, तो यह सब विपत्ति इसीलिये मुझ पर पड़ी कि मुझे तुम्हारी शक्ल देखनी थी।" उसने अपने मन में सोचा।

वह उस भिक्षुणी तक गया, ज़ोर से थूका और बोला, "उफ... ..!"

छोटी भिक्षुणी ने उस पर तनिक ध्यान न दिया और सिर झुकाये चुपचाप आगे चल दी। आह क्यू फिर उसके पीछे गया और अचानक उसने भिक्षुणी का हाल ही में मुंडा हुआ सिर मलने के लिये हाथ बढ़ाया और फिर मूर्खतापूर्ण हँसी हँसते हुए कहने लगा, "गंजी! जा जल्दी कर तेरा भिक्षु तेरी राह देख रहा है......।"

"मेरे सिर पर तुम क्यों हाथ फेर रहे हो... ?" भिक्षुणी बोली और शर्म से लाल होती हुई वह फुर्ती से आगे बढ़ गई।

शराबखाने में बैठे हुए लोग ठहाका मार कर हँसे। आह क्यू ने जब देखा कि उसके साहसिक कार्य की लोग सराहना कर रहे हैं तो वह पुलकित हो उठा।

"जब भिक्षु तुम पर हाथ रख सकता है तो मैं क्यों नहीं रख सकता ?" उसने उसके गाल में चुमटी लेते हुए कहा।

शराबखाने के लोगों ने फिर क़हक़हा लगाया। आह क्यू और भी अधिक प्रसन्न हुआ और जो लोग उसके कारनामों की दाद दे रहे थे, उन्हें और संतुष्ट करने की ख़ातिर उसने उसके जाने के पहले एक बार और ज़ोर से उसकी चिमटी ली।

इस साहसिक कार्य के समय वह गलमुच्छे वांग और नकली विदेशी शैतान को भूल गया था मानो दिन भर के दुर्भाग्य का वह बदला ले चुका हो। और आश्चर्य की बात है कि पिटने के बाद से अब उसका जिस्म उसे कहीं हल्का और इतना जोशीला महसूस हुआ मानो हवा में उड़ जायगा।

"आह क्यू, भगवान करे तू निपूता मरे !" छोटी भिक्षुणी के अश्रुमिश्रित शब्द दूर से सुनाई पड़े।

आह क्यू ने विजयोल्लास से ठहाका मारा।

शराबखाने के लोगों ने भी उसका साथ दिया, पर इस बार उन्हें कुछ कम संतोष हुआ।

: ४ :

प्यार की हार

कहते हैं ऐसे भी विजेता हुए हैं जो विजय पर तब तक प्रसन्न नहीं होते, जब तक कि उनके प्रतिद्वन्द्वी चीते या गिद्ध की भांति भयंकर न हों। यदि प्रतिद्वन्द्वी भेड़ या मुर्गी के बच्चे जैसे कायर हों तो वे समझते हैं उनकी विजय फीकी रही और ऐसे भी विजेता देखे जाते हैं जो सभी को लपेट लेते हैं। शत्रु उनके द्वारा या तो मार दिया जाता है, या वह शरणागत हो जाता है और उन्हें अनुभव होता है कि अब उनका कोई शत्रु, प्रतिद्वन्द्वी या मित्र शेष नहीं रहा बल्कि केवल वे ही स्वयं सर्वशक्तिमान, अकेले, निर्जन और निराश्रय रह गये हैं। और तब वे महसूस करते हैं कि उनकी विजय शोकांत हुई है। परन्तु हमारा नायक इतना दुर्बल और गया-बीता भी नहीं है। वह तो सदैव प्रसन्नचित्त रहता आया है। शायद यह इस चीज़ का प्रमाण है कि चीन की आध्यात्मिक सभ्यता शेष विश्व से उच्चतर है।

देखिये न, आह क्यू कितना सरल और प्रसन्नचित्त है मानो अभी उड़ जायगा।

लेकिन यह विजय अनूठे परिणामों से रहित न थी। बहुत देर तक तो ऐसा लगा मानो वह उड़ रहा हो और वह उड़ता हुआ प्राचीन मंदिर पहुँचा, जहां पहुँच कर वह साधारणतया लेटते ही निद्रामग्न हो जाता था। लेकिन आज शाम को आंखें बन्द करना उसके लिये कठिन हो गया, उसने महसूस किया कि उसके अंगूठे और पहली उंगली में कुछ हो गया है, क्योंकि वे पहले की अपेक्षा अब कुछ अधिक स्निग्ध लग रही थीं। यह नहीं कहा जा सकता कि यह नरमी या चिकनाहट उस छोटी भिक्षुणी के गालों की थी या उसकी उँगलियाँ भिक्षुणी के गालों से रगड़ खाकर चिकनी हो गई थीं।

"आह् क्यू, भगवान् करे तू निपूता मरे!"

ये शब्द फिर आह् क्यू के कानों में गूंजे और उसने सोचा, "ठीक है, अब मुझे शादी कर लेना चाहिये, क्योंकि यदि कोई मनुष्य संतानहीन मर जाता है तो उसकी मृतात्मा के लिये एक प्याला चावल देने वाला भी कोई नहीं होता ... मुझे अब शादी कर ही लेना चाहिये।" कहावत है कि "पितृ-भक्ति से हीन आचरण के तीन रूप होते हैं जिसमें से बदतरीन होता है सन्तानहीन होना" और यह जीवन की विडम्बना ही तो है कि "बिना सन्तान वाली मृतात्मा भूखी मरे।" इस प्रकार वह जो कुछ सोच रहा था, वह ऋषि-मुनियों के आदेशानुसार सर्वथा उचित था और वास्तव में दया का विषय है कि कालांतर में वह पागलों

की भांति बिना रुके भागता फिरे और उसकी आत्मा को शांति न मिले।

"स्त्री, स्त्री... !" उसके दिमाग़ में आता रहा।

"... भिक्षु हाथ धरता है. . स्त्री, स्त्री। स्त्री!" फिर वही विचार मस्तिष्क में घूमता रहा।

हम यह कभी न जान सके कि आह क्यू उस रात आख़िर कब सो गया। लेकिन उसके बाद उसे शायद हमेशा अपनी उँगलियाँ नरम और चिकनी लगीं और वह सदैव किंचित प्रफुल्लित-सा रहा। "स्त्री. ...." वह सोचता ही रहा।

इस पर से हम अनुमान लगा सकते हैं कि स्त्री मानव के लिये वास्तव में एक बड़ा ख़तरा है।

चीन के अधिकांश स्त्री-पुरुष यदि दुर्भाग्यवश नारियों द्वारा नष्ट-भ्रष्ट न हो जाते तो अवश्य ही ऋषि-मुनि बन सकते थे। शांग वश का तान ची द्वारा सर्वनाश हुआ, चाओ वंश को पाओ स्जू ने क्षति पहुँचाई, और जहां तक चिन वंश का सम्बन्ध है यद्यपि हमें इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलता पर यदि हम यह कल्पना कर लें कि उसके अन्त का भी कारण स्त्री ही रही होगी तो अन्यायपूर्ण न होगा। और यह तो सत्य है ही कि तुंग चो की मृत्यु त्याओ चान द्वारा ही हुई थी।

प्रारम्भ में आह क्यू भी नैतिकता और संयम-नियम से रहने वाले आदमियों में से था। हालाँ कि हम नहीं जानते कि उसे किसी योग्य शिक्षक का नेतृत्व प्राप्त हुआ या नहीं परन्तु फिर भी "लिंगों

के कठोर पृथक्करण" का पालन करने में वह सदैव बड़ी सावधानी प्रदर्शित करता था और उसमें इतनी पवित्रता व न्यायप्रियता भी थी कि वह छोटी भिक्षुणी और नकली विदेशी शैतान के पाखंडों का खुले आम-विरोध करता था। उसका विचार था कि "सारी भिक्षुणियों के भिक्षुकों के साथ गुप्त सम्बन्ध हैं। जब कोई स्त्री सड़क पर अकेली जाती है तो स्पष्ट है कि वह दुर्जनों को कामातुर करना चाहती है। जब कोई पुरुष और स्त्री आपस में बातें करते हैं तो अवश्य वे कोई-न-कोई बात निश्चित करते होंगे।" उन लोगों को सुधारने की ग़रज़ से वह ऐसे लोगों पर अपनी कोपाकुल दृष्टि डालता या ज़ोर से कोई चुभता हुआ वाक्य कह देता, या यदि स्थान निर्जन होता तो वह पीछे से पत्थर भी फेंक देता था।

किस को गुमान हो सकता था कि एक तीस वर्ष का अधेड़ व्यक्ति जिसे "दृढ़ होना" चाहिये था इस नन्हीं भिक्षुणी पर इस तरह लट्टू हो जायगा। शास्त्रीय नियमानुसार इस प्रकार की विक्षिप्तता मानव में नहीं होनी चाहिये इसलिये स्त्रियाँ निसंदेह घृणित प्राणी हैं। क्योंकि यदि नन्हीं भिक्षुणी का मुख मुलायम और स्निग्ध न होता तो आह क्यू उस पर हरगिज़ मोहित न होता और न ही ऐसा तब होता यदि नन्हीं भिक्षुणी का मुख कपड़े से ढँका होता। पाँच-छः साल पहले जबकि खुले मैदान में कोई तमाशा हो रहा था उसने एक स्त्री के पुट्ठे में तिक्का नोच लिया था लेकिन चूँकि पुट्ठे पर वस्त्र था इसलिये उसकी नरमी पर वह

बाद में इस प्रकार विक्षिप्त नहीं हुआ था। परन्तु उस नन्हीं भिक्षुणी ने तो अपना मुख ढँका नहीं था और यही चीज़ पाखण्ड के घिनौनेपन का सबूत थी।

"स्त्री......" आह क्यू ने सोचा।

वह उन स्त्रियों पर कड़ी नज़र रखता था जिन्हें वह समझता था कि वे "बदमाशों को काम-वासना की ओर प्रेरित करना चाहती हैं" लेकिन वे कभी उसकी ओर देखकर मुस्कराती नहीं थीं। वह उन स्त्रियों की बातें बड़े ध्यान से सुनता था जो उससे बातचीत करती थीं परन्तु उसने उनकी बातों में कभी किसी प्रकार का निर्देश नहीं पाया। आह! यह भी स्त्रियों के घिनावनेपन का ही एक और उदाहरण है। वे सब की सब झूठी नम्रता धारण कर लेती हैं।

एक दिन जब आह क्यू मि० चाओ के घर पर चावल पीस रहा था खाना खाने के बाद रसोई में जाकर पाइप पीने लगा। यदि किसी और का मकान होता तो वह शाम के खाने के बाद घर पर चला जाता पर चाओ परिवार में लोग जल्दी खाना खा लेते थे। हालाँकि यह नियम था कि लैप नहीं जलाना चाहिये बल्कि खाने से निपटते ही सो जाना चाहिये पर फिर भी इस नियम में कभी-कभी कुछ अपवाद निकल आते थे। पहला—जब मि० चाओ का पुत्र जिले की सरकारी पद की परीक्षा में बैठ रहा था तो उसे परीक्षा की तैयारी के लिये लैप जलाने की आज्ञा मिल गई। दूसरा—जब आह क्यू इधर-उधर के काम करने आता तो चावल

पीसने के लिये उसे भी लैंप जलाने की इजाजत थी। इस दूसरे अपवाद की ही बदौलत आह क्यू अब तक रसोई में बैठा धूम्रपान कर रहा था ताकि उसके बाद फिर चावल पीसे।

जब अमाह वू ने जो चाओ घराने की एकमात्र नौकरानी थी बर्तन धो लिये तो वह भी लम्बी बेंच पर बैठ गई और आह क्यू से गप्पें मारने लगी।

"हमारी मालकिन ने दो दिन से कुछ भी नहीं खाया है क्योंकि मालिक एक रखेल रखना चाहता है......"

"स्त्री ... अमाह वू . यह नन्ही विधवा," आह क्यू ने सोचा।

"हमारी छोटी मालकिन के अष्टमी को बच्चा होने वाला है "

"स्त्री ... " आह क्यू ने फिर विचार किया। उसने अपना पाइप रख दिया और उठ खड़ा हुआ।

"हमारी छोटी मालकिन—" अमाह वू बकवास करती रही।

"मेरे साथ सोओ !" आह क्यू अचानक उसकी ओर बढ़ा और उसे उसने अपने क़दमों पर गिरा लिया।

क्षण भर के लिये निस्तब्धता छा गई।

"उई मा !" अमाह वू सुनते ही स्तम्भित हो गई, धूजने लगी और फिर एकदम चीत्कार निकालती हुई भाग निकली। और शीघ्र ही पता चला कि वह रो रही थी।

आह क्यू भी दीवार के सहारे झुका चकित खड़ा था, उसने

दोनों हाथों से खाली बेंच को पकड़ा और आहिस्ता से खड़ा होने लगा, अब उसे कुछ धुंधला भान हुआ कि कुछ गड़बड़ हो गई है। वास्तव में अब तो वह स्वयं भी कुछ घबरा-सा गया था। हड़बड़ा कर उसने अपना पाइप कमर पट्टे में घुरसा और चावल पीसने के लिये जाने का विचार किया। धम्म से आवाज़ हुई ज्योंही उसके सिर पर एक भारी प्रहार हुआ और फुर्ती से जो उसने घूम कर देखा तो उसके सामने जिले का सफल उम्मीद-वार खड़ा बाँस घुमा रहा था।

"तुझे हिम्मत कैसे हुई ... तुझे .."

बड़ा भारी-सा बाँस उसके कन्धों पर पड़ा, जब सिर के बचाव के लिये आह् क्यू ने दोनों हाथ उठाये तो प्रहार उसकी उँगलियों पर पड़ा और वह बिलबिला गया। और जब वह रसोई के दरवाज़े से भागा तो लगा मानो उसकी पीठ पर भी आघात पड़ा है।

"हरामी कहीं के!" सफल उम्मीदवार ने क्रोधातुर हो कहा और पीछे से उसे गालियां देते रहे।

आह् क्यू मिल के फर्श पर जा कर रुका जहां वह अकेला ही था। अब भी उसकी उँगलियों के पोरवों में पीड़ा हो रही थी और अब भी "हरामी" शब्द उसके कानों में गूंज रहा था। यह ऐसा शब्द था जिसका वीच्वांग के लोग कभी प्रयोग नहीं करते थे केवल वे धनिक ही जो सरकारी जीवन से परिचित थे इस शब्द का इस्तेमाल करते थे। अब तो वह और भी भयभीत

हो गया और यह बात उसके दिमाग़ पर गहरी जम गई। लेकिन अब "स्त्री......" का विचार हवा हो चुका था। इस गाली और पिटाई के बाद उसे ऐसा लगा मानो कुछ ख़तम हो गया है और जब वह फिर चावल पीसने गया तो उसे अब बड़ा हल्का-सा महसूस होने लगा। कुछ देर पीसने के बाद उसे गर्मी लगने लगी वह और कमीज़ उतारने के लिए रुका।

जब वह कमीज़ उतार रहा था तो उसे बाहर से किसी कोलाहल की आवाज सुनाई पड़ी और चूंकि आह् क्यू को इधर-उधर की बातों में ख़ूब मज़ा आता था इसलिये वह उस शोर की तलाश में बाहर निकल पड़ा। अंत में उसने वह जगह ढूंढ ही ली जहां शोर हुआ था—वह थी मि० चाओ का अन्दरूनी आंगन। गो कि अब संध्या हो चुकी थी उसने बहुत से लोगों को वहां देख लिया वहां सारा चाओ परिवार था जिसमें वह मालकिन भी शामिल थी जिन्होंने दो रोज़ से अनशन कर रखा था। साथ ही उनके पड़ोसी मि० त्सू, उनके नाती चाओ पाइ-यान और चाओ स्त्सू-चेन भी मौजूद थे।

छोटी मालकिन अमाह् वू को नौकरों के कमरे से बाहर ला रही थी और कह रही थी :

"बाहर आ......कमरे में बैठी मत रोये जा।"

"हरेक कोई जानता है तू अच्छी औरत है।" श्रीमती त्सू एक ओर से बोलीं, "आत्महत्या की बात कभी न सोचना तू, अच्छा।"

अमाह् वू सिर्फ बिलखती रही और अश्रव्य बातें बड़बड़ाती रही।

"यह तो बड़ा रोचक मामला है," आह् क्यू ने सोचा। "यह बेचारी विधवा क्या बद्माशी कर सकती है?" इसी बात का पता लगाने की ग़रज़ से वह चाओ स्यू-चेन के पास आ रहा था कि यकायक उसकी नज़र मि० चाओ के सबसे जेष्ठ लड़के पर पड़ी जो वही लट्ठ लिये उसकी ओर लपका आ रहा था। उस बड़े बाँस के लट्ठ ने उसे याद दिलाया कि वह उस से पिटा भी है और उसे तुरन्त ध्यान आया कि इस उत्तेजनापूर्ण दृश्य से उसका भी कुछ सम्बन्ध अवश्य है। वह मुड़ा और मिल में जाने की ग़रज़ से भागा और उस घबराहट में उसे यह न सूझा कि बाँस का लट्ठ उसका भागने का मार्ग अवरुद्ध कर लेगा और उसके सूझते ही वह दूसरी दिशा में दौड़ा और बिना किसी दीगर प्रयास के वह पीछे के दरवाज़े से निकल भागा। कुछ ही देर में वह अपने प्राचीन मन्दिर में पहुँच गया।

जब आह् क्यू दम भर के लिये बैठा तो उसकी चमड़ी पर गूमड़े पड़ने लगे और उसे कुछ ठण्ड भी महसूस हुई क्योंकि जो भी मौसम वसन्त का था परन्तु रातों को अब भी पाला पड़ता था और खुले कमरों के लिये तो वे बड़ी हानिकारक थी। तब उसे याद आया कि वह अपनी कमीज़ चाओ परिवार के घर भूल आया है परन्तु उसे भय लगा कि यदि वह कमीज लेने वहां गया

तो उसे सफल उम्मीदवारों के और भी बांसों के प्रहार सहने पड़ेंगे।

फिर अमीन अन्दर आगया।

"आह क्यू, साले कुतिया के बच्चे!" अमीन ने कहा। "तो अब तूने चाओ परिवार के नौकरों से भी छेड़छाड़ शुरू करदी; तू निरा उपद्रवी है। तूने मेरी नींद भी हराम कर दी कुतिया के बच्चे!......"

गालियों की इस बौछार में ज़ाहिर है आह क्यू क्या कहता। अन्त में, क्योंकि अब रात का समय था इसलिये आह क्यू को दुगुना जुर्माना देना पड़ा—४०० नक़द लेकिन क्योंकि उसके पास नक़द पैसे नहीं थे उसने अपना फेल्ट हैट जमानत के तौर पर दे दिया, और निम्नांकित पाँच शर्तें स्वीकार कीं:

(१) अगले दिन सुबह वह दो लाल बत्तियां जो १ पौंड वज़न की हों और कुछ अगरबत्तियों का बंडल ले कर चाओ परिवार के यहां जायगा ताकि अपने अपराध का प्रायश्चित कर सके।

(२) चाओ-परिवार ने भूत-प्रेत को झाड़ने-फूकने के लिये जो टाओइस्ट पुजारी बुलवाये थे उनका खर्च आह क्यू देगा।

(३) चाओ-घर में आह क्यू अब कभी क़दम नहीं रखेगा।

(४) यदि भविष्य में अमाह वू पर कोई भी दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी तो उसका दायित्व आह क्यू पर होगा।

(५) आह क्यू अपनी मज़दूरी या क़मीज़ लेने नहीं जायगा।

आह क्यू ने स्वभावतः सभी शर्तें मान लीं, बस दुर्भाग्य यही

था कि उसके पास नक़द पैसा नहीं था। सौभाग्य की बात कि वसन्त ऋतु थी इसलिये रुई वाले गद्दे के बग़ैर भी काम चल सकता था इस तरह उसने दो हज़ार य्वां के लिये उसे गिरवीं रख दिया और बाक़ी शर्तों को मान लेने का वादा किया। नंगी कमर लिये कुछ देर खुशामद करने के बाद भी उसके पास कुछ य्वां बच गये और उसके बदले अपना फेल्ट हैट लेने की बजाय उसने वह सभी रक़म शराब पर खर्च कर दी।

लेकिन चाओ-खान्दान ने न तो अगरबत्तियां जलाईं और न ही बत्तियाँ इस्तेमाल कीं इसलिये कि उनका प्रयोग उस समय होता था जब मालकिन बुद्ध की पूजा करती थीं और इसलिये इन दोनों चीज़ों को इस विशेष उद्देश्य के लिये अलग रख दिया गया। उस फटी-पुरानी कमीज़ के अधिकाँश भाग के तो बच्चे के लिये जो अष्टमी को छोटी मालकिन के हुआ था पतुवे बना लिये गये जबकि चिथड़ों का अमाह वू ने जूते के सोल में इस्तेमाल कर लिया।
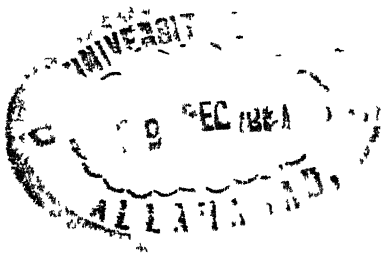
: ५ :

जीविका की समस्या

जब आह् क्यू ने यह संस्कार पूरा कर लिया तो वह हमेशा की भाँति प्राचीन मन्दिर को लौट आया। सूर्य अस्ताचल को जा चुका था और उसे धीरे-धीरे यह अनुभव होने लगा—जमाने की चाल भी निराली है। जब उसने इस प्रश्न पर विचार किया तो इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि यह सब शायद इसलिये महसूस हो रहा है क्योंकि उसकी पीठ नंगी है। जब उसे याद आया कि उसके पास अभी वह धारीदार जीर्ण-शीर्ण जाकेट बाक़ी है तो उसने उसे पहन लिया और लेट गया और जब उसकी आँख खुली तो उसने देखा कि सूर्य अब भी पश्चिमी दीवार के ऊपर अपनी किरणें बिखेर रहा था। वह उठ बैठा और बड़बड़ाने लगा, "कुतिया का बच्चा......"

उठने के पश्चात् वह फिर भी हमेशा की भाँति गलियों में मारा-मारा फिरता रहा और धीरे-धीरे उसे फिर उसी विचार ने दबोच लिया दुनिया में जरूर कुछ निराली बात हुई है पर इस बार इसका उसकी नंगी पीठ की असुविधा से कोई सम्बन्ध न था।

उस दिन के बाद ऐसा लगा मानो वीच्वांग की सभी स्त्रियाँ उससे लजाने लगीं और जब कभी वे आह क्यू को आते हुए देखतीं सब की सब घरों में छिप जातीं। यहाँ तक कि श्रीमती त्सू जो लगभग ५० वर्ष की वृद्धा थीं इसी गड़बड़ में उनके साथ छिप जाती थीं और अपनी ११ वर्षीया पुत्री को भी अन्दर बुला लेती थीं। यह बात आह क्यू को बड़ी अनोखी प्रतीत हुई और उसने सोचा "ये बूढ़ी चुड़ैलें भी ऐसी शर्माती हैं जैसे नई नवेली दुलहनें। कुतियें !......"

कई दिनों बाद उसे और भी अधिक तीव्रता से महसूस हुआ कि यह दुनिया भी अजीबो-ग़रीब है। अव्वल तो शराब-खाने वालों ने उसे उधार देने से इन्कार कर दिया और दूसरे प्राचीन मन्दिर के वृद्ध व्यवस्थापक ने कुछ अनावश्यक बातें कह दीं जिनसे प्रगट हुआ कि वह आह क्यू को वहाँ से निकाल देना चाहते थे। और तीसरे यह कि हलांकि उसे याद नहीं रहा कितने दिनों से, पर काफी दिनों से उसे किसी भी आदमी ने मज़दूरी के लिये भी नहीं बुलाया। शराब की दुकान में उधारी न मिलने से वह काम चला सकता था। बूढ़े आदमी का बार-बार उसे वहाँ से जाने को कहना भी वह नज़रअंदाज़ कर सकता था लेकिन जब उसे कोई काम नहीं देता तब तो वह भूखों मर जायगा और यही असल में "कुतिया के बच्चे" वाली स्थिति थी।

जब आह क्यू के लिये यह बेकारी असह्य हो गई तो वह अपने पुराने मालिकों के घरों पर मालूम करने गया कि आखिर

क्या बात हुई जो उसे काम नहीं मिला। मि० चाओ की देहलीज़ पर उसे रोक दिया गया लेकिन वहाँ भी उसे सब कुछ अद्भुत दीख पड़ा। घर में से जो व्यक्ति निकला वह बड़ा क्रोधित-सा दिखाई दिया जिसने उसे इशारा करते हुए आगे बढ़ने को कहा मानो किसी भिखारी को ग्लानिपूर्ण ढंग से कह रहा हो।

"नहीं है बाबा, कुछ नहीं है। जाओ आगे बढ़ो।"

यह तो आह क्यू को और भी असाधारण-सा लगा। उसने सोचा, "इन लोगों को पहले हमेशा सहायता की जरूरत पड़ती रहती थी। इस प्रकार अचानक तो वह काम खतम हो नहीं गया होगा; ज़रूर कहीं कुछ दाल में काला है।" और पूछताछ करने पर उसे मालूम हुआ कि जब कभी उन्हें कोई काम होता था वे तरुण डॉन को बुला लेते थे। यह तरुण डी० दुर्बल और शक्तिहीन दरिद्र था जिसे आह क्यू गलमुच्छे वांग से भी गिरा हुआ समझता था। किसको गुमान था कि यह नीच मनुष्य आह क्यू के पेट पर लात मारेगा? इसलिये आह क्यू का क्रोध व नफरत साधारण मौकों की अपेक्षा कहीं तीव्र थी और ज्योंही वह क्रोध के आवेग में वहाँ से जा रहा था कि अचानक उसने अपना हाथ उठाया और गाने लगा: "मारूँगा तुमको मैं, फौलाद की गदा से......"

कुछ दिन बाद मि० चियेन के मकान पर तरुण डॉन से उसका साक्षात्कार हुआ। "जब दो शत्रु मिलते हैं तो उनकी आँखें क्रोध व प्रतिशोध की ज्वाला से प्रज्वलित हो उठती हैं।" आह क्यू उसके पास गया और तरुण डी० स्थिर खड़ा रहा।

"गूंगे जानवर !" आह् क्यू ने लाल-पीली आँखें निकाल कर और मुँह से झाग निकालते हुए कहा।

"मैं तुच्छ प्राणी हूँ, ठीक है ?......" तरुण डी० ने पूछा।

"इस विनम्रता से तो आह् क्यू को और भी क्रोध आया। लेकिन चूंकि उसके हाथ में लोहे की कोई छड़ी नहीं थी इसलिये वह हाथ बढ़ाकर उसकी चोटी पकड़ने के लिये बढ़ा। तरुण डी० ने एक हाथ से अपनी चोटी की रक्षा की और दूसरी से आह् क्यू की चुटिया पकड़ ली और फिर आह् क्यू ने भी एक हाथ से अपनी चोटी दबा ली। आह् क्यू पहले कभी तरुण डी० को पूछता नहीं था लेकिन अब चूंकि वह कुछ दिनों भूखा मर चुका था और वह भी उतना ही निर्बल और क्षीण हो गया था जितना उसका प्रतिद्वन्द्वी और इस प्रकार वे दोनों बराबरी के प्रतिद्वन्द्वी प्रतीत होते थे। चार हाथ दो सिरों को जकड़े हुए थे। दोनों की कमरें झुक गई थीं और चियेन-परिवार की दीवार पर आधा घण्टे के लगभग इन्द्र-धनुष की भाँति नीला प्रतिबिंब पड़ रहा था।

"चलो ठीक है ! हो गया बस !" दर्शकों ने शान्ति स्थापित कराने के उद्देश्य से कहा।

"अच्छा रहा, शाबाश !" दूसरों ने राय प्रकट की, पर बीच-बचाव के लिये या योद्धाओं की प्रशंसा के लिये उन्होंने ऐसा कहा या उन्हें भड़काने के लिये—यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।

लेकिन इन दो लड़ाकों में से किसी ने उन पर ध्यान नहीं

दिया। यदि आह् क्यू तीन क़दम आगे बढ़ता तो तरुण डी० उतना ही पीछे हट जाता और फिर वे लोग खड़े हो जाते। और अगर तरुण डी० तीन क़दम बढ़ता तो आह् क्यू पीछे हट जाता और वे फिर इसी तरह खड़े हो जाते। कोई आधा घण्टे बाद—ठीक समय का अंदाजा नहीं है, क्योंकि वीच्वांग में बजने वाले घण्टे-घड़ियां नहीं थीं, संभव है बीस ही मिनट लगे हों—जब उन दोनों के सिरों से भाप निकल रही थी और गालों पर पसीने की बूंदें उभर आई थीं तो आह् क्यू ने हाथ छोड़ दिये और दूसरे ही क्षण तरुण डी० के भी हाथ छूट पड़े। एक साथ ही वे खड़े हुए और साथ ही साथ पीछे हटे और भीड़ को चीरते हुए निकल गये।

"मैं तुझे फिर समझ लूँगा, कुतिया के बच्चे .. !" आह् क्यू ने मुड़कर कहा।

"तू कुतिया का बच्चा होगा साले, मैं भी तुझे भुगत लूँगा..... " तरुण डी० ने चिल्लाकर मुड़ते हुए कहा।

इस महान् संघर्ष का प्रत्यक्ष रूप से अंत तो हो गया पर न किसी की विजय हुई और न ही पराजय। यह भी न मालूम हो सका कि आया दर्शक भी इससे सन्तुष्ट हुए या नहीं हुए, क्योंकि उनमें से किसी ने भी इस पर अपनी राय प्रकट नहीं की। परन्तु इतना होने पर भी किसी व्यक्ति ने उसे काम के लिये नहीं बुलाया।

एक दिन जब कुछ गर्मी थी, और शान्तिदायक शीतल वायु के

झोंकों ने ग्रीष्म-ऋतु के आगमन का संदेश दिया तो आह क्यू को सर्दी लगने लगी। पर वह उसे सह सकता था, उसकी सबसे बड़ी चिन्ता तो थी भूखे पेट की। उसका रुई का गद्दा, नमदे का हैट और कमीज़ तो कभी की जा चुकी थीं और उनके बाद उसने अपना जाकेट भी बेच डाला था। अब बचा था तो उसका पतलून और जाहिर है कि वह पतलून तो बेचने से रहा। यह ठीक है कि उसके पास एक फटी-पुरानी धारीदार जाकेट थी पर सिवाय इसके कि उसे फाड़कर उनको जूते के तले बना ले, वे और किसी मसरफ की थीं भी नहीं। वह इस उम्मीद में दिन काट रहा था कि कहीं सड़क पर पड़े हुए ही कुछ पैसे मिल जायँ पर अब तक यह आशा सफल नहीं हुई थी; उसे कभी-कभी यह खयाल भी आता कि कहीं कुछ उसके कमरे के खण्डहर में ही कुछ पड़ा मिल जाय और इसी उम्मीद में उसने सारा कमरा छान मारा। पर हाय! कमरा तो बिलकुल ख़ाली पड़ा था। इसके बाद उसने भोजन की तलाश में निकलने की ठानी।

जैसे वह सड़क पर "रोटी की तलाश" में चला जा रहा था कि उसकी दृष्टि जानी-पहचानी शराब की दुकान और चिर-परिचित सिकी हुई डबल रोटी पर पड़ी, पर वह उन्हें छोड़ आगे बढ़ गया। न ही वह क्षण भर उनके लिये रुका और न ही उसे उनकी तनिक इच्छा हुई। उसे इन चीजों की तलाश नहीं थी और किस चीज़ की वास्तव में उसे तलाश थी, यह वह स्वयं भी नहीं जानता था।

वीच्वांग कोई बहुत बड़ा देहात नहीं था और कुछ ही देर में वह उसे पीछे छोड़ गया। देहात के बाहर के अधिकांश प्रदेश में धान के खेत लहलहा रहे थे। दूर तक जहां तक दृष्टि पहुँचती थी, हरा ही हरा दिखाई पड़ रहा था जिनमें चावलों की बालियाँ दिखाई दे रही थीं। उन विस्तृत और विशाल खेतों में खेत जोतने वाले किसान ऐसे प्रतीत हो रहे थे मानो गोल, काले, घुमाऊ पदार्थ इधर-उधर बिखरे पड़े हैं। लेकिन ग्राम्य-जीवन के आनन्द में आह् क्यू को कोई रुचि न थी और इसलिये वह चुपचाप आगे बढ़ता गया, क्योंकि वह जानता था कि यह मार्ग उसके "रोटी की तलाश" के रास्ते से कहीं दूर था। आख़िरकार वह "आत्म-सुधार आश्रम" के अहाते में पहुँच गया।

यह आश्रम भी धान के खेतों से घिरा हुआ था। उसकी सफेद दीवारें स्वच्छ हरे रंग में बहुत ही प्रमुख दृष्टिगोचर हो रही थीं और मिट्टी की बनी हुई नीची दीवार के पीछे वनास्पति-बाग़ था। आह् क्यू क्षण भर के लिये झिझका और उसने अपने चारों ओर देखा कि कहीं कोई है तो नहीं और जब कोई न दीख पड़ा तो वह एक विषैले पौधे की लता को पकड़े नीची दीवार पर चढ़ने लगा। मिट्टी की दीवार हिलने लगी और आह् क्यू भय के मारे काँपने लगा, लेकिन एक शहतूत के वृक्ष की शाखा पकड़ कर वह किसी न किसी तरह अन्दर जा कूदा। अन्दर की ओर वनास्पति का साम्राज्य था, लेकिन पीली मदिरा या सिकी हुई डबल रोटी और किसी खाने की चीज़ का तो वहां नाम भी नहीं था। पश्चिमी

दीवार के पास तो बाँसों के झुण्ड थे, जिनमें बहुत से बॉस अभी अंकुर के रूप में ही थे, दुर्भाग्यवश ये भी पके हुए न थे। वहां एक अंगूर का पौधा भी था, जो बहुत पहले बोया गया था और छोटी-छोटी बंदगोभी बड़ी सख्त लग रही थीं।

आह क्यू को उस समय उतना ही क्रोध आया, जितना किसी विद्यार्थी को, जो फेल हो जाता है, आता होगा। वह बग़ीचे के फाटक की ओर जा रहा था कि यकायक वह हर्ष से उछल पड़ा—उसे सामने ही कुछ शलजम के पौधे दीख पड़े। वह झुक गया और उन्हें तोड़ने लगा और इतने में दरवाज़े के पीछे से एक गोल चेहरा प्रकट हुआ और उसी दम अदृश्य हो गया। और यह थी भिक्षुणी। अब तो आह क्यू को नन्हीं भिक्षुणियों जैसी स्त्रियों से बहुत घृणा हो गई थी, लेकिन ऐसे भी अवसर आ जाते हैं, जब "विवेक-बुद्धि ही पराक्रम सिद्ध हो जाती है" इसलिये उसने झटपट चार शलजम तोड़े, पत्ते तोड़ कर फेंक दिये और उन्हें अपने जाकेट में मोड़ के रख लिया। इसी असना में बूढ़ी भिक्षुणी आ ही तो पहुँची।

"भगवान् बुद्ध हमारी रक्षा करें, आह क्यू! तुमने हमारे बग़ीचे में कूद कर ये शलजम क्यों चुराये ... ? अरे रे बेटा, यह कितनी बुरी बात है! बेटा, बुद्ध भगवान् हमारी रक्षा करें...... !"

"कब कूदा हूँ मैं तुम्हारे बाग़ में, और कब चुराये हैं मैंने तुम्हारे शलजम ?" आह क्यू ने उसकी ओर घूरते हुए कहा और वह वापस चल दी।

"अभी—नहीं चुराये तुमने ?" बूढ़ी भिक्षुणी ने जाकेट की तह की ओर इशारा करते हुए पूछा।

"क्या ये तुम्हारे हैं ? क्या साबित कर सकती हो ये तुम्हारे ही हैं ? तुम. ... ।"

अपने वाक्य को अधूरा ही छोड़कर आह क्यू वहां से सिर पर पैर रख कर भागा और एक भारी, मोटा काला कुत्ता उसके पीछे लपका। यह कुत्ता पहले सामने के फाटक पर बैठाया गया था और यह तो अचरज की बात ही है कि वह पिछले बग़ीचे में कैसे पहुँच गया। काले कुत्ते ने उसका ज़ोरों से पीछा किया और भौंकता चला गया कि एक जगह पर आह क्यू की टांग में काटने ही वाला था कि एक शलजम बड़े मौके से उसके जाकेट में से निकल पड़ा और कुत्ता सक्ते में आ गया और क्षण भर के लिये रुक गया। इतने में ही आह क्यू शहतूत के पेड़ पर चढ़ गया। वहां से दीवार फाँदी, और शलजम वग़ैरह सब पाठशाला के बाहर गिरा कर खुद भी बाहर। काला कुत्ता अब भी शहतूत के वृक्ष के पास खड़ा भौंक रहा था और वृद्धा भिक्षुणी प्रार्थना कर रही थी।

कहीं बूढ़ी भिक्षुणी फिर कुत्ते को बाहर निकाल कर पीछे न लगा दे, इस डर से आह क्यू ने अपने शलजम जमा किये और वह भागा। रास्ते में उसने कुछ पत्थर चुन लिये, लेकिन काला

कुत्ता फिर कहीं न दीख पड़ा। आह क्यू ने पत्थर फेंक दिये और आगे बढ़ गया। खाते-खाते वह चलता रहा और मन में सोचने लगा, "यहां कुछ नहीं मिलेगा; अच्छा हो मैं शहर चला जाऊँ...... !"

जब उसने तीसरा शलजम खा लिया तो शहर जाने का उसका संकल्प दृढ़ हो गया।

: ६ :

पुनर्जागरण से पतन की ओर

अगली बार शरद्-पूर्णिमा के शीघ्र बाद ही आह क्यू फिर वीच्वांग को लौटा। आह क्यू की वापसी को सुनकर हर कोई विस्मित हुआ और सब यही सोचने लगे कि आख़िर यह इतने दिनों रहा कहाँ। पहले कभी जब आह क्यू शहर जाता था तो लोगों को बड़े जोश व खरोश से पहले ही सूचना दे देता था, लेकिन चूंकि इस बार उसने ऐसा नहीं किया, इसलिये किसी को उसके जाने का पता न चला। संभव है उसने प्राचीन मंदिर के अधिकारी को बता दिया हो, लेकिन वीच्वांग की परिपाटी के अनुसार तो जब मि० चाओ, मि० चियेन या सरकारी पद की परीक्षा में सफल हुआ उम्मीदवार यदि शहर जाते तो उन्हें ही महत्त्व दिया जाता था। यहां तक कि नकली विदेशी शैतान के जाने की भी कोई चर्चा नहीं हुई, आह क्यू का तो खैर होता ही क्या! इससे साफ प्रकट होता है कि उस बूढ़े व्यक्ति ने यह ख़बर क्यों नहीं फैलाई जिसका परिणाम यह हुआ कि देहातियों के पास उसे जानने का और कोई साधन शेष न रहा।

लेकिन इस बार आह क्यू की वापसी पहले से भिन्न थी और

असल में उस पर आश्चर्य होना भी स्वाभाविक ही था। दिन ढल चुका था और वातावरण पर अंधकार छा रहा था। जब वह आँखें झपकाता हुआ शराबखाने के दरवाज़े पर पहुँचा। काउण्टर तक गया, कमरपट्टी में से कुछ चांदी और तांबे के सिक्के निकाले और उन्हें काउण्टर की ओर लुढ़का दिया और कहा, "नक़द ले नकद ! ला शराब !" वह नया धारीदार जाकेट पहने हुए था और एक बड़ा बटुआ उसकी कमर में बँधा हुआ था, जिसके असाधारण बोझ से उसकी कमरपट्टी बहुत झुक गई थी। वीच्वांग में यह रिवाज प्रचलित था कि जब कोई व्यक्ति कुछ असाधारणता लिये हुए आये तो उससे धृष्टता से नहीं बल्कि सम्मान से मिलना चाहिये और अब जबकि वे सब जानते थे कि यह आह क्यू ही था, परन्तु फिर भी फटी-पुरानी जाकेट वाले आह क्यू से वह कहीं भिन्न लग रहा था। प्राचीन काल के लोग कहते थे, "कोई विद्यार्थी जब तीन दिन बाहर रह आता है तो उसे नई नज़रों से देखना चाहिये" इसलिये बैरा, होटल-मालिक, ग्राहक और उधर से गुज़रने वाले लोग आदि ने स्वाभाविक रूप से ही उसकी ओर देखकर एक प्रकार के आदर-मिश्रित संदेह के भाव प्रकट किये। होटल-मालिक ने सबसे पहले अपना सिर हिलाया और कहा—

"कहो, आह क्यू तुम आ गये !"

"हाँ, मैं वापस आ गया।"

"तुम तो पैसा कमा लाये हो... ..पर......कहाँ... ..?"

"शहर चला गया था।"

अगले दिन यह खबर सारे वीच्वांग में फैल गई। हरेक कोई आह् क्यू की सफलता का रहस्य जानना चाहता था। उसके कमाये हुए धन के बारे में मालूम करना चाहता था और साथ ही यह पूछना चाहता था कि उसे वह नई धारीदार जाकेट कहाँ से मिल गई। इसलिये शराबखाने, चाय की होटल और मंदिर की ओरी में देहातियों ने इस खबर की सत्यता जानने की चेष्टा की। परिणाम-स्वरूप वे आह् क्यू के साथ एक नये सम्मान सहित व्यवहार करने लगे।

आह् क्यू के कथनानुसार तो वह किसी सफल प्रान्तीय उम्मीदवार के यहाँ नौकर हो गया था। किस्से के इस अंश को सुनकर लोग भयभीत हो गये। उस सफल प्रान्तीय उम्मीदवार का नाम पाई था, लेकिन चूँकि सारे शहर में केवल वही एक सफल प्रान्तीय उम्मीदवार था, इसलिये उसके उपनाम की कोई आवश्यकता न थी। अतः जब कभी भी कोई सफल प्रान्तीय उम्मीदवार का ज़िक्र करता, उससे लोग इसी व्यक्ति को समझते थे और यह वीच्वांग में ही नहीं बल्कि आस-पास तीस मील के अन्तर तक हर जगह यही समझा जाता था मानो उस उम्मीदवार का नाम ही मि० सफल प्रान्तीय उम्मीदवार पड़ गया हो। इस ओहदे वाले व्यक्ति के यहां काम करने वाले का आदर करना स्वाभाविक ही था। परन्तु आह् क्यू का कहना था कि वह वहां अब काम करना नहीं चाहता, क्योंकि यह सफल प्रान्तीय उम्मीदवार तो "कुतिया के बच्चे" से भी बढ़कर था। जिन लोगों ने किस्से

का यह भाग सुना, उन्होंने खुशी की सॉस ली, क्योंकि इससे जाहिर होता था कि आह् क्यू वास्तव में सफल प्रान्तीय उम्मीदवार के घर काम करने के योग्य नहीं है और फिर काम न करने की बात तो दयनीय है ही।

आह् क्यू के कथनानुसार वह इसलिये लौट आया था कि वह शहरियों के व्यवहार से सन्तुष्ट न था, क्योंकि वे लम्बी बेंच को सीधी बेंच कहते थे और भुनी हुई मछली में प्याज़ के महीन टुकड़े छिड़का करते थे और इन सबके अलावा शहर में एक न्यूनता थी जिसका उसे हाल ही में ज्ञान हुआ था, वह यह कि वहां की स्त्रियां चलते समय अच्छी तरह मटक कर नहीं चलती हैं। फिर भी, शहर की कुछ खूबियां भी थीं, मसलन जबकि वीच्वांग के देहाती ३२ बॉसों से खेलते थे और केवल नकली विदेशी शैतान ही "माह् जोंग" खेल सकता था, तब दूसरी ओर शहर में गली का बच्चा-बच्चा खेल में पण्डित था। नकली विदेशी शैतान को बस इन ज़रा-ज़रा से पिल्लों के सामने बैठा दो और वह उनके सामने "भीगी बिल्ली बन जायगा।" कथा के इस अंश ने श्रोताजन को शर्मिन्दा कर दिया।

"तुमने क्या कभी फॉसी लगते देखी है ?" आह् क्यू ने पूछा। "आह, क्या मज़ेदार चीज़ होती है वह .... जब वे लोग क्रांतिकारियों को फॉसी के तख्ते पर झुलाते हैं. . . .वाह, क्या दृश्य होता है ! बड़ा सुन्दर......" उसने अपना सिर हिलाया और उसका थूक ठीक सामने बैठे हुए चाओ स्जू-चेन के मुँह पर

पड़ा। कहानी के इस भाग को सुनकर लोग लरज़ने लगे। फिर आह क्यू ने अचानक अपने आस-पास नज़र दौड़ाई और दाहिना हाथ उठा कर गलमुच्छे वांग की गरदन पर दे मारा, जो आगे को सिर किये बड़ी निमग्नता से सुन रहा था और यकायक चीख पड़ा, "मार डालो !"

गलमुच्छा वांग अचंभित हो गया और उसी क्षण बिजली की भांति या मानो आग चकमक पर लग गई हो, उसने अपना सिर पीछे को किया और शेष सब समीप खड़े लोग आनन्ददायक भय से काँप उठे। उसके बाद गलमुच्छा वांग कई दिन तक परेशान फिरता रहा और आह क्यू के पास फिर से जाने का उसे साहस न हुआ और दूसरे तो ख़ैर जैसे थे वैसे ही चलते रहे।

यद्यपि हम यह नहीं कह सकते कि वीच्वांग के निवासियों की नज़र में आह क्यू का क्या मूल्य था, पर इस समय तो वह मि० चाओ से बढ़ कर था। अशुद्धि के ख़तरे से दूर होकर हम निसंदेह यह कह सकते हैं कि आह क्यू और मि० चाओ समानता से आदर प्राप्त कर रहे थे।

शीघ्र ही आह क्यू की ख्याति वीच्वांग के स्त्री-समाज में भी फैल गई। हालांकि वीच्वांग में केवल दो ही परिवार ऐसे अभिमानी थे—एक चियेन का, दूसरा चाओ का और शेष का ९/१० भाग ग़रीब था। फिर भी जनानखाने, जनानखाने ही होते हैं और आह क्यू की ख्याति का वहां पहुँचना चमत्कार से कुछ कम नहीं है। जब स्त्रियाँ मिलतीं तो एक-दूसरे से कहतीं, "श्रीमती त्सू ने

आह क्यू से एक रेशमी घघरी ख़रीदी है और गो वह पुरानी थी, फिर भी सिर्फ ६० सेण्ट में मिली। और चाओ पाई येन की माँ (जिसकी अभी तस्दीक़ कराना है, क्योंकि कुछ का कहना है कि वह चाओ स्यू-चेन की माँ थी) ने भी बच्चों के लिये विलायती दरेस का गुलाबी रंग का टुकड़ा खरीदा था, जिसकी उन्होंने ३०० कापर क़ीमत दी थी और उन्हें ८ प्रतिशत कमीशन मिला था।

अब तो वे सब ही आह क्यू से मिलने की इच्छुक थीं और जिनके पास कोई रेशमी घघरी नहीं थी या विलायती दरेस चाहती थीं, वे उसी से खरीदना चाहती थीं। इस प्रकार अब वे आह क्यू से आँख बचाने के बजाय जहां से भी वह गुज़रता, उसका पीछा करने लगतीं और उसे रुकने के लिये कहती जातीं। कहतीं—

"आह क्यू, तुम्हारे पास और भी रेशमी घघरियाँ हैं? नहीं? हमें विलायती दरेस भी चाहिये—है क्या तुम्हारे पास कोई ?"

बाद में यह खबर दरिद्र घरों से धनी घरों में पहुँची, क्योंकि श्रीमती त्सू अपनी रेशमी घघरी से इतनी प्रसन्न हुई कि वह उसे श्रीमती चाओ के पास दिखाने ले गई और श्रीमती चाओ ने मि० चाओ से उसकी बहुत प्रशंसा की।

मि० चाओ ने इसका ज़िक्र शाम के खाने पर अपने पुत्र सफल प्रान्तीय उम्मीदवार से किया और यह शंका प्रकट की कि आह क्यू में कुछ अद्भुत व आश्चर्यजनक परिवर्तन आ गया है,

अतः हमें अपनी खिड़कियों और दरवाज़ों की ओर से अधिक सतर्क रहना चाहिये। लेकिन उन्हें मालूम नहीं था कि आह् क्यू के पास कोई चीज़ बची भी है या नहीं और उन्हें ख़्याल आया कि संभव है अभी भी उसके पास कोई अच्छी चीज़ हो। श्रीमती चाओ को उसी वक्त एक अच्छे सस्ते फर के वास्कट की ज़रूरत आ पड़ी। इसलिये पारिवारिक सभा में यह निश्चय किया गया कि श्रीमती त्सू से कहा जाय कि वह आह् क्यू को फ़ौरन ढूँढ लायें और उस रात एक और अपवाद की अनुमति दी गई—रसोई में कंदील जलाया गया।

तेल काफी मात्रा में जल चुका था, पर आह् क्यू अब तक न पलटा। समूचा चाओ परिवार बेचैनी से उसकी प्रतीक्षा करते-करते ऊँघने लगा था। कुछ लोग आह् क्यू के सनकीपन पर नाक-भौं सिकोड़ रहे थे और कुछ लोग श्रीमती त्सू को कोस रहे थे कि उन्होंने कोई कोशिश ही न की होगी। श्रीमती चाओ को शंका थी कि कहीं ऐसा न हो कि विगत बसंत-ऋतु में जो उससे शर्तें तै हुई थीं, उनका स्मरण करके आह् क्यू आये ही नहीं। परन्तु मि० चाओ को उस ओर से कोई शंका नहीं थी और न ही चिन्ता, क्योंकि उन्होंने कहा—"इस बार तो मैंने उसे बुलाया है।" और वास्तव में मि० चाओ का अनुमान ठीक ही निकला जब अन्त में आह् क्यू श्रीमती त्सू के साथ आ पहुँचा।

"यह तो कहते हैं इनके पास कुछ बचा ही नहीं और जब मैंने इनसे कहा अच्छा यह बात खुद चल कर उनसे कह दो तब

भी नहीं माने। मैंने कहा...... ।" श्रीमती त्सू ने हाँफते हुए कहा।

"साहब !" आह क्यू ने किंचित मुस्कान के साथ कहा और ओरी के नीचे आकर रुक गया।

"तुम शहर जाकर बड़े धनवान बन गये हो। हमने सुना है, क्यों आह क्यू ?" मि० चाओ ने कहा और उसे ग़ौर से देखने के लिये उसके समीप गये। "बड़ी अच्छी बात है। अब......मैंने सुना है तुम्हारे पास कुछ पुरानी चीज़े हैं......जाओ उन सबको यहां ले आओ ताकि हम भी उन्हें देख लें .....। इसलिये कि मुझे भी उनमें से कुछ की ज़रूरत है. .... ।"

"मैंने श्रीमती त्सू को बता दिया है—मेरे पास अब कुछ नहीं बचा है।"

"कुछ भी नहीं बचा ?" मि० चाओ के मुख से अनायास निराशा भरे शब्द निकल पड़े। "इतने जल्दी कैसे बिक गये वे ?"

"वे मेरे एक मित्र के थे और कोई ज्यादा तादाद में थे नहीं। लोगों ने कुछ खरीद लिये. . .. ।"

"फिर भी कुछ तो बचा ही होगा।"

"अब सिर्फ दरवाज़े का एक पर्दा बचा है।"

"तो जाओ वह पर्दा ही दिखाने के लिये ले आओ।" श्रीमती चाओ ने झट से कहा।

"अच्छा तो ऐसा करो उन्हें कल ले आना, समझे !" मि० चाओ ने निरुत्साह होकर कहा।

"अब जब कभी तुम्हारे पास कोई चीज़ आये तो हमें पहले

दिखा दिया करना अच्छा... .. ।"

"हम तुम्हें दूसरों से कम दाम हरगिज़ न देंगे।" सफल प्रान्तीय उम्मीदवार ने कहा। उनकी पत्नी ने झट से आह् क्यू की प्रतिक्रिया जानने के लिये दृष्टि दौड़ाई।

"मुझे फर की एक वास्कट की ज़रूरत है।" श्रीमती चाओ ने कहा।

यद्यपि आह् क्यू ने उनकी सब बातों पर 'हॉ' कह दिया, परन्तु वह इतनी लापरवाही के साथ वहां से उठा कि उन्हें पता न चल सका उसने वास्तव में बातें मानी भी हैं या ख्वामख़ाह 'हॉ' कह दिया है। इससे मि० चाओ को इतनी निराशा, खिन्नता और परेशानी हुई कि उनकी उबासी बंद हो गई। सफल उम्मीदवार भी आह् क्यू के रवैये से सन्तुष्ट नहीं हुआ और बोला, "इस जैसे हरामियों से लोगों को चौकन्ना रहना चाहिये। बेहतर तो यह है कि अमीन से कह दिया जाय कि इसे वीच्वांग में न रहने दिया जाय।"

लेकिन मि० चाओ इस प्रकार की भर्त्सना से सहमत नहीं थे। उनका विचार था कि ऐसे कठोर वचन उसे हमारी ओर से द्वेष-पूर्ण बना देंगे और उसका जो व्यापार है उसमें तो शायद यही सिद्धान्त लागू होगा कि "अपने पांव आप कुल्हाड़ी न मारी जाय"; इसलिये हमें इसके प्रति चौकस रहना चाहिये कि उसके कृत्यों से न तो देहात को कोई त्रास पहुँचे और इसलिये उन्हें चाहिये कि रात के समय ज़रा होश्यार रहें। इस पैतृक आदेश से सफल

उम्मीदवार बहुत प्रभावित हुआ और आह क्यू को निकाल बाहर करने का अपना सुझाव फौरन वापस लेते हुए श्रीमती त्सू से कहा कि मैंने जो कुछ कहा है उसे कहीं किसी मूल्य पर भी न दुहरायें।

फिर भी अगले रोज़ जब श्रीमती त्सू अपनी नीली घघरी को काला रंगवाने के लिये गईं तो उन्होंने आह क्यू के बारे में कहे गये इन गंदे वाक्यों को दुहराया, पर सफल उम्मीदवार ने जो उसे निकालने के लिये कहा था, वह उन्होंने उसी के शब्दों में व्यक्त नहीं किया। पर तिस पर भी यह आह क्यू की प्रतिष्ठा के लिये बहुत बड़ा आघात था। अव्वल तो अमीन उसके द्वार पर आया और दरवाज़े का पर्दा उठा ले गया और यद्यपि आह क्यू ने विरोध किया और कहा कि श्रीमती चाओ इसे देखना चाहती हैं, पर अमीन ने उसे नहीं लौटाया और उस पर भी अपना मासिक उत्कोच मांगने लगा। दूसरे यह कि देहातियों के अन्दर उसके लिये जो सम्मान पैदा हो गया था वह भी अचानक बदल गया और जो भी उन्होंने उसे चिढ़ाया नहीं फिर भी उससे किनारा काटने का भरसक प्रयत्न किया और यह बात उसके उस "मार डालो" बात से अधिक भयभीत करने वाली थी बल्कि इसकी तुलना मृतात्माओं की आदिम कथाओं "चार कदम दूर रहो" से हो सकती थी।

फिर भी कुछ निठल्ले ऐसे थे जो मामले की जड़ तक पहुँचना चाहते थे और वे आह क्यू से बड़ी सावधानी के साथ यह मालूम

करने भी गये और आह् क्यू ने कोई बात भी छिपाने की कोशिश नहीं की, बल्कि बड़े गर्व के साथ अपने अनुभव उनके सम्मुख रख दिये। इस वर्णन से वे समझ गये कि आह् क्यू महज़ एक चोर था। वह न केवल दीवारें फाँदने में भी असफल रहा बल्कि खुले स्थानों में जाने से भी घबराता था, सिर्फ दरवाज़ों पर खड़ा चोरी का माल वसूल करता रहता था।

एक रात उसने एक गठरी ली और उसका सरदार फिर अन्दर गया और जब उसने अन्दर से कुछ चीख़-पुकार सुनी तो हवा हो गया। उसी रात वह उस शहर से भाग निकला और वीच्वांग आ गया। इसके बाद अपने इस काम पर जाने का उसे दुःसाहस न हुआ और ज़ाहिर है कि इस किस्से से तो आह् क्यू को और भी क्षति पहुँच सकती थी, क्योंकि देहाती उससे "काफी सावधान व चौकन्ने रह रहे थे" और वे उससे शत्रुता नहीं मोल लेना चाहते थे, क्योंकि कौन कह सकता था यह चोर अब कभी चोरी नहीं करेगा? परन्तु अब उन्हें विश्वास हो गया कि उस जैसे क्षुद्र और हेय व्यक्ति से डरने की कोई आवश्यकता नहीं है।

: ७ :

क्रान्ति

सम्राट् श्वॉ तुङ के शासन काल के तीसरे वर्ष में नवमी के चौदहवें दिन जबकि आह क्यू ने अपना बटुआ चाओ पाई येन को बेचा था, मध्य रात्रि के समय जबकि तीसरी घड़ी ने चौथा घण्टा बजाया था, बड़े काले पाल वाली एक विशाल नाव चाओ-परिवार के चबूतरे पर आकर रुकी। यह नाव अँधेरे में तैरती रही और चूंकि देहाती लोग गहरी नींद सो रहे थे, इसलिये उन्हें इसका कुछ पता न चला। पर पौ फटने के समय वह फिर वहां से चल दी और उस समय बहुत से लोगों ने उसे देखा भी। जाँच-पड़ताल से पता चला कि यह नाव असल में सफल प्रान्तीय उम्मीदवार की थी।

इस नाव ने वीच्वांग के वातावरण में अपार व्याकुलता भर दी और मध्याह्न के पहले तक लोगों के हृदय तेज़ गति से धड़कते रहे। नाव की ख़बर के बारे में चाओ परिवार बहुत ख़ामोश रहा, लेकिन चाय की दूकान और शराबखाने की गप्पबाज़ी के अनुसार क्रान्तिकारी शहर में दाखिल होने वाले थे और सफल प्रान्तीय उम्मीदवार आश्रय लेने गाँव में आया था। केवल श्रीमती त्सू ही ऐसी थीं जो इस अफ़वाह से सहमत नहीं थीं, उनका विचार था

कि केवल थोड़े से ही लोहे के सन्दूक थे जिन्हें सफल प्रान्तीय उम्मीदवार वीच्वांग में दाखिल करना चाहता था, लेकिन मि० चाओ ने उन्हें वापस कर दिया था। दर असल चाओ परिवार में सफल प्रान्तीय उम्मीदवार और सफल ज़िला उम्मीदवार में नहीं बनती थी। इसलिये "विपत्ति" के समय उनका मित्रतापूर्ण व्यवहार एक असंभावना थी; साथ ही श्रीमती त्सू चाओ परिवार की पड़ौसिन थीं और वहाँ क्या हो रहा है, इसे बेहतर तरीके से जानती थीं।

फिर यह अफवाह उड़ी कि यद्यपि विद्यार्थी खुद वहाँ नहीं पहुँचा था, उसने चाओ परिवार से अपना दूर का सम्बन्ध बताते हुए एक लम्बा ख़त लिखा और मि० चाओ ने काफी सोच-विचार के बाद यह निश्चय किया कि हो सकता है यह नाता सही हो और फिर इससे उन्हें नुकसान भी क्या था, इसलिये उसने वे सन्दूक बतौर अमानत रख लिये, जिन्हें अब उन्होंने अपनी पत्नी के बिस्तरे के नीचे छिपा दिया था और क्रान्तिकारियों के सम्बन्ध में लोगों का ख्याल था कि वे उसी रात श्वेत शिरस्त्राण और श्वेत कवच पहने जो मिंग वंश के अन्तिम सम्राट् त्सुंग चेन के अन्त के प्रतीक थे, उसी रात शहर में घुस आये थे।

आह क्यू ने क्रान्तिकारियों के बारे में बहुत दिनों से सुन रखा था और इस साल स्वयं अपनी आँखों से उसने क्रान्तिकारियों के सिर कटते हुए देखे थे। परन्तु उसने सोचा कि क्रान्तिकारी विद्रोह कर रहे थे और विद्रोह से तो उसका काम बिगड़ जायगा, इसलिये

उसने हमेशा "उनसे घृणा की थी और उनसे किसी प्रकार का सम्बन्ध न रखा था।" कौन कल्पना कर सकता था कि वे इस प्रकार सफल प्रान्तीय उम्मीदवार को भयभीत कर देंगे जो कि आस-पास के इलाके में चालीस मील तक मशहूर है। फलस्वरूप आह क्यू इसका विचार करके "खुशी से फूला न समाया" और फिर देहातियों के डर और घबराहट से तो वह और भी प्रसन्न हुआ।

"क्रान्ति कोई बुरी चीज़ नहीं है", आह क्यू ने सोचा। "मारो इन तमाम हरामज़ादों को. ...ये सब नीच हैं, घृणित हैं!..... मैं खुद भी इन क्रान्तिकारियों से जा मिलूंगा।"

आह क्यू को आजकल बड़ी तंगी थी और शायद वह बहुत असन्तुष्ट भी था और फिर उस पर उसने यह किया कि दोपहर के समय खाली पेट पर शराब के दो प्याले चढ़ा लिये, जिससे हालत और बिगड़ गई। फलस्वरूप उसे समय से पहले ही नशा चढ़ गया और जब वह मन ही मन कुछ सोचता हुआ चला जा रहा था तो उसे महसूस हुआ मानो वह हवा में उड़ रहा हो। अचानक कुछ विचित्र ढंग से उसने महसूस किया मानो वही खुद क्रान्तिकारियों का गिरोह है और वीच्वांग के तमाम लोग उसके बन्दी हैं। खुशी से पागल हो वह अपने पर नियन्त्रण न कर सका और ज़ोर से चिल्लाया—

"विद्रोह! विद्रोह!"

सारा गाँव भयभीत हो उसकी ओर देख रहा है। इस प्रकार

की दयनीय आकृतियाँ आह क्यू ने पहले कभी न देखी थीं और इन नज़रों ने उसे वही चैन पहुँचाया, जो गर्मी के दिनों में बर्फ़ का पानी पहुँचाता है। इस प्रकार वह और भी उल्लसित हो आगे बढ़ता गया और चीखता रहा—

"ठीक है..... जो कुछ मुझे लेना है ले लूंगा। जिसे चाहूँगा उसे अपना लूंगा।"

"त्रा ला, त्रा ला!"

"मुझे खेद है मैंने भूल से अपने मित्र चेंग को नशे में मार डाला।"

"मुझे खेद है मैंने मार डाला......याह, याह, याह।"

"त्रा ला, त्रा ला, तुम ती तुम तुम!"

"मैं मारता हूँ तुझे लोहे की गदा से!"

मि० चाओ और उनका पुत्र अपने फाटक पर खड़े क्रान्ति पर बातें कर रहे थे। लेकिन आह क्यू ने जाते हुए उन्हें देखा नहीं वह अपना सिर ऊपर किये गाता हुआ जा रहा था, "त्रा ला ला, तुम ती तुम।"

"क्यू बाबा!" मि० चाओ ने धीमी और कायरतापूर्ण आवाज़ में उसे सलाम किया।

"त्रा ला!" आह क्यू गाता रहा, वह समझ न सका कि आखिर उसके नाम के साथ ये शब्द "बाबा" कैसे जुड़ गये और यह सोचते हुए कि उसने ग़लत सुन लिया, किसी ने किसी और को पुकारा होगा, इसलिये वह तो अपने यही गाता हुआ आगे

बढ़ा, "आ ला ला, तुम ती तुम !"

"क्यू बाबा !"

"मुझे खेद है मैंने उसे मार डाला ... ।"

"आह क्यू !" सफल उम्मीदवार ने सोचा कि इसके नाम से ही पुकारो तब बात बनेगी।

और तब कहीं जाकर आह क्यू रुका "हाँ ?" उसने अपना मुँह दूसरी ओर करके कहा।

"क्यू बाबा......अब... . " पर मि० चाओ को फिर शब्द न मिले। "क्या अब तुम पैसे बना रहे हो ?"

"पैसे बना रहा हूँ ? हाँ, हाँ बिल्कुल ! मैं तो जो भी चाहिये ले लेता हूँ......।"

"आह क्यू बाबा, हम जैसे अपने ग़रीब दोस्तों का भी ख़याल रखना .. . " चाओ पाई-येन ने डरते हुए कहा मानो क्रान्तिकारियों का रवैया जानना चाहते हों।

"ग़रीब दोस्त ? नहीं, नहीं, आप लोग तो मुझ से कहीं अधिक धनवान हैं।" आह क्यू ने कहा और आगे बढ़ गया।

वे दोनों वहीं निराश और चुप खड़े रहे, फिर मि० चाओ और उनका बेटा अपने घर लौट गये और वहाँ दिये-बत्ती के वक्त तक इसी प्रश्न पर बहस करते रहे। जब चाओ पाई-येन घर गया तो उसने अपनी कमर में से बटुआ निकाल कर अपनी पत्नी को दे दिया कि वह उसे किसी सन्दूक के नीचे छिपा दे।

कुछ देर तक तो आह क्यू को लगा वह हवा में उड़ रहा है,

लेकिन जब वह प्राचीन मंदिर तक पहुँचा तो उसका नशा हरन हो चुका था। उस रात मंदिर का बूढ़ा पुजारी भी आशा के विपरीत उससे खुश-सा लगा और उसने उसे चाय भी पिलाई, तब आह क्यू ने उससे दो केक माँगे और जब यह सब खा चुका तो उसने चार औंस की मोमबत्ती और शमादान माँगे। उसने बत्ती जलाई और अपने छोटे-से कमरे में लेट गया। उस समय उसने वह ताज़गी और खुशी महसूस की कि क्या कहने! बत्ती की रोशनी भड़की और फिर लैम्प-उत्सव की तरह टिमटिमाने लगा और उधर उसकी कल्पना ने उड़ान लगाई।

"बग़ावत? तब तो बड़ा मज़ा आयगा......क्रान्तिकारियों का एक गिरोह श्वेत शिरस्त्राण और श्वेत कवच पहने, हाथों में तलवारें, भाले, बम, विदेशी बन्दूकें, तेज़ दुधारे छुरे और पैने बल्लम लिये आयगा। वे प्राचीन मंदिर में आयेंगे और पुकारेंगे, "आह क्यू, आओ हमारे साथ, चलो न!" और फिर मैं उनके साथ चल पड़ूँगा ....।

"तब सारे देहाती हास्यजनक स्थिति में होंगे, नतमस्तक हो मुझसे विनती करेंगे, "आह क्यू, हमारी जानें बख्श दो।" पर उनकी सुनेगा कौन! पहले आदमी जिनकी मौत होगी, वे होंगे तरुण डी० और मि० चाओ, फिर सफल ज़िला-उम्मीदवार और नकली विदेशी शैतान..... लेकिन शायद मैं कुछेक को माफ भी कर दूँ। पहले मैं गलमुच्छे वांग को छोड़ देता, पर नहीं अब वह भी नहीं बच सकता......।

"... मैं सीधा अन्दर जाऊँगा और सन्दूक खोलूँगा—चाँदी के पिण्ड, विलायती सिक्के, विलायती दरेस की जाकटें.... पहले तो मैं सफल ज़िला-उम्मीदवार की पत्नी का निंगपो बिस्तर मंदिर में ले जाऊँगा और चियेन-परिवार की मेज़-कुर्सियाँ भी हटा दूँगा—या नहीं तो चाओ-परिवार की ही चलेंगी। मैं तो हाथ भी नहीं लगाऊँगा, बस तरुण डी० से कह दूँगा वह सारा काम मेरे इशारे पर कर डालेगा और अगर अकड़ा तो उसके एक झापड़ रसीद करूँगा......

"चाओ स्जू-चेन की छोटी बहन तो बड़ी बदसूरत है। कुछ ही दिनों में श्रीमती त्सू की बेटी इस क़ाबिल हो जायगी। नकली विदेशी शैतान की बीवी तो किसी भी बिना चोटी वाले के साथ सो जाती है, हा! वह नहीं चलेगी। सफल ज़िला उम्मीदवार की पत्नी की भवों पर दाग़ हैं..... अमाह वू तो बहुत दिनों से मिली भी नहीं है, पता नहीं वह कहाँ है—पर तरस आता है बेचारी पर, उसके पाँव कितने बड़े-बड़े हैं!"

किसी सन्तोषजनक निष्कर्ष पर पहुँचने के पहले ही कहीं किसी खुर्राटे की आवाज़ आई। चार औंस वज़न वाली बत्ती अभी आधा इंच ही जली होगी और उसकी टिमटिमाती हुई लाल रोशनी में उसका खुला मुँह चमक उठा।

"ओह, हो!" आह क्यू अचानक चीख पड़ा, उसने अपने हाथ उठाये और घबराहट में इधर-उधर देखने लगा, पर जब उसकी चार औंस की बत्ती पर निगाह पड़ी तो वह फिर लेट गया

और उसकी फिर आँख लग गई।

अगले दिन सुबह वह बड़ी देर से उठा और जब बाहर सड़क पर निकला तो सब कुछ वैसा ही था। वह अब भी भूखा था और हालाँकि उसने अपना सिर खुजाया भी, पर कुछ सूझ न पड़ा। फिर एक दम उसे ख्याल आया और वह धीरे-धीरे चलने लगा और चलता रहा, फिर या तो जाने-बूझे या अकस्मात् ही वह "आत्म-सुधार आश्रम" में जा पहुँचा।

आश्रम अपनी श्वेत दीवारों और चमकीले काले फाटक में उतना ही शान्तिपूर्ण दिखाई देता था, जितना कि उस बसंत के ज़माने में। क्षण भर के विचार के बाद उसने दरवाज़ा खटखटाया और अन्दर से एक कुत्ता भौंकने लगा। उसने जल्दी से ईंटों के कुछ टुकड़े चुन लिये और अब के और ज़ोर से दस्तक देने पहुँचा और तब तक खटखटाए गया, जब तक कि उस काले दरवाज़े पर छोटे-छोटे कई छेद न हो गये और अन्त में किसी के फाटक खोलने को आने की आवाज़ उसे आई।

आह क्यू ने झट से अपने ईंटों के टुकड़े तैयार किये और टाँगें सीधी करके खड़ा हो गया, मानो काले कुत्ते से युद्ध करने के लिये तत्पर हो। परन्तु शाला का दरवाज़ा ज़रा-सा खुला और उसमें से कोई काला कुत्ता न निकला। और जब उसने अन्दर झाँका तो वहाँ बूढ़ी भिक्षुणी के अलावा कोई न था।

"तुम फिर क्यों आ गये यहाँ?" भिक्षुणी ने चौंकते हुए पूछा।

"क्रान्ति हो रही है . .. पता चला आपको ?" आह क्यू ने यूँही कह मारा।

"क्रान्ति, क्रान्ति . . हो चुकी एक बार पहले वह। तुम क्या समझते हो, क्रान्ति हो जायगी तो हम खतम हो जायेंगे ?" बूढ़ी भिक्षुणी ने आँखें लाल-पीली करते हुए कहा।

"क्या कहा ?" आह क्यू ने विस्मय से पूछा।

"क्या तुम नहीं जानते थे ? क्रान्तिकारी यहां पहले ही हो गये हैं !"

"कौन ?" आह क्यू को और भी अचंभा हुआ।

"सफल जिला-उम्मीदवार और नकली विदेशी शैतान !"

इसे सुनकर आह क्यू को बड़ा अचरज हुआ। जब बूढ़ी भिक्षुणी ने देखा कि उसकी हमलावरी ख़त्म हो चुकी है तो उसने जल्दी से फाटक को धक्का दिया ताकि यदि आह क्यू चाहे तो भी उसे न हिला सके, और जब उसने फिर से दस्तक दी तो कोई जवाब नहीं आया।

यह सब सुबह का क़िस्सा था। चाओ-परिवार के सफल जिला-उम्मीदवार को शीघ्र ही इसकी सूचना मिल गई और जैसे ही उसने सुना कि क्रान्तिकारी उसी रात को शहर में घुस आये हैं, उसने फौरन अपनी चोटी में गिरह लगाई और पहले-पहल चियेन-परिवार में से नकली विदेशी शैतान से मिलने गया, जिससे पहले उसकी कभी नहीं बनती थी। यह समय ऐसा था जब सबको "सुधार-कार्य करना चाहिये था"। उनकी इस बार बड़ी मज़ेदार व

दिलचस्प बातचीत हुई और वे दोनों उसी समय से अभिन्न हृदय मित्र बन गये और दोनों ने क्रान्तिकारी बनने का प्रण किया।

कुछ देर दिमाग़ लड़ाने के बाद उन्हें याद आया कि "आत्म-सुधार आश्रम" में एक शाही तख्ती लगी है, जिस पर "सम्राट् अमर हो" अंकित है, जिसे तुरन्त तोड़ दिया जाना चाहिये। इसके अनन्तर वे ज़रा-सी देर में आश्रम पहुँच गये ताकि अपने क्रान्तिकारी कर्तव्य का निर्वाह कर सकें। क्योंकि बूढ़ी भिक्षुणी ने उन्हें रोकने की चेष्टा की और कुछ बातें कहीं, इसलिये उन्होंने उसे मांचू सरकार समझा और कई बार लाठी और हत्था उसके सिर पर मारा। बूढ़ी भिक्षुणी उनके चले जाने के बाद उठी और जॉच-पड़ताल करने लगी। जाहिर है कि शाही तख्ती चूर-चूर कर दी गई थी, पर साथ ही कुवॉयीं की मूर्ति के सामने रखा हुआ धूप-दान भी ग़ायब हो गया था।

आह क्यू को इसका पता बाद में चला। उसने खेद प्रकट किया कि वह उस समय सो रहा था और उसे इस बात पर क्षोभ भी हुआ कि उन्होंने उसे बुलाया तक नहीं। पर फिर उसने अपने आपसे कहा, "शायद उन्हें अभी तक पता नहीं है कि मैं क्रान्तिकारियों से जा मिला हूँ।"

: ८ :

क्रान्ति से वंचित

वीच्वांग की जनता को दिन-प्रतिदिन अधिक विश्वास होता जा रहा था। जो खबर उन तक पहुँची थी, उससे तो उन्होंने यह समझा कि हालाँकि क्रान्तिकारी शहर में प्रवेश कर चुके हैं, पर उनके आने से बहुत भारी अन्तर नहीं पड़ा है। मजिस्ट्रेट अभी तक सबसे बड़ा हाकिम था, केवल उसकी उपाधि बदल गई थी और सफल प्रान्तीय उम्मीदवार को भी कोई ओहदा मिल गया था। वीच्वांग के देहाती उनका नाम साफ तौर पर जल्दी याद न कर सके—बस कोई न कोई सरकारी ओहदा है, यही वे जानते थे। सेना का प्रधान अब भी वही पुराना सेनापति था। खतरे से सावधान होने को इसलिये कहा जा रहा है, क्योंकि कुछ बुरे क्रान्तिकारी भी हैं जो गड़बड़ मचा रहे हैं और जिन्होंने अपने आने के दूसरे ही दिन लोगों की चोटियाँ काटना शुरू कर दीं। सुना गया था कि नाविक "सात पौण्ड" पास के गाँव से उनके हत्थे लग गया था और अब वह दर्शनीय न रहा था। फिर भी इसका भय ऐसा ज्यादा नहीं था, क्योंकि अव्वल तो वीच्वांग के देहाती शहर जाते नहीं और यदि उनमें से कोई चला भी जाता तो

उसने यह सुनकर और इस ख़तरे से बचने के हेतु से अपना विचार त्याग दिया। आह क्यू भी शहर जाकर अपने पुराने मित्रों से मिलना चाहता था। पर ज्यों ही उसने यह ख़बर सुनी, उसने भी इरादा छोड़ दिया।

फिर भी यह कहना कि वीच्वांग में कोई सुधार नहीं हुआ था, ग़लत बात होगी। अगले कुछ दिनों में उन लोगों की संख्या जिन्होंने अपनी चोटियाँ ऊपर बाँध ली थीं, धीरे-धीरे बढ़ गई और जैसा कि पहले कहा गया है उनमें सबसे पहला व्यक्ति सफल ज़िला-उम्मीदवार था। उसके बाद चाओ स्ज़ू-चेन और चाओ पाई-येन थे और इनके बाद आह क्यू था। यदि गर्मी का मौसम होता तब तो यह बात इतनी विचित्र न समझी जाती कि सब लोग अपनी चोटियाँ सिर के ऊपर बाँध रहे हैं या उसमें गिरह लगा रहे हैं। पर इस समय तो शरद्-ऋतु थी, इसलिये यह "गर्मी का काम सर्दी में कर लेना" एक वीरतापूर्ण निश्चय से कुछ कम नहीं है। और जहाँ तक वीच्वांग का सम्बन्ध है वहाँ के बारे में यह कदापि नहीं कहा जा सकता कि वहाँ सुधार हो ही नहीं रहे हैं।

जब चाओ स्ज़ू-चेन अपनी नंगी गर्दन लिये पहुँचे तो जिन लोगों ने उन्हें देखा कहा, "आह! यह लो क्रान्तिकारी आ गया!"

जब आह क्यू ने यह सुना तो बहुत प्रभावित हुआ। हालांकि उसने पहले सुन लिया था कि सफल ज़िला उम्मीदवार ने भी अपनी चोटी में गिरह लगा ली है पर उसे यह गुमान भी न था

कि वह ख़ुद भी ऐसा ही करेगा। अब जाकर जब उसने चाओ रज़ू-चेन को भी इसका अनुकरण करते देखा तो उसने भी सोचा क्यों न मैं ख़ुद भी ऐसा ही करूँ और उसने भी उनकी नक़ल करने का फ़ैसला कर लिया। उसने एक बाँस की खपच से चोटी को बल देकर ऊपर कर लिया और कुछ देर झिझकने के बाद आख़िर-कार साहस एकत्र किया और बाहर निकला।

जैसे ही वह गलियों में से गुज़रा लोगों ने उसकी ओर देखा पर किसी ने उससे कुछ कहा नहीं। पहले तो आह क्यू बड़ा अप्रसन्न हुआ और फिर उसे क्रोध भी आ गया। इधर कुछ दिनों से वह बड़ी जल्दी आपे से बाहर हो जाता था। हालांकि उसकी ज़िन्दगी क्रांति के पहले के ज़माने से कोई बदतर नहीं थी। लोग उससे विनम्रता से पेश आते थे और दूकानदार उससे नक़द पैसा न माँगते थे लेकिन आह क्यू को अब भी संतोष न था। वह सोचता था कि अब जबकि क्रांति हो चुकी है हालत इससे बेहतर होनी चाहिये और उसे यकायक तरुण डी० दिखाई पड़ गया और उसे देखते ही उसकी भवें तन गईं।

तरुण डी० ने भी अपनी चोटी ऊपर बाँधी हुई थी। और तो और उसने उसे सीधी रखने के लिये बाँस की खपचों का प्रयोग किया था। आह क्यू ने कल्पना तक न की थी कि तरुण डी० ऐसा करने का साहस कर सकेगा, और वह इसे सहन नहीं कर सकता। यह तरुण डी० आख़िर था किस वृक्ष का पत्ता? आह क्यू की इच्छा हुई उसे वहीं धर दबाये, उसकी खपचें तोड़ डाले, चोटी खोल दे

और कई बार उसका मुँह थपिया दे और उसे इस बहुरूप के लिये कि वह था कुछ और, और अब क्रांतिकारी बनने का ढोंग रचने लगा, उसे सज़ा दे। लेकिन अन्त में उसने उसे छोड़ दिया, सिर्फ उस पर एक प्रचंड दृष्टि डाली, थूका और तिरस्कार से कहा, "छि: !"

इन कुछ दिनों में एक ही व्यक्ति शहर गया था और वह था नकली विदेशी शैतान। सफल ज़िला-उम्मीदवार ने अमानत के तौर पर रखे हुए उन सन्दूकों का बहाना लेकर सफल प्रांतीय उम्मीदवार से मुलाकात करना चाही पर उसे डर लगा कि कहीं उसकी चोटी न कट जाय और इस भय से उसने अपना इरादा बदल दिया। उसने एक बहुत ही रस्मी ख़त लिखा और नक़ली विदेशी शैतान से कहा कि वह उसे शहर ले जाय। उसने उससे यह भी कह दिया कि मेरा परिचय स्वाधीनता-दल से करा दिया जाय। जब नक़ली विदेशी शैतान वापस आया उसने सफल ज़िला-उम्मीदवार से चार डालर मांगे। और उसके बाद सफल ज़िला-उम्मीदवार अपने सीने पर एक चांदी का बिल्ला लगाने लगा। वीच्वांग के तमाम देहाती आतंकित होगये थे और कह रहे थे कि यह पेर्तिमौन तेल-पार्टी का बिल्ला है जो किसी हान लिने[1] के पद के बराबर है। इसके फलस्वरूप मि० चाओ की प्रतिष्ठा अचानक बढ़ गई और इस बार वह उसके मुकाबले में कहीं अधिक थी जितनी कि उसके

१—माचू वंश में (१६४४–१९११) सर्वोच्च साहित्यिक उपाधि।

पुत्र के सरकारी पद की परीक्षा में सफल होने पर हुई थी। इस सबका नतीजा यह निकला कि उसने सब को नीची नज़रों से देखना शुरू कर दिया और जब उसने आह क्यू को देखा तो उससे किनाराकशी करने लगा।

आह क्यू बहुत ही असन्तुष्ट था और हमेशा यही महसूस करता था कि उसे कोई नहीं पूछता। पर ज्योंही उसने इस चांदी के बिल्ले की बात सुनी एकदम उसे ख्याल आ गया कि उसे क्यों नहीं पूछा जा रहा। सिर्फ यह कह देना मात्र कि तुम चले गये थे— क्रांतिकारी होने की दलील नहीं, और न ही चोटी ऊपर को बांध लेना कोई इस बात का प्रमाण था। असल चीज़ जो अभी बाकी थी वह थी जाकर क्रांतिकारी पार्टी में जा मिलना। सारी उम्र में उसने दो ही क्रांतिकारी देखे थे जिनमें से एक का तो शहर में सिर काट लिया गया था और बस नकली विदेशी शैतान बाक़ी रह गया था। बस अब तो इसके सिवाय कोई चारा न था कि जाकर नकली विदेशी शैतान से इस पर बातचीत की जाय।

चियेन-परिवार के घर का सदर दरवाज़ा इत्तफाक़ से खुला था और आह क्यू दबे पॉव उसमें जा घुसा। अन्दर पहुँचते ही जो उसकी नज़र नकली विदेशी शैतान पर पड़ी तो वह चौंक पड़ा। वह काले वस्त्र पहने आंगन में खड़ा था और उसके सीने पर चांदी का बिल्ला लगा हुआ था। उसके हाथ में एक छड़ी थी जिसका आह क्यू पहले से मज़ा चख चुका था। और उसके एक फुट लम्बे बाल जो उसने फिर से बढ़ा लिये थे, उसके कंधों पर

इस तरह फैले हुए थे मानो किसी पर्वत-देवता के बाल हों। उसके सामने चाओ पाई-येन और तीन अन्य व्यक्ति सीधे खड़े थे और सब के सब पूरे आदर व सम्मान के साथ उसकी सारी बातें सुन रहे थे।

आह क्यू दबे पाँव अन्दर गया और चाओ पाई-येन के पीछे जाकर खड़ा हो गया ताकि उसे सलाम करे पर क्या करे यह उसे न सूझ पड़ा, ज़ाहिर है वह उसे "नकली विदेशी शैतान" तो कह नहीं सकता था और न ही उसे "विदेशी" कह सकता था, न "क्रांतिकारी" ही उसके लिये उपयुक्त जँचता था। इसलिये उसने सोचा बेहतरीन संबोधन "श्री विदेशी" रहेगा।

लेकिन श्री विदेशी की निगाह उस पर नहीं पड़ी क्योंकि वह अपनी आँखें चढ़ाये बड़ी गर्मजोशी से बोल रहा था।

"मैं तो बड़ा भावुक व्यक्ति हूँ इसलिये जब हम मिले तो मैंने कहा, हंग बाबा, यह ठीक रहेगा हमारे लिये; पर वह हमेशा यही जवाब देता रहा, 'नो!'—यह विदेशी भाषा का शब्द है जिसे आप लोग नहीं समझ पायेंगे—वरना हम तो बहुत पहले सफल हो चुके होते। ये लोग कितने सतर्क हैं यह उसका उदाहरण है। वह मुझसे बार-बार कहता रहा हूपेह चले जाओ पर मैं भी नहीं गया। ऐसी छोटी-सी जगह पर कौन काम करेगा?..."

"अर—र र," आह क्यू उसके रुकने का इन्तज़ार करने लगा और फिर हिम्मत करके बोलने को तैयार हुआ पर फिर भी

किसी न किसी वजह से वह अब तक उसे विदेशी कह कर संबोधित न कर सका।

चार व्यक्ति जो मि० चियेन की बातें सुन रहे थे यकायक चौंक कर घूम गये और आह क्यू को घूरने लगे। श्री विदेशी ने भी उसी वक्त उसे पहली बार देखा।

"क्या है?"

"मैं......"

"बाहर निकल जाओ!"

"मैं भर्ती होना चाहता हूँ ......"

"बाहर निकल जा!" श्री विदेशी ने "मातमी बेद" उठाते हुए कहा।

फिर चाओ पाई-येन और दूसरे भी चिल्ला पड़े, "मि० चियेन तुमसे कह रहे हैं बाहर निकल जाओ, सुना नहीं तुमने!"

आह क्यू ने अपने बचाव के लिये सिर पर हाथ रख लिये और बग़ैर कुछ जाने समझे फाटक में से निकल कर भागा, और इस बार श्री विदेशी ने उसका पीछा नहीं किया। पचास-साठ कदम भाग चुकने के बाद उसके क़दम धीमे पड़ गये और अब उसे काफी परेशानी महसूस होने लगी क्योंकि अगर श्री विदेशी ने उसे क्रांतिकारी न बनने दिया तो उसके लिये और कोई चारा नहीं रहेगा। आइन्दा कोई भी श्वेत-शिरस्त्राण और कवच पहने उसे बुलाने नहीं आयेगा। उसकी सारी इच्छाओं, उद्देश्यों, आशा और भविष्य पर एक बारगी पाला गिर गया।

अब वह इस निराशा में इतना ही लीन होगया कि लोग इस बात को उछालेंगे और उसको भी तरुण डी० और गलमुच्छे वांग की ही तरह चिढ़ाया करेंगे यह बात भी गौण बन कर रह गयी।

पहले कभी वह इतना निराश न हुआ था। यहां तक कि चोटी का ऊपर की ओर बांध लेना भी उसे अब व्यर्थ और हास्य-जनक प्रतीत हुआ। प्रतिशोध की भावना से उसने फौरन चोटी खोल देना चाहा पर ऐसा उसने किया नहीं। शाम तक वह घूमता-फिरा और फिर दो प्याले शराब के उधार पीने के बाद उसकी जान में जान आई और फिर से उनने अपने कल्पना-चक्षुओं से श्वेत शिरस्त्राण और श्वेत कवच पहने लोगों की अस्पष्ट आकृतियाँ देखीं।

एक दिन वह रात को बड़ी देर तक घूमता रहा और जब शराबखाना बन्द होने लगा तब जाकर उसने प्राचीन मन्दिर का रुख़ किया।

"पड़म—फाट !"

उसने अचानक कुछ अजीब आवाज़ सुनी जो पटाखों की नहीं थी। उत्तेजना और उकसाहट भरी चीज़ों से आह्-क्यू को बड़ी दिलचस्पी थी और दूसरों के मामले में दख़ल देने में भी उसे बड़ा मज़ा आता था, अतः वह अँधेरे में शोर-गुल कहाँ हो रहा है यह देखने गया। आगे जाते हुए किसी व्यक्ति के क़दमों की चापें उसने सुनीं और बड़े ग़ौर से सुनता रहा कि एकदम एक आदमी उसकी ओर झपटा। ज्यों ही आह् क्यू ने उसे देखा वह

भी घूमा और उसने जितना तेज़ वह दौड़ सकता था, दौड़ कर उसका पीछा किया। जब वह आदमी घूमा तो आह् क्यू भी घूम गया और जब एक नुक्कड़ पर मुड़ कर वह आदमी रुक गया तो आह् क्यू भी रुक गया। उसने देखा कि पीछे कोई नहीं था और वह आदमी जिसके पीछे वह दौड़ा था, तरुण डी० था।

"क्या बात है बे ?" आह् क्यू ने क्रोधित स्वर में पूछा।

"चाओ... ..चाओ-परिवार लुट गया," तरुण डी० ने हाँफते हुए कहा।

आह् क्यू का दिल धक-धक करने लगा। यह कह कर तरुण डी० वहाँ से चल दिया। आह् क्यू भी दौड़े गया और फिर तीन-चार बार रुका। लेकिन चूंकि वह खुद भी चोरी और लूट-मार का धंधा कर चुका था, इसलिये उसमें असाधारण साहस उत्पन्न हुआ और इसलिये गली के नुक्कड़ से निकल कर उसने बड़े ध्यान से सुना और सोचा कि शायद कुछ शोर-गुल सुनाई पड़े। उसने बड़े ग़ौर से देखा भी और सोचा अब तो वह बहुत-से कवच और शिरस्त्राणधारी पुरुषों को देखेगा जो सन्दूक, फर्नीचर, ले जारहे होंगे, सफल ज़िला-उम्मीदवार की पत्नी का निंगपो बिस्तर भी ले जारहे होंगे, पर वह उन्हें साफ-साफ न देख सका। वह और नज़दीक जाना चाहता था, मगर उसके क़दम वहीं जम गये।

उस रात चाँद न निकला था और वीच्वांग घने अँधेरे में बहुत ही स्थिर दीख पड़ रहा था। वह उतना ही निस्तब्ध और

शान्त था जितना प्राचीन सम्राट् फूशी के शान्तिपूर्ण ज़माने में। आह क्यू वहाँ खड़ा रहा और आख़िरकार उसकी दिलचस्पी ख़त्म हो गई। पर अब भी हर चीज़ पहली जैसी ही दीख पड़ी, कुछ दूर लोग इधर-उधर घूम रहे थे, चीज़ें ले-ले जा रहे थे। कोई सन्दूक उठाये लिये जा रहा था, कोई फर्नीचर लिये जा रहा था, कोई सफल ज़िला-उम्मीदवार की पत्नी का निंगपो बिस्तरा उठाये भाग रहा था . . इतनी चीज़ें लोग उसकी नज़रों के सामने से लेकर जा रहे थे कि वह अपनी आँखों पर विश्वास न कर सका। परन्तु उसने तय किया कि वह उनके समीप नहीं जायगा और वापस मन्दिर को चल दिया।

प्राचीन मन्दिर में तो और भी अधिक अंधकार छाया हुआ था। जब उसने बड़ा फाटक बन्द किया तो रास्ता टटोलते हुए अपने कमरे तक पहुँचा और जब वह जाकर लेट गया तब जाकर कहीं उसे शान्ति मिली और उसने विचार किया कि आख़िर इस सब का उस पर कैसे असर पड़ गया। श्वेत कवच और शिरस्त्राण पहने लोग पहले से आन पहुँचे थे, पर उन्होंने उसे पुकारा नहीं, अनेकों चीज़ें उन्होंने वहाँ से हटा लीं, पर उसे कोई हिस्सा न मिला और यह सब महज़ उस नकली विदेशी शैतान के कारण हुआ, जिसने उसे बग़ावत से रोक दिया था। वरना भला क्या उसे उसका हिस्सा न मिलता ?

जितना अधिक आह क्यू ने इस पर सोचा, उसे उतना ही अधिक क्रोध आता गया और आख़िर वह आपे से बाहर हो गया

और ग्लानिपूर्वक अपना सिर हिलाते हुए उसने कहा, "अच्छा तो बग़ावत सब तुम्हारे लिये ही है, मेरा इसमें कोई हिस्सा नहीं एं? तू साले कुतिया के बच्चे नकली विदेशी शैतान—अच्छा तू ही विद्रोही बन जा! विद्रोह का दण्ड है फाँसी। मैं भेदी बन जाऊँगा और देखूँगा कि तुझे वे शहर में ले जाते हैं और तेरा सिर धड़ से उड़ा देते हैं—तू और तेरा सारा कुनबा......मारो, मार डालो!"

: ९ :

वैभवशाली अन्त

चाओ-परिवार के लूटे जाने पर वीच्वांग के अधिकांश लोग आनन्दित थे परन्तु साथ ही आतंकित भी, और आह क्यू उनमें अपवाद न था। चार दिन बाद अकस्मात् आह क्यू को आधीरात में घसीट कर शहर ले जाया गया। रात अंधियारी थी जब सिपाहियों का एक गिरोह, सैनिकगण और पुलिस के जवान तथा पांच गुप्तचर चुपचाप वीच्वांग में घुस आये और रात्रि के अंधकार से आच्छादित प्राचीन मंदिर को उन्होंने घेर लिया और प्रवेश द्वार पर एक मशीनगन तैनात करदी। फिर भी आह क्यू भागा नहीं। बहुत देर तक मंदिर में कुछ गड़बड़ न हुई। कप्तान अधीर हो उठा और उसने बीस डालर का इनाम रख दिया तब कहीं जाकर फौजी दस्ते के दो सिपाहियों ने दीवार फॉद कर मंदिर में घुसने का साहस किया। तब अंदर से सहयोग प्राप्त कर दूसरे भी अन्दर घुस पड़े और आह क्यू को बाहर घसीट लाये। और जब उसे खींचकर मशीनगन के सामने खड़ा कर दिया तब जाकर उसका नशा हिरन हुआ और उसे होश आया।

जब वे शहर पहुँचे तो दोपहर हो चुका था और आह क्यू ने

देखा कि उसे घसीट कर किसी टूटे-फूटे दफ्तर में लेजाया जा रहा है जहां उसे पांच-छः मोड़ों के बाद एक कमरे में धकेल दिया गया। और ज्यों ही वह अन्दर जाकर गिरा कि लकड़ी के सलाखों वाले दरवाजे के फाटक धड़ से बन्द कर दिये गये। बाकी कमरे में तीन खाली दीवारें थीं और जब उसने सावधानी से देखा तो दो और आदमी एक कोने में पड़े हुए थे।

यद्यपि आह क्यू को कुछ अटपटापन और उलझन महसूस हो रही थी पर वह दुखी नहीं था क्योंकि प्राचीन मंदिर के जिस कमरे में वह सोता था उसके दरवाजे भी किसी कदर बेहतर नहीं थे। वे दो आदमी भी देहाती ही मालूम हुए। वे धीरे-धीरे उससे बाते करने लगे और उनमें से एक ने उससे कहा कि सफल प्रांतीय उम्मीदवार उसे अपने दादा के किराये के लिये जो अब तक न चुकाया गया था तक़ाज़ा करना चाहता था, दूसरे को बिचारे को पता ही न चला वहाँ वह क्यों लेजाया गया। जब उन्होंने आह क्यू से पूछा तो उसने बड़ी साफगोई से जवाब दिया, "इसलिये कि मैं विद्रोह करना चाहता था।"

उसी दिन तीसरे पहर को उसे सलाखों वाले दरवाजे में से निकाल कर एक बड़े हाल में लेजाया गया जिसके बिल्कुल आखिरी कोने में एक बूढ़ा बैठा था जिसका सिर मुंडा हुआ था। आह क्यू ने सोचा कहीं यह कोई भिक्षु तो नहीं है पर जब उसने नीचे कुछ सिपाहियों को खड़ा देखा और एक दर्जन आदमियों को लम्बे लबादे पहने दोनों तरफ़ खड़ा देखा जिनमें से कुछेक के

सिर इस बूढ़े की भांति बिल्कुल मुँडे हुए थे और कुछेक के एक-एक फुट लम्बे बाल नकली विदेशी शैतान की तरह कंधों पर झूल रहे थे। परन्तु सब के सब उसकी ओर तीव्र दृष्टि से देख रहे थे तब उसे ख्याल हुआ कि यह व्यक्ति कोई बड़ा आदमी है। एक दम उसके घुटनों के जोड़ अपने-आप ढीले पड़े और वह नीचे बैठ गया।

"खड़े होकर बोलो! झुको मत!" लम्बे लबादे-धारी सब लोगों ने चीख कर कहा।

हालांकि आह क्यू उनकी बात समझ गया पर खड़ा रहना उसके बस की बात न थी। उसका शरीर अपने आप नीचे की ओर झुक गया और वह घुटनों के बल बैठ गया और उससे भी आसानी पाने के लिये वह बिल्कुल ही नीचे को हो गया।

"गुलाम! .. . " लम्बे लबादे-धारी आदमियों ने फिर नफरत भरे अंदाज़ में कहा, पर अब उन्होंने उसे खड़ा होने पर मजबूर नहीं किया।

"सच-सच बतादे, तो तू छूट जायगा," सिर मुँडे बूढ़े व्यक्ति ने आह क्यू पर नजरें गाड़कर धीमी पर स्पष्ट वाणी में कहा, "मैं सब कुछ पहले ही से जानता था। जब तू अपना अपराध स्वीकार कर लेगा तो मैं तुझे छोड़ दूंगा।"

"स्वीकार कर लो!" लम्बे लबादे-धारी आदमियों ने ज़ोर से दुहराया।

"बात यह है कि मैं आना......चाहता था..." आह क्यू ने

क्षणभर के उलझनपूर्ण विचार के बाद रुक-रुक कर और स्पष्ट स्वर में कहा।

"तो फिर तू आया क्यों नहीं ?" बूढ़े आदमी ने नम्रता से पूछा।

"नकली विदेशी शैतान ने मुझे आने ही न दिया !"

"बकवास ! अब बात करना बेकार है। तेरे साथी कहां हैं ?"

"क्या कहा ? . .. "

"वे लोग जिन्होंने उस रात चाओ-परिवार को लूटा था।"

"वे मुझे बुलाने तो नहीं आये थे। उन्होंने तो खुद ही चीजें वहां से हटाईं।" इस बात के जिक्र से आह क्यू को क्रोध आगया।

"कहां गये वे ? जब बता देगा तो तुझे छोड़ दिया जायगा," बूढे आदमी ने और भी विनम्रता से कहा।

"मैं नहीं जानता . वे मुझे बुलाने नहीं आये।..... "

तब बूढ़े आदमी के इशारे पर आह क्यू को सलाखों वाले दरवाजे में धकेल दिया गया। अगली बार दूसरे दिन फिर उसे वहां से घसीटा गया।

बड़े हाल में सब कुछ वैसा ही था, सिर मुंडा बूढ़ा अब भी वहां बैठा हुआ था और आह क्यू भी पहले की ही तरह उसके सामने झुक गया।

"और कुछ कहना है तुम्हें ?" बूढ़े आदमी ने विनम्रता से पूछा।

आह क्यू ने सोचा और निश्चय किया कि उसे कुछ नहीं

कहना है इसलिये उसने जवाब दिया, "कुछ नहीं।"

लम्बा लबादा-धारी आदमी एक काग़ज़ का टुकड़ा लेकर आया और एक ब्रश लेकर आह क्यू के सामने खड़ा हो गया जिसे वह उसके हाथ में थोंप देना चाहता था। अब तो आह क्यू बड़ा घबराया क्योंकि जिन्दगी में यह पहला मौक़ा था जब उसने हाथ में लिखने का ब्रश सम्हाला था। वह असमंजस में पड़ गया और सोचने लगा उसे कैसे पकड़े जब कि आदमी ने काग़ज़ पर नियत स्थान बताते हुए उससे हस्ताक्षर करने को कहा।

"मुझे...मुझे लिखना नहीं आता," आह क्यू ने घबराहट और शर्म से ब्रश हाथ में पकड़ते हुए कहा।

"तो फिर आसानी इसमें है कि तुम एक चक्कर बना दो।"

आह क्यू ने चक्कर बनाने की कोशिश की पर उसका हाथ हिल गया। इसलिये आदमी ने ज़मीन पर काग़ज़ बिछा दिया। आह क्यू झुका और जितनी मेहनत व परिश्रम से चक्कर बना सकता था उसने बनाया मानो उसकी जिन्दगी का दारोमदार इसी पर हो। वह डर रहा था कि लोग उसकी हँसी उड़ायेंगे और इस लिये उसने भरसक चक्कर गोल बनाने की कोशिश की लेकिन वह सड़ियल ब्रश न सिर्फ भारी था बल्कि आझोलंघक भी था। इधर-उधर घूम जाता था, और ज्योंही वह घेरा बन्द होने को होता कि वह फिर खिसक जाता था और उस घेरे का आकार तरबूज़ जैसा हो जाता था।

आह क्यू चक्कर न बना सकने के लिये लज्जित था और उस

आदमी ने बिना कुछ कहे-सुने उससे ब्रश और कागज़ ले लिया था और इसके बाद बहुत से लोग उसे फिर उसी सलाखों वाले दरवाज़े से घसीट कर ले गये।

तीसरी बार जब उसे सलाखों वाले दरवाज़े में से घसीटा तो उसे कोई विशेष क्रोध नहीं आया। उसने विचार किया कि इस संसार में हरेक व्यक्ति पर ऐसी भी बीतती है। कभी न कभी तो उसे जेल में जाना ही पड़ता है और कागज़ पर गोले बनाने पड़ते हैं। सिर्फ इसी का उसे मलाल था कि घेरा गोल न बन सका और यह उसकी नज़र में उसके यश पर लांछन था। फिर भी वह यह सोच कर संतुष्ट हुआ कि "सिर्फ मूर्ख ही शुद्ध घेरा बना सकते हैं।" और इसी विचार से उत्प्रेरित वह निद्रामग्न हो गया।

उस रात सफल प्रांतीय उम्मीदवार को नींद नहीं आई क्योंकि कप्तान से उसका झगड़ा हो गया था। सफल प्रांतीय उम्मीदवार ने इस बात पर ज़ोर दिया कि सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण काम हमें यह करना है कि चुराई गई चीज़ों और माल को वापस हासिल करना जब कि कप्तान इस बात को सर्वाधिक महत्त्व देते थे कि अपराधियों को जनता के सामने दण्ड देना चाहिये। हाल ही में कप्तान सफल प्रान्तीय उम्मीदवार के साथ बड़ी ग्लानि और उपेक्षा का व्यवहार करने लगा था। इसलिये मेज़ पर मुक्का मारते हुए उसने कहा, "'एक सौ को धमकाने और आतंकित करने के लिये एक को दण्ड दो!' देखो न, मैं खुद कोई पन्द्रह-बीस रोज़ से क्रान्तिकारी दल

का सदस्य रहा हूँ और इस दौरान में डकैती की दर्जनों वारदात हुई हैं जिनमें से एक भी नहीं पकड़ी गई। और ज़रा सोचिये तो इसका मुझ पर कितना बुरा असर पड़ रहा होगा। और अब जब कि एक मामला पकड़ा गया है तो तुम बच्चों की-सी दलीलें देते हो। यह नहीं चलेगा! यह मेरा काम है।"

सफल प्रांतीय उम्मीदवार बड़ी उलझन में पड़ गया लेकिन अब भी इसी ज़िद पर अड़ा रहा कि "अगर चोरी का माल बरामद नहीं किया गया तो मैं नायब सिविल एडमिनिस्ट्रेटर के ओहदे से इस्तीफा दे दूंगा।"

"शौक से।" कप्तान ने कहा।

फलस्वरूप सफल प्रांतीय उम्मीदवार उस रात सोया नहीं पर सौभाग्य की बात कि उसने अगले दिन तक अपना इस्तीफा नहीं दिया।

तीसरी बार जब आह क्यू सलाखों वाले दरवाज़े में से घसीटा गया तो उसी रात की अगली सुबह थी जिस रात सफल प्रांतीय उम्मीदवार को नींद नहीं आई थी। जब वह उस बड़े हाल में पहुँचा तो घुटे हुए सिर वाला बूढ़ा आदमी अब भी पहले की ही भांति वहाँ बैठा हुआ था और आह क्यू भी हमेशा की भांति उसके सामने जाकर झुक गया।

बड़ी नम्रता से बूढ़े आदमी ने उससे प्रश्न किया: "और कुछ कहना है तुम्हें?"

आह क्यू ने सोचा और तय किया उसे कुछ नहीं कहना है—

इसलिये कहा, "कुछ नहीं।"

लम्बे लबादे और छोटी जाकटें पहने हुए अनेक आदमियों ने विलायती कपड़े की एक वास्कट उसको पहना दी जिस पर कुछ काले अक्षर बने हुए थे। आह क्यू को बहुत ही घबराहट हुई क्योंकि यह तो मातमी पोशाक जैसा ही मामला था और मातमी पोशाक पहनना अशुभ था। साथ ही उसके हाथ पीठ पर बांध दिये गये और उसे दफ्तर से खींचकर बाहर निकाला गया।

आह क्यू को उठाकर एक खुले हुए छकड़े में पटक दिया गया। और छोटी जाकटें पहने बहुत से लोग उसके साथ बैठ गये। छकड़ा फौरन चल पड़ा। सामने की ओर बहुत से सिपाही और फौजी विदेशी बन्दूकें लिये खड़े थे और दोनों बाजुओं में विस्मित दर्शकों की भीड़ खड़ी थी और पीछे क्या था यह आह क्यू को न दीख पड़ा था। लेकिन अचानक उसे ख्याल आया—"कहीं ऐसा तो नहीं कि ये लोग मुझे फाँसी चढ़ाने ले जा रहे हों?" आतंक ने उसे दबोच लिया और उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया उसके कानों में कुछ ऐसी आवाज़ आई मानो वह मूर्छित हो गया हो। पर वास्तव में वह मूर्छित नहीं हुआ था। अगरचे कुछ देर तक वह भयभीत रहा पर बाद में बिल्कुल शांत हो गया। उसे लगा कि इस संसार में शायद हरेक पर कभी न कभी ऐसी घड़ी आती है जब उसे फाँसी पर झूलना पड़ता है।

वह अब भी उस सड़क को पहचान गया और उसे बड़ा आश्चर्य होने लगा : वे लोग वध-स्थान को क्यों नहीं जा रहे हैं?

वह न जानता था कि उसे वे लोग उदाहरण के रूप में सभी गलियों में घुमा रहे हैं ताकि जनता उसकी इस दुर्गति और दुष्परिणाम से शिक्षा प्राप्त करे। पर वह यह जानता भी तो क्या वह अब भी यही सोच कर सन्तोष कर लेता कि इस दुनिया में शायद हरेक पर यह भी गुजरती है कि उसे सरेबाजारे आलम इस प्रकार रुस्वा और अपमानित किया जाय।

कुछ देर बाद उसे यह एहसास हुआ कि अब उसे वध-स्थान ले जा रहे हैं और जाहिर है कि वहां अब उसका सिर काट दिया जायगा। उसने बड़े खेद के साथ अपने इर्द-गिर्द देखा कि लोग चींटियों की नाईं धकापेल करते हुए उसके पीछे चले आ रहे हैं—और अकस्मात् सड़क पर लोगों की उस अपार भीड़ में उसकी नजरें अमाह वू पर पड़ीं। ओहो, तो यही कारण था कि उसने इतने दिनों से उसे देखा नहीं था। वह अब शहर में काम कर रही थी।

आह क्यू अचानक ही अपनी आत्मा के अभाव पर लज्जित हो उठा क्योंकि वह किसी आदेश की एक पंक्ति भी न गा पाया। उसके विचार बवण्डर की नाईं घूम गये। "पति की समाधि पर नव-युवती विधवा" में वह वीरता नहीं थी। अजगर और चीते के युद्ध में के "मुझे मार देने का खेद है" शब्द बहुत ही निर्जीव थे। "मारता हूँ मैं तुझे आहनी तलवार से" इस समय सर्वश्रेष्ठ जान पड़े। लेकिन जब उसने अपने हाथ उठाना चाहे तो उसे

याद आया कि वे बंधे हुए हैं इसलिये उसने "मारता हूँ.... ." भी नहीं गाया।

"बीस वर्ष पश्चात् मैं वापस आऊँगा......" उसी हलचल और घबराहट में आह क्यू केवल आधी कहावत ही कह पाया जिसे उसने पहले न कभी सीखा था और न उसका प्रयोग किया था। भीड़ में शोर उठा : "बहुत अच्छे वाह, वाह !" जो भेड़िये की गर्जना-सा लगा। छकड़ा सतत गति से आगे बढ़ता रहा। उस कोलाहल के समय आह क्यू की निगाहें अमाह वू को तलाश करने लगीं परन्तु शायद उसने आह क्यू को न देखा था, वह तो निर्निमेष उन विलायती बंदूकों की ओर देख रही थी जो सिपाही लिये जा रहे थे।

अब आह क्यू ने शोर मचाती हुई भीड़ पर एक दृष्टि डाली।

उस बार फिर उसके विचारों ने बवण्डर की नाईं चक्कर खाया। चार वर्ष पहले पहाड़ के नीचे उसे एक भूखा भेड़िया नज़र आया था जो कुछ दूरी के फासले से उसका पीछा कर रहा था और उसे फाड़ खाना चाहता था। उसका तो डर के मारे दम निकल गया होता, पर इत्तफाक की बात कि उसके पास एक छोटी कुल्हाड़ी थी, जिसकी बदौलत उसे वीच्वांग लौटने की हिम्मत हुई। लेकिन उस भेड़िये की आँखें वह न भूला था—भयावह पर कायरतापूर्ण जो आग की लपटों की नाईं चमक रही थीं मानो दूर ही से उसे छेद रही हों। पर अब तो उसे भेड़िये से भी अधिक भयानक आँखें दिखाई दीं। शुष्क, पर फिर भी पैनी आँखें जो ऐसी

लग रही थीं मानो उसके शब्दों को निगल जायेंगी और शायद उसके हाड़-मॉस से भी अधिक कुछ निगल लेगी और ये आँखें कुछ अन्तर पर उसका पीछा कर रही थीं।

ये आँखे मालूम होता था एक ही में आकर जमा हो गई हैं और उसकी आत्मा को भेद रही थीं।

"त्राहि, त्राहि !"

लेकिन आह क्यू ने ये शब्द नहीं कहे। उसकी आँखों के सामने तो सब कुछ काला हो चुका था और उसे महसूस हो रहा था मानो उसका सारा शरीर टुकड़े-टुकड़े हो बिखर रहा हो।

लूट के परिणामों का सबसे बड़ा शिकार सफल प्रान्तीय उम्मीदवार था, क्योंकि चोरी हुआ माल फिर कभी बरामद न हो सका। उसका सारा परिवार फूट-फूट कर रोया। अगली बारी चाओ के घर-बार की थी, क्योंकि जब सफल जिला-उम्मीदवार लूट की ख़बर देने शहर जा रहा था तो रास्ते में बुरे क्रान्तिकारियों ने न सिर्फ उसकी चोटी काट ली थी बल्कि रिपोर्ट कराने में उससे २० डालर उन लोगों ने भी हथिया लिये थे, इसलिये सारा चाओ-परिवार भी खूब ज़ार-ज़ार रोया। उस दिन से उन्होंने धीरे-धीरे पतनोन्मुख वंश के उत्तरजीवियों का स्थान ग्रहण कर लिया।

जहाँ तक उस घटना पर बहस का सबन्ध है—वीच्वांग में उस पर कोई बात नहीं हुई न किसी ने कोई सवाल ही उठाया। स्वाभाविक ही था कि लोगों ने यह विश्वास कर लिया कि आह क्यू बुरा आदमी था और जिसका सबूत यह था कि उसे गोली मार

दी गई थी। क्योंकि यदि वह बुरा न होता तो उसे गोली क्यों मारी जाती ? पर शहर में लोगों की राय कुछ भिन्न थी। अधिकतर लोग असन्तुष्ट थे और सोच रहे थे कि गोली मार देना इतना अच्छा दृश्य नहीं होता, जितना सिर काट देना और वह भी कैसा हास्यजनक बदमाश था कि इतनी गलियों में उसे घुमाया गया और अभागे ने किसी आपेरा की एक पंक्ति तक न गाई। उनका उसके साथ-साथ जाना भी व्यर्थ ही रहा।

दिसम्बर, १९२१.

"आह क्यू" के सम्बन्ध में

"आह क्यू"

—फेंग स्यूऽ फेंग

लुहसूँ की कहानियों के दो संग्रह 'नाहाँ' और 'यांग हू वांग' १६१८ और १६२५ के बीच लिखे गये थे। यद्यपि ऐसा कहा जा सकता है कि इन कहानियों की टेकनीक आलोचनात्मक यथार्थवाद की शाला से प्रभावित है फिर भी उनमें साँस लेती आत्मा तो अवश्य नवीनता लिये है।

लुहसूँ क्रांति के युग की उपज हैं। उन्होंने अपनी पहली कहानियों की रचना क्रांतिकारी चार मई-आन्दोलन के जमाने में की थी। जिस युग में वह मौजूद थे उन्होंने अपनी रचनाओं को क्रांतिकारी विषय-वस्तु प्रदान किया था और इस प्रकार उनके लिये यह अवश्यंभावी हो गया कि वह ऐसी रचनाएँ करें जो शास्त्रीय आलोचनात्मक यथार्थवाद से भिन्न हों। इसलिये जैसा कि लुहसूँ ने स्वयं इंगित किया है कि उनकी 'पागल की डायरी' (जो उनकी पहली कहानी थी और १६१८ में लिखी गई थी) गोगोल की 'पागल की डायरी' के आदर्शानुसार ही थी; लेकिन लुहसूँ की कहानी क्लान-व्यवस्था और कन्फ्यूशियनवाद के दुरुपयोगों को बेनक़ाब करने के

उद्देश्य से लिखी गई थी और उसमें क्षोभ और क्रोध गोगोल की अपेक्षा कहीं अधिक तीव्र था।" (चियेह-चियेह तिंग के विस्तृत लेख) इस प्रकार उनके और गोगोल के यथार्थवाद में अन्तर था।

लुहसू की कहानियों का महत्त्वपूर्ण भाव विशेषकर उनकी सर्वश्रेष्ठ कहानियों का भाव, मेरा तात्पर्य उस लड़ाकू भाव से है जो उनकी रचनाओं के क्रान्तिकारी विषय-वस्तु से प्राप्त होता है अधिकांश शास्त्रीय साहित्य के आलोचनात्मक यथार्थवाद से भी कहीं आगे था। समग्र रूप से केवल उनकी शैली ही शास्त्रीय आलोचनात्मक यथार्थवादी कही जा सकती है।

लुहसू की अधिकतर कहानियाँ सामाजिक संघर्ष के अस्त्रों के रूप में लिखी गई थीं। शास्त्रीय आलोचनात्मक यथार्थवाद से उन्होंने पैने विवेचन, रोचक आलोचना, पात्रों की जो कि सच्चे पात्र थे रचना द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति आदि ऐसे महत्त्वपूर्ण रूपों का अनुकरण किया। यद्यपि उन्होंने कहानी को अपना प्रमुख आश्रय नहीं बनाया (उनका मुख्य अस्त्र निबन्ध था) उनकी अधिकतर विशिष्ट कहानियाँ उनके निबन्धों की ही भांति सामाजिक कुरीतियों को बेनक़ाब करती हैं—वे कुरीतियाँ जो एक अग्रगामी चिन्तक एवं योद्धा के लिये चित्रित करना कुछ विचित्र-सा लगता है। 'पागल की डायरी' में और खासकर 'आह क्यू की सच्ची कहानी' में यह बड़ी सुन्दरता से और महान् रूप में विकसित हो चुकी हैं।

वास्तव में, 'आह क्यू' जैसी कृति जिसने शास्त्रीय आलोच-

नात्मक यथार्थवाद के विचार और लड़ाकू भावों को इस उच्चता पर पहुँचा दिया, अब तक के लड़ाकू आलोचनात्मक भावों को विकसित किया और ऐसी कलात्मक निपुणता प्राप्त कर ली यह सब दरअसल संसार भर के साहित्य के इतिहास में बेजोड़ है। 'आह क्यू' केवल शैली की दृष्टि से ही शास्त्रीय आलोचनात्मक यथार्थवाद की परंपरा से अलग हट कर एक नया शानदार विकास था। इस प्रकार शैली और टेकनीक के क्षेत्र में भी लुहसूँ एक विशिष्ट कलाकार सिद्ध हुए जिन्होंने विश्व-साहित्य को एक नया योग दिया।

सामाजिक अन्यायों का चित्रण ही दरअसल लुहसूँ की कहानियों की मूल विशेषता थी और उसी के कारण उन्हें कहानीकारों में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त हुआ था। यद्यपि लुहसूँ की कहानियाँ संख्या में कम हैं तथापि 'आह क्यू' और 'पागल की डायरी' जैसी रचनाओं में उनके पात्र इतनी सफलता से चित्रित हुए हैं, उनकी शैली इतनी सुन्दर बन पड़ी है, उनकी बौद्धिक विषय-वस्तु इतनी उच्च है कि कहानीकार की हैसियत से वह न केवल इतने ऊँचे उठ जाते हैं बल्कि मेरी राय में तो भविष्य में भी शतियों तक वह चीनी और विश्वसाहित्य में अमर साहित्यकार बने रहेंगे।

ज़ाहिर है कि लुहसूँ का प्रमुख अस्त्र उनका निबन्ध था और उन्हें सर्वाधिक सफलता भी निबन्धों में ही मिली थी। निबन्ध भी चीनी या विश्व-साहित्य में कोई नया रूप नहीं था। लेकिन निबन्ध में उस महान् लड़ाकू भावना और प्रभावशीलता का पुट जो

लुहसू ने दिया और जो कलात्मक प्रतिभा प्राप्त की, जो राजनैतिक वाद-विवाद के विषयों को उनकी आत्मा या प्रखरता को और तर्क के पैनेपन को किसी प्रकार क्षीण किये बिना कविता में ढाला यह सब चीनी और विश्व-साहित्य दोनों में अपूर्व था। लुहसू की विशिष्ट सफलता और स्थान हमारा विशेष ध्यान आकर्षित करते हैं। फिर भी, 'आह क्यू' और 'पागल की डायरी' में निबन्धों की ये महान् विशेषताएँ मौजूद हैं और उनकी मौजूदगी कोई आकस्मिक नहीं है। यह सब इसलिये है कि लुहसू ने अपनी कहानियों और खास तौर से 'आह क्यू' और 'पागल की डायरी' के प्रति एक राजनैतिक विवादी, योद्धा और अग्रगामी चिन्तक का दृष्टिकोण अपनाया था। उन्होंने अपनी कहानियों से भी वही उद्देश्य सिद्ध किया जो वह अपने निबन्धों से सिद्ध करना चाहते थे—यानी कि उनकी कहानियों ने भी एक क्रान्तिकारी भूमिका का निर्वाह किया।

लुहसू ने अपने जीवन का उद्देश्य एक राजनीतिक-विवादी और संघर्ष के मार्गदर्शक के रूप में चुना और जिस अंश में उनकी कहानियों में निबन्ध प्रतिबिंबित हुए, उसी अंश में उन्हें प्रतिभा भी प्राप्त हुई, क्योंकि वह ऐसे ही दृष्टिकोण से लिखी गईं थीं और इसके अभाव में लुहसू की विशेषताओं का अपर्याप्त चित्रण हुआ और वे अपेक्षाकृत फीकी प्रतीत हुईं। इसका स्पष्ट प्रदर्शन 'नाहॉ' और 'पॉग ह्वॉग' की अधिकतर श्रेष्ठ कहानियों की तुलना से होता है।

इसलिये यदि हम 'आह क्यू' की सैद्धान्तिक और कलात्मक विशेषताओं को समझना चाहते हैं तो पहले हमें चाहिये कि हम यह समझ लें कि लेखक ने अपनी कला के प्रति एक राजनीतिक-विवादी और अग्रगामी चिन्तक का दृष्टिकोण अपनाया था। प्रारम्भ में ही इसे समझ लेना महत्त्वपूर्ण है। कम से कम मैं तो इसे अभिन्न आवश्यकता समझता हूँ। इसलिये यदि हम 'आह क्यू' को उसी प्रकार देखें जैसे कि अन्य कहानियों का विवेचन करते हैं तो इस महान् कृति की मूल भावना की व्याख्या करना कठिन होगा।

आह क्यू एक महान् कृति है जो लुहसुँ के प्रारंभिक काल की सैद्धान्तिक एवं कलात्मक विशेषताओं को सर्वोच्च ढंग से अभि-व्यंजित करती है। इसमें योद्धा और अग्रगामी चिन्तक लुहसुँ की विचारधारा पूर्ण रूप से प्रतिबिंबित हुई है।

इस कृति के विचार लुहसुँ के उसी समय में लिखे गये मार्मिक लेखों में भी प्रतिबिंबित हुए थे। इस प्रकार वे निबन्ध 'आह क्यू' पर और वह किस प्रकार उद्भूत हुआ इस पर एक सुन्दर टीका प्रस्तुत करते हैं।

स्पष्ट ही है कि 'आह क्यू' साधारणतः किसानों के बारे में लिखी गई पुस्तकों में से नहीं है। इसमें १६११ की क्रान्ति की जो मूलरूप से किसानों का विद्रोह था, असफलता से सीखे गये सबकों का प्रतिबिंब है और इसमें निश्चित रूप से देहातों व किसानों का चित्रण किया गया है। साथ ही किसान-विद्रोह की झलक भी इसमें मिलती है।

लेकिन आह क्यू एक चरित्र-विशेष की दृष्टि से मानसिक स्थिति का चित्रण व वर्णन है न कि व्यक्ति का।

आह क्यू को एक आवारा खेतिहर मजदूर के रूप में चित्रित करना वास्तव में अच्छा और सजीव चित्रण होगा, पर फिर भी वह केवल चीनी खेतिहर मजदूर या आवारा किसान के चरित्र-विशेष तक ही सीमित नहीं है। क्योंकि उसके प्रमुख लक्षण सभी आह क्यू-वादियों के लिये सही व उनकी विशेषता लिये हुए हैं, उन सब के लिये वे लागू होते हैं जो "नैतिक विजय प्राप्त करने के ढंग अपनाते हैं।" उन तमाम अपने आपको धोखा देने वालों पर चाहे वे किसी भी वर्ग के क्यों न हों, ये सब लक्षण शत-प्रतिशत सही उतरते हैं।

आह क्यू एक मानसिक स्थिति विशेष का नाम है, आह क्यू-प्रवृत्ति की अभिव्यंजना का नाम है और आह क्यू के समग्र व्यक्तित्व में लुहसूँ ने विभिन्न वर्गों और विभिन्न प्रकारों के आह क्यू-वाद को एकत्र किया है और इन सबको वह राष्ट्रीय न्यूनताओं का प्रदर्शन कहते हैं।

आह क्यू के व्यक्तित्व की विचारधारा और उसके चरित्र के सम्बन्ध में यह पहली बात अवश्य हृदयंगम कर लेनी चाहिये। अब मैं इस पर विचार करूँगा कि यथार्थवाद के उस महान गुरू लुहसूँ ने किस प्रकार इस विषय पर रचना की।

आह क्यू कोई काल्पनिक वस्तु नहीं है बल्कि जीवित व्यक्ति है। जिस संसार में वह रहता है वह भी कोई स्वप्न-संसार या

परिस्तान नहीं है बल्कि १६११ की क्रांति के समय का वास्तविक और ठोस कृषि-प्रधान समाज है। लेखक ने कहानी को न केवल अत्यंत उच्च कोटि के बौद्धिक विषय-वस्तु का पुट दिया है बल्कि उन्होंने सजीव, स्पष्ट पात्र और घटनाएँ भी चित्रित की हैं। चरित्र-चित्रण द्वारा एक आदर्श को चित्रित करने के अपने कार्य में वह जीवन के पेचीदा सामाजिक सम्बन्धों में बड़े गहरे पैठे हैं और इस प्रकार उनका चरित्र-चित्रण प्रतिरूपता के नितांत आधीन हो गया है ताकि इन आदर्शों द्वारा जिन विचारों को व्यक्त किया गया है वे चरित्र-चित्रण से महत्त्व न खो बैठे। साथ ही चरित्र सब आदर्शभूत हैं परन्तु हवाई नहीं। वर्ग-संघर्ष के दौरान में वे सब के सब जीवित आकृतियाँ दीख पड़ते हैं जो अपने वैयक्तिक लक्षण छोड़े बिना अपनी वर्ग-विशेषताएँ रखे हुए हैं। संक्षेप में, आह क्यू का व्यक्तित्व यदि समग्र रूप से एक आवारा खेतिहर मज़दूर के चित्रण की दृष्टि से भी लिया जाय तो भी सजीव और आदर्शभूत है। न केवल इस खेतिहर मज़दूर का दैनिक जीवन इतनी स्पष्टता से वर्णित किया गया है बल्कि उसके ज़रिये हम सामाजिक सम्बन्धों के सम्पूर्ण विस्तार का दर्शन करते हैं। उनकी स्वतः की सहिष्णुता व विद्रोह का परस्पर अन्तर्द्वन्द्व किसानों और उनके उत्पीड़कों के परस्पर अन्तर्द्वन्द्व का प्रतिबिंब है। उसका भाग्य उसके समय के दरिद्र खेतिहर मज़दूर का भाग्य है। जब लुहसूँ ने इस सर्वश्रेष्ठ कृति की रचना की तो तब तक उन्होंने वर्ग-चैतन्य नहीं प्राप्त किया था। लेकिन फिर भी उन्होंने हमें १६११ की क्रांति

के ज़माने की सच्ची स्थितियों का और जनता के वर्ग-सम्बन्धों का बड़ा ही पैना, स्पष्ट और विस्तृत चित्रण दिया है। इसमें लुहसूँ ने वास्तविक किसान का चित्रण किया है और ग्राम्य-जीवन तथा वर्ग-संघर्ष का एक विस्तृत भाग प्रदर्शित किया है।

जबकि आवारा खेतिहर मज़दूर आह क्यू वाद का ही एक अंश समझा जा सकता है वे दोनों एक दूसरे से भिन्न भी समझे जा सकते हैं।

कहना चाहिये कि आह क्यू उन तमाम "साधनों का जो नैतिक विजय प्राप्त करना चाहते हैं", सभी प्रकार के आत्म-भ्रम, सब प्रकार के दासतापूर्ण पराजयवाद, जिसका उल्लेख मैं बाद में करूँगा, एक सम्मिलित मूर्त रूप है। लेकिन इन तमाम चीज़ों के लिये एक आवारा खेतिहर मज़दूर को जिम्मेदार ठहराना भी उचित नहीं है। इस प्रकार आह क्यू और आहक्यूवाद अभिन्न समझे जा सकते हैं पर साथ ही भिन्न भी हैं।

लुहसूँ इन दोनों को भिन्न भी रखते हैं और इन्हें मिला भी देते हैं। आइये हम विवेचन करें कि किस आधार पर और किस सम्बन्ध में यह सब हुआ।

पहले यदि हम लेखक के राजनीतिक विचारों की जांच करलें तो हमारे विवेचन में आसानी हो जायगी। इस प्रकार हम इस महान् अग्रगामी चिंतक और लेखक के कृतित्व व उनके विचार की विशेषताओं को बेहतर तरीके से समझ सकेंगे।

इस समय हमें आह क्यू की सामाजिक स्थिति पर भी बहस

करने की जरूरत नहीं। सवाल तो यह है कि आखिर आह क्यू में वह कौन सी प्रवृत्ति समाई थी जिसे हम आहक्यूवाद की संज्ञा देते हैं?

स्वतः और दूसरों के प्रति ग्लानि, आघातों को सरलता से भूल जाने की क्षमता, स्वतः को अपनी विफलताओं पर संतुष्ट करने के लिये "नैतिक विजयों" का सहारा लेना, अधिक बलशाली व्यक्ति से परास्त होने पर या उनके द्वारा उत्पीड़ित होने पर अपने से कम बलशाली व्यक्ति पर क्रोध उतारने का स्वभाव—यह सब एक दूसरे से सम्बन्धित हैं और इनमें से मुख्य है "नैतिक विजय" का प्रयोग।

इस प्रकार का "राष्ट्रीय अवगुण" वास्तव में दासतापूर्ण प्रवृत्ति है। जाहिर है कि यह प्रवृत्ति एक आवारा खेतिहर मजदूर में पाई जायगी जो मांचू वंश के समय वास्तव में गुलाम था, जिसने विशेषकर अपने संघर्ष के और विफलता के दौरान में अनन्त शोषण, उत्पीड़न, प्रहार, ग्लानि और गालियां सही थीं लेकिन एक बार लुहसूँ ने आह क्यू जैसे व्यक्ति को खोजा, उसे सुगढ़ बनाया और आहक्यूवाद और उसकी प्रवृत्ति फौरन सब तरफ जानी जाने लगी और उसने ऐसा आभास दिलाया कि वह उनमें सर्वाधिक सामान्य प्रवृत्ति है।

लुहसूँ ने इस "राष्ट्रीय अवगुण" को वर्ग-जागरूकता के दृष्टिकोण से नहीं समझा लेकिन जाहिर है कि यह एक वर्ग-समाज की उपज है और सामंती और अर्धसामंती तथा अर्ध-औपनिवेशिक

समाज के वर्ग-संघर्ष को प्रतिबिंबित करती है। हमें यह नहीं देखना है कि आया लुहसूँ का वर्ग-जागरूक दृष्टिकोण था या नहीं बल्कि आया उन्होंने चीनी सामंती और अर्ध-सामंती, अर्ध-औपनिवेशिक समाज के बारे में उद्घाटन किया या नहीं और आया यह "राष्ट्रीय न्यूनता" विस्तृत रूप में व्याप्त थी और गहरा सामाजिक महत्त्व लिये हुए थी।

इसका हमारा उत्तर 'हां' में है। उन्होंने सामंती, अर्ध-सामंती और अर्ध-औपनिवेशिक समाज का और उससे भी बढ़कर ऐसे समाज के अन्धे शासन और पाशविक विदेशी आक्रमण का सफलतापूर्वक सच्चा चित्रण किया है। उन्होंने इंगित किया है कि "राष्ट्रीय न्यूनता" विभिन्न रूपों में सभी वर्गों में मौजूद थी और उसका व्यापक महत्त्व था। (उसका वर्ग-स्वभाव विभिन्न रूपों में देखा जाता है)।

और इतनी व्यापक होने के कारण जाहिर है उसकी जड़ें प्राचीन इतिहास में जमी हुई थीं।

यह "राष्ट्रीय अवगुण" जो सभी वर्गों में विभिन्न रूपों में विद्यमान है सदियों पुराने सामंती निरंकुश शासन तथा विदेशी आक्रमण और क्रांतिकारी संघर्षों की अनेक असफलताओं का ही परिणाम है।

लुहसूँ ने अपने निबंधों में इसकी स्पष्टता से व्याख्या की है। चीनी इतिहास का विवेचन करने की दृष्टि से उन्होंने बहुत कुछ लिखा है और यह बताया है कि सदियों से चीनी जनता को

सामंती निरंकुशता और पाश्विक विदेशी आक्रमण द्वारा जो भौतिक और आध्यात्मिक क्षति पहुँचाई जाती थी वह अपनी पराकाष्ठा को पहुँच चुकी थीं। यही विषय उनकी सारी रचनाओं में पाया जाता है परन्तु इसके बारे में उनका अत्यन्त संक्षिप्त वक्तव्य है शायद उनका वह निबंध "दिये की रोशनी में घसीटे गये शब्द"। उसमें उन्होंने बताया है कि चीनी जनता इतने लम्बे समय तक निरंकुश शासन और पाश्विक आक्रमणों के अधीन रही कि वह या तो "गुलाम बन जाना चाहती थी पर वह भी नहीं हो सकती थीं", या "फिर वक्ती तौर पर गुलाम बन जाने में सफल हो गई।"

लुहसू ने प्रदर्शित किया है कि एक दिन के लिये भी चीनी जनता ने मनुष्यों की भांति जीवन नहीं बिताया। अपने सामंती आक्रांताओं द्वारा गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़े हुए वे कुछ समय के लिये तो गुलाम ही थी और वह इतनी दुःखप्रद नहीं थी। यही वह तथाकथित "शांति का युग" था। लेकिन कई बार तो ऐसा भी वक्त आया जब वे गुलाम तो क्या पशु भी न बन सके। यह "झगड़े के युग" का क़िस्सा है और वह पुरानी कहावत सत्य ही है कि "झगड़े के समय मनुष्य कुत्ते से भी बदतर हो जाता है।"

जब क्रूर आक्रमणकारी विजेता और स्वामी बनकर आये तो उस समय के शासक भी दास बन गये। लेकिन बाद में तो अपनी "चीनी संस्कृति" के साथ अपने विदेशी आक्रान्ताओं को प्रसन्न करने की ग़रज़ से उन्होंने चीनी जनता से खूब मार-काट की और उनकी खुलकर बलि दी।

दीर्घ-कालीन सामंती शासन और विदेशी आक्रमण का यही इतिहास है जिसकी लुहसू ने पुष्टि की है। और हम उनके इस सत्य को नहीं झुठला सकते।

लेकिन हमलावरों की विजय चीन के शासकों के लिये पराजय बल्कि पराजय से बदतर साबित हुई। जब गुलामों के शासक खुद गुलाम हो जाते हैं तो वे अपने आपको दूसरों की अपेक्षा कहीं गिरा हुआ और दबा हुआ बताते हैं। इन सब का सबूत इन कहावतों में मिलता है जैसे—"संस्कृति नष्ट-भ्रष्ट हो रही है," या "सिर्फ फूहड़ मवालियों में ही मर्दानगी होती है।" और इससे भी बढ़कर प्रमाण तो यह है कि तमाम विदेशी आक्रमक जनता द्वारा निकाले गये थे, शासकों द्वारा नहीं। फिर भी, अपनी पराजय में भी प्राचीन शासकों को कुछ सांत्वना की आवश्यकता थी जिससे वे अपने आपको और दूसरों को धोखा दे सकते और यह सांत्वना उन्हें क्षुद्र पराजयवाद और समर्पण में मिली। यही मात्र साधन था जिससे उन्होंने मानसिक रूप से "पराजय को भी विजय में परिणत कर लिया।"

"नैतिक विजय" प्राप्त करने का यही एक प्रामाणिक साधन था।

इस प्रकार यह दासतापूर्ण या अधिक शुद्धता से कहना चाहिये चाटुकारितापूर्ण पराजयवाद मुख्यतः शासक वर्ग में ही विद्यमान था। (सम्राट्, सरकारी पदाधिकारी, जागीरदार भद्रलोक) और इसका तत्त्व—"नैतिक विजय" प्राप्त करने की विधि की प्रतिष्ठा

और उसका कापीराइट—उसी परास्त शासक-वर्ग की मिल्कियत है। लुहसूॅ ने यही चीज़ हमें अपने सब कृतित्वों में बताई है।

यह बिल्कुल सही है। सारा पराजयवाद और समर्पणवाद "अपने यहाॅ के गुलामों से विदेशी हमलावर बेहतर हैं" की गद्दारी और विश्वासघात, सारा विश्वास साम्राज्यवादियों पर; विदेशियों पर केंद्रित सारी चापलूसी सारा पूंजीवाद, सभी कुछ विभिन्न रूपों में उसी चीज़ के प्रदर्शन हैं।

और इन सब प्रवृत्तियों से दोषमुक्त होने के भी साधन थे। आत्म-कपट और अपने आपको धोखा देने की और "नैतिक विजय" प्राप्त करने की उनकी अपनी भिन्न रीतियां भी थीं।

प्रतिक्रियावादी शासक वर्ग की संकीर्ण राष्ट्रीयता का प्रयोग या तो राष्ट्रीय अल्पमतों का उत्पीड़न करने के लिये होता था या अपनी पराजय पर सान्त्वना प्राप्त करने के लिये वे उसका आश्रय लेते थे। इसलिये किसी भी प्रकार के राष्ट्रीय गौरव या सच्चे आत्म-विश्वास की उसमें कमी है।

प्रतिगामी शासक वर्ग का पराजयवाद और कपटपूर्ण "नैतिक विजय" केवल उन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि वे जनता और राष्ट्र के लिये भी नितान्त हानिकारक हैं, क्योंकि शासकवर्ग उनका प्रयोग न केवल अपनी सांत्वना और आत्म-छलछिद्र के लिये करता है बल्कि जनता को धोखा देने और उन्हें उत्पीड़ित करने और आक्रमणकारियों के प्रति उनकी लड़ाकू भावना और प्रति-

शोध की भावना को कमज़ोर बनाने और उसका गला घोंटने में भी करते हैं।

इसलिये हमारे महान् राष्ट्रीय हीरो और जन-योद्धा और हमारे साहित्य के लड़ाकू मार्गदर्शक लुहसू के लिये यह नितान्त आवश्यक था कि वह इस कुरीति की ओर संकेत करें और उस पर निर्दयता से प्रहार करें।

हालांकि उस समय लुहसू का कोई वर्ग-दृष्टिकोण नहीं था पर उनका विवेचन इतिहास-प्रतिपादित और स्पष्ट तथा शुद्ध है। उन्होंने पहले तो यह बताया कि यह आध्यात्मिक विष सामंती या अर्ध-सामंती शासकवर्ग से और उसके चाटुकारों से सम्बन्ध रखता है। यह सही विवेचन और निर्णय ही वास्तव में वर्ग-दृष्टि कोण है। क्योंकि लुहसू ने जनता की ओर से इस दुर्गुण और कुरीति पर प्रहार किया था इसलिये उनका नैतिक रवैया दृढ़ और स्पष्ट है। वह हमारे राष्ट्र के महान् भविष्य का और हमारी विजयी जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं; गुलामों के विद्रोह और मुक्ति की वह भविष्यवाणी करते हैं; राह के रोड़े हटा कर नये चीन के नये संघर्ष का मार्ग प्रशस्त करते हैं; चीनी साहित्यिक क्रान्ति के इस महान् मार्ग-दर्शक का यही लड़ाकू रवैया है और यही उसकी लड़ाकू भावना है। (यद्यपि उस समय उनका रवैया एक क्रांति-कारी निम्न पूँजीवादी का था न कि मज़दूरों और किसानों का।)

इस प्रकार, वस्तुगत रूप से लुहसू ने एक नये, उभरते हुए वर्ग का प्रतिनिधित्व किया, जबकि मनोगत रूप से उन्होंने अपने आप

को उस वर्ग का विरोधी और शत्रु बताया जिस पर उन्होंने प्रहार किये थे और "उसके संहार पर किसी प्रकार खेद प्रकट नहीं किया।" इस प्रकार के रवैये में वह न केवल नीत्शे से मत-भेद रखते थे बल्कि गोगोल से भी; क्योंकि पहले ने अपने स्वतः के पतनशील प्रतिगामी बुर्जुआ वर्ग पर विलाप किया और दूसरे ने अपने स्वतः के ज़मींदार वर्ग के प्रति सहानुभूति प्रगट की।

इससे इस अग्रगामी चिन्तक, जन-क्रान्ति के इस लेखक की श्रेष्ठता, विचारों की गम्भीरता और दृष्टिकोण की सूक्ष्मता प्रमाणित होती है।

यथार्थवाद के महान् गुरू लुहसूँ अपनी ग्राह्य-शक्ति से आह क्यू जैसे आदर्श में हालांकि सामंती तथा अर्ध-सामंती शासक-वर्ग और उसके चापलूसों के सभी पराजयवाद और "नैतिक विजय" प्राप्त करने के तरीक़ों का समावेश किया है फिर भी उसमें किसी प्रकार की उलझन बाक़ी नहीं रहती है; क्योंकि लुहसूँ आवारा खेतिहर मज़दूर आह क्यू और उसी की प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों के प्रति भिन्न प्रकार का दृष्टिकोण रखते थे। इस प्रकार आह क्यू में हमें आहक्यूवाद के सभी रूप दीख पड़ते हैं और यह आभास नहीं होता कि ये किसी आवारा खेतिहर मज़दूर की प्रवृत्तियां हैं।

लेकिन आहक्यूवाद का एक और भी, कहीं अधिक महत्वपूर्ण पहलू है, अधिक महत्वपूर्ण इसलिये क्योंकि यह अधिक घनिष्ठता और कष्टप्रद ढंग से आह क्यू से जुड़ा हुआ है।

जब लुहसूँ ने चीन के इतिहास का विवेचन किया, सदियों से

चले आये सामंती शासन और विदेशी आक्रमण का लेखाजोखा लिया और जनता की दासता का चित्रण किया तो साथ ही उन्होंने जनता के युगों पुराने विद्रोह और संघर्ष का भी विवेचन और चित्रण किया। अपने प्रारम्भ काल की रचनाओं में उन्होंने इसे विरोधी पक्ष के चित्रण द्वारा प्राप्त किया। फिर भी जन-संघर्ष बड़ी सुन्दरता और मार्मिकता से उसमें उभर कर आया है और साथ ही लुहसूँ का अपनी कौम में विश्वास और आस्था स्पष्ट दीख पड़ती है। बाद की रचनाओं में यह और भी स्पष्ट और उभर आया है। इस प्रकार दोनों पक्षों के चित्रण द्वारा लुहसूँ हमारे सम्मुख बड़ी स्पष्टता से यह प्रस्तुत करते हैं कि चीनी जनता किस प्रकार विद्रोह के लिये उठी और उसने गुलामों और मवेशियों की स्थिति में भी अपने सामंती और विदेशी आक्राओं के शासन काल में उनके खिलाफ संघर्ष किया। इसके अलावा वह हमें बताते हैं कि गुलामी में जकड़ी हुई जनता के इन विद्रोहों और संघर्षों के ही कारण राष्ट्र अपना विश्वास, आस्था, निर्भीकता और कट्टरता को सुरक्षित रख सका। यह सब बहुत ही स्पष्ट और साफ है।

लेकिन लुहसूँ हमें यह भी बताते हैं कि इतिहास में उत्पीड़ित गुलामों के एक के बाद दूसरे सभी विद्रोह बार-बार असफल रहे। पराजय जनता की दृढ़ता और चरित्र को इस्पाती बना सकती है और बल प्रदान कर सकती है पर साथ ही वह उनमें पराजयवाद और अपने आप को धोखा देने वाली "नैतिक विजय" की दुर्भावना उत्पन्न कर सकती है। यह भी निर्विवाद सत्य है।

इसलिये उत्पीड़न का इतिहास आहक्यूवाद के जन्म का सच्चा इतिहास है। आहक्यूवाद रक्त से सिंचित हुआ था। उससे जनता को कष्ट पहुँचा, लुहसूँ पीड़ित हुए, फिर भी उन्होंने इसकी घोर निन्दा की और इससे घृणा की और इस पर निर्दयता से प्रहार किये और क्योंकि यह गुलामों का पराजयवाद था लेकिन गुलामों को—जनता को—पराजयवाद से दूर रहना चाहिये। उन्हें परास्त होने के बावजूद संघर्ष चालू रखना चाहिये और तब तक लड़ना चाहिये जब तक कि उनकी दासता की बेड़ियाँ टूक-टूक न हो जायें।

जनता को अपनी लड़ाकू परम्परा और अपने विजयी भविष्य का ज्ञान होना चाहिये पर उन्हें अपनी न्यूनताओं को नहीं भुलाना चाहिये। यही वजह है कि मार्ग-दर्शक लुहसूँ ने आह क्यू की नुक्ता-चीनी की और आहक्यूवाद पर आघात किया।

यहां हम लुहसूँ के प्रारम्भिक विचारों के सूत्रों में से एक की व्याख्या करेंगे। मेरा संकेत उस तथाकथित "व्यक्ति की मुक्ति" और "जनता के चरित्र का पुनर्गठन" की ओर है। हम सब जानते हैं कि लुहसूँ के प्रारम्भिक भौतिकवादी विचार-धारा का सैद्धांतिक आधार डार्विन का विकास का सिद्धांत था जबकि उनके विचारों की सामाजिक बुनियाद 'चीनी जनता का क्रांतिकारी संघर्ष' था। प्राकृतिक चुनाव के सिद्धान्त से उन्होंने जन-क्रांति और राष्ट्र की सेवा करने की भावना प्राप्त की।

उनका तर्क यह था कि यदि प्राकृतिक चुनाव में चीनी जनता

जीवित रही तो उनके वैयक्तिक स्वभावों को मुक्त करना आवश्यक है ताकि वे सबल और अच्छे व्यक्ति बन सकें, इसलिये जनता का चरित्र फिर से ढाला जाना चाहिये। इसे यदि कोई क्रांतिकारी कार्यवाही समझ ली जाय तो वह बेकार सिद्ध होगी क्योंकि ऐसा करना उलटे बांस बरेली को ले जाना है। फिर भी, लुहसूँ के समय में जनता के लिये जो उनकी लड़ाकू भावना और हमदर्दी थी उसमें जनता को फिर से ढालने और उन्मुक्त करने का यह विचार उन्हें संघर्ष के लिये उभारना आदि तो कम से कम प्रगतिशील और क्रांतिकारी कार्य था। उस समय के बुद्धिजीवी के लिये जिसने इसे जनता के प्रति अपना कर्तव्य समझा और वफादारी के साथ उसका निर्वाह किया, जनता को जागृत करने का एक शानदार कर्तव्य था और लुहसूँ ने ठीक यही किया भी। क्रांति को जो उनकी देन है हम सब उसे स्वीकार करते हैं और उनकी कोई चीज़ भी आलोच्य नहीं समझते। साथ ही राष्ट्रीय चरित्र को फिर से ढालने के अपने विचार से आगे बढ़कर वह शीघ्र ही समाज-सुधार की और प्राचीन समाज की कुरीतियों को दूर करने की ओर अग्रसर हुए। यद्यपि उनका उस समय कोई वर्ग-दृष्टिकोण नहीं था फिर भी द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की ओर यह बहुत बड़ा क़दम था और उनके विचारों की आधारशिला और भी दृढ़ और अटल बन गई थी और उनका लड़ाकूपन कहीं अधिक प्रभावशाली बन गया था। चार मई के आंदोलन के समय जब उन्होंने 'पागल की डायरी' 'आह क्यू की सच्ची कहानी' और दूसरी सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ

लिखीं उनकी मानसिक स्थिति कुछ इसी प्रकार की थी। उनकी विचारधारा की विशेषताएँ उस दौर में लिखे हुए उनके उपन्यासों और निबंधों में स्पष्ट रूप से झलकती हैं।

मैं इनका इसलिये जिक्र कर रहा हूँ ताकि इस कहानी से संबन्धित कुछ सूत्रों का निरूपण कर सकूँ। पहले तो इस रचना के समय लुहसूँ अब भी "राष्ट्रीय अवगुण" ढूंढ रहे थे और उन्होंने यह लोगों के दासतापूर्ण पराजयवाद और "नैतिक विजय" के प्रयोग के घृणित आहक्यूवाद में पाया जिस पर उन्होंने घोर प्रहार किया।

दूसरे, वह पहले से ही प्राचीन समाज की कुरीतियों को नग्न करने पर अधिक ध्यान दे रहे थे बनिस्बत "राष्ट्रीय चरित्र" के। इस प्रकार उन्होंने आहक्यूवाद के "सामाजिक स्वभाव" और ऐतिहासिक उत्पत्ति का पैना, स्पष्ट और सही चित्र प्रस्तुत किया। अतएव जनता के उत्पीड़न का इतिहास और आहक्यूवाद का जन्म बड़ी सफाई से चित्रित हुआ है और वर्ग-संघर्ष भी बड़ी स्पष्टता से प्रस्तुत किया गया है। जनता के उत्पीड़कों के प्रति उनकी घृणा है वह जनता की न्यूनताओं से कहीं बढ़कर है। प्रकार इस रचना में वह किसानों,आवारा खेतिहर मजदूर आहक्यू को जगाना चाहते थे और साथ ही वह सामाजिक क्रांति के लिये संघर्ष कर रहे थे।

तीसरे, हम यह सवाल कर सकते हैं कि यथार्थवाद के इस महान् गुरू ने कोई और पात्र जैसे कोई साधारण अफसर या

कूट-नीतिज्ञ, जमींदार या विद्वानों के परिवार के किसी नवजवान, कोई सफल पूँजीपति या लेखक, कोई प्रोफेसर या विद्यार्थी को क्यों नहीं चुना? ये सभी आहक्यूवाद की अधिकतर विशेषताएँ लिये हुए हो सकते थे। इन सबको छोड़कर आखिर उन्होंने एक आवारा खेतिहर मजदूर आह कुई को ही क्यों चुना? जाहिर है कि इस प्रकार के पात्रों का भी चुनाव बहुत ही बढ़िया चित्रण प्रस्तुत करता और गोगोल की "मृतात्माएँ" या गोन्ज्ञालोव के 'ओब्लोमोव' की नाईं समाज पर बहुत भारी प्रभाव भी डाल सकता था। लेकिन मैं समझता हूँ कि इसकी वजह थी लुहसूँ की क्रान्तिकारी विचारधारा; उनकी जनता में रुचि और उनका यह विश्वास कि क्रांति किसानों पर निर्भर है चाहे उन्हें जागृत किया जाय या न किया जाय। इसलिये उन्होंने देहात की ओर दृष्टि डाली। इसके अलावा लुहसूँ का अपने लड़कपन में किसानों से कुछ नाता-रिश्ता रह चुका था और इसीलिये उन्हें उन देहातियों के भाग्य प्रति अधिक चिन्ता हुई। इसलिये लुहसूँ को किसानों से बहुत आशाएँ थीं, वह उनकी ओर झुकना चाहते थे, उनसे सम्बन्ध रखते थे, उनके अन्यायों से उन्हें गहरी हमदर्दी थी और वह चाहते थे कि वे उठ खड़े हों और लड़ें। इस वजह से वह और भी बेचैन थे और उनकी न्यूनताओं व कमजोरियों से उन्हें पीड़ा होती थी। यही कारण है कि लुहसूँ के आह क्यू के प्रति विचार मिश्रित हैं। इस आवारा खेतिहर मजदूर से जो शोषित है, उत्पीड़ित है, जिसके साथ अन्याय होता है और जिसे धोखा दिया

जाता है पर फिर भी जो बुनियादीतौर पर भला रहता है उन्हें अपार प्रेम है। परन्तु इस किसान की उदासीनता उन्हें बेचैन कर देती है और वह उसका पिछड़ापन और सब से बढ़कर उसका अपने शत्रु को भूल जाने का ढंग और उसकी "नैतिक विजय" प्राप्त करने की विधि जो उसके पूर्वजों से विरसे में उसे मिली है इन सबसे वह नफरत करते हैं। इस प्रकार के रवैये से आह क्यू को उत्तेजना मिलती है और सब यही चाहते हैं कि वह विद्रोह करे। इस प्रकार आहक्यूवाद का गुलामों के विद्रोहों और जनक्रांति के आगे पराजयवाद का और उन सब के साथ "नैतिक विजय" प्राप्त करने के प्रयोग का श्रेय वह इस खेतिहर मज़दूर को देते हैं, यह समझ कर कि यही सबसे पहले जनता के अवगुणों को दूर कर सकेगा। उनका उद्देश्य पूर्ण और तीव्र था।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है जो भी लुहसूँ ने आह क्यू में प्रतिगामी शासक-वर्ग के आहक्यूवाद का चित्रण किया था पर उसमें कोई उलझन या दुविधा नहीं पैदा होती बल्कि इससे तो जनता अपनी न्यूनताओं को और भी बेहतर ढंग से समझ सकती थी। इस प्रकार लुहसूँ उनके वर्गशत्रु के विषैले प्रभाव को धो रहे थे। और यह सब भी एक मार्ग-दर्शक, चिंतक, योद्धा और राजनीतिक विवादी के लक्षणों के अनुकूल ही था।

इसके अतिरिक्त लुहसूँ ने जो समय चुना है वह १९११ की क्रांति का समय है और उन्होंने इसमें उस क्रांति की विफलता को प्रतिबिंबित किया है। इससे जाहिर होता है कि उनका यथार्थवाद

चीनी क्रांति का मार्ग खोज रहा था और वह क्रांतिकारी यथार्थ से घनिष्ठता के साथ जुड़ा हुआ था। १९११ की क्रांति ने यही सबक सिखाया था कि वह इसलिये नाकाम हुई थी क्योंकि किसान तब तक अच्छी तरह नहीं उभरे थे और अपनी स्थिति से पूर्णरूपेण परिचिति न थे जबकि अर्ध-क्रांतिकारी पूंजीवाद किसानों को नहीं मिलाना चाहता था और अब तक बची हुई सामन्ती शक्तियों को आह क्यू जैसे जागरूक खेतिहर मजदूरों को गोली से मरवा डालने में भी मदद दे रहा था। यही बुनियादी ऐतिहासिक सबक था। इसलिये "आह क्यू की सच्ची कहानी" महान् महत्त्व और यथार्थ-वादी विषयवस्तु पर लिखा हुआ एक राजनीतिक निबन्ध समझा जाना चाहिये।

स्वभावतः ही लुहसूं ने पहले तो किसान जनता की शक्ति और क्रांतिकारी स्वभाव को कम करके आंका था यहां तक कि कुछ संदेह व निराशावाद भी प्रगट किया था। उनके पहले सोचने के ढंग में यही एक कमजोरी थी जो उनकी रचनाओं में भी प्रतिबिंबित हुई है लेकिन बाद को किसानों को जगाने की उनकी अभिलाषा और क्रांति में उनकी आस्था इस कमी को पूरा कर देती है। फिर उन्हें किसानों की क्रांतिकारी मांगों और उनके भविष्य में बहुत गहरी आस्था थी और इसीलिये देश के सामंती शासन पर प्रहार करने में और किसान-क्रांति का मार्ग प्रशस्त करने में उन्होंने कुछ न उठा रखा।

आह क्यू और लुहसू के विचारों तथा उनके दृष्टिकोण को मैं इसी प्रकार समझता हूँ। साथ ही मैं इस कहानी को यथार्थवादी साहित्य में एक महान् और विशिष्ट संगमील समझता हूँ। हालांकि यह भी समाजवादी यथार्थवाद का साहित्य नहीं है फिर भी शास्त्रीय आलोचनात्मक यथार्थवाद पर यह बहुत बड़ी प्रगति है जिससे कि क्रांतिकारी यथार्थवाद अपने नये विकासों के साथ प्रतिबिंबित होता है। इसके अलावा इसमें लुहसू की, उस अग्रगामी चिंतक, योद्धा और राजनीतिक विवादों की विशेषताएं भी हैं। साथ ही इसमें उनकी महान् ग्राह्य शक्ति और अनुपम कलात्मकता भी खूब ही बन पड़ी है। बौद्धिक दृष्टि से यह पूर्ण और स्पष्ट है और कलात्मक दृष्टि से यह बहुत ही सुन्दर।

अब आह क्यू और आह क्यूवाद सर्वहारा के नेतृत्व में प्राप्त हुई जन-क्रांति की विजय की बदौलत हमेशा के लिये समाप्त हो चुके हैं लेकिन लुहसू की क्रांति को देन और उनकी सर्वश्रेष्ठ कृतियां हमारी जनता के इतिहास में और चीनी साहित्य में सर्वदा चमकती रहेंगी।